हिंदी पत्रकारिता की शब्दावली नये प्रयोग नई संरचनाएँ : एक विश्लेषण

हैदराबाद विश्वविद्यालय की पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

मा विधा या विमुक्तये

प्रस्तुतकर्त्री

ममता रानी

(2003)

निर्देशक :

आचार्य वै. वेंकटरमण राव

एम.ए. (हिंदी), एम.ए (तेलुगु), पी-एच.डी.

हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय,

हैदराबाद-500 046 (आंध्र-प्रदेश)

अध्यक्ष :

आचार्या शशि मुदिराज

पी-एच.डी., डी. लिट्.,

हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय

हैदराबाद - 500 046 (आंध्र-प्रदेश)

UNIVERSITY OF HYDERABAD

(A Central University established in 1974
by an act of Parliament Hyderabad)

CERTIFICATION / DECLARATION

Name of the Research of Scholar	:	**MAMTA RANI**
Registration No.	:	**96 HHPHO2**
Department:	:	**HINDI**

This is to certify that I, **MAMTA RANI**, have carried out the research embodied in the present thesis entittled ``**HINDI PATRAKARITA KI SHABDAVALI : NAYE PRAYOG NAYI SANRACHANAYEN - EK VISHLESHAN"** for full period prescribed under the Ph.D. ordinances of the University.

I declare that no part of this thesis was earlier submitted for the award of my Research Degree or Diploma to any University.

30/6/03

Signature of the Candidate

Date : 30 . 6 2003

Place : Hyderabad.

Research Supervisor 30/6/2003

30/6/03

अध्यक्ष हिन्दी विभाग
The Head, Department of Hindi,
Head of the Dept.
University of Hyderabad
Hyderabad - 500 046. (A.P.)

1.7.03

Dean of the School
University of Hyderabad

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृ. सं.
प्राक्कथन	
प्रथम अध्याय : शब्द, शब्द समूह तथा हिन्दी पत्रकारिता के संदर्भ में शब्दावली	**1-35**
1.0 प्रस्तावना	
1.1 शब्द और शब्द समूह	
1.1.1 शब्द क्या है?	
1.1.2 शब्द का उच्चरित स्वरूप	
1.1.3 शब्द की व्युत्पत्ति व भाषागत परिभाषाएँ	
1.2 हिन्दी का शब्द भंडार	
1.3 हिन्दी शब्द भंडार के विविध स्रोत	
1.3.1 तत्सम शब्दावली	
1.3.2 तद्भव शब्दावली	
1.3.3 देशज शब्दावली	
1.3.4 विदेशी शब्दावली	
1.4 पत्रकारिता का शब्द भंडार : एक विश्लेषण	
1.5 पत्रकारिता का शब्द भंडार : स्रोतगत विवेचन	
1.6 निष्कर्ष	
द्वितीय अध्याय : पारिभाषिक, अर्द्ध-पारिभाषिक तथा सामान्य शब्दावली का विवेचन	**36-64**
2.0 प्रस्तावना	
2.1 शब्द और पारिभाषिक शब्द	
2.1.2 पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार	

2.1.3 पारिभाषिक शब्द की रचना

2.2 पारिभाषिक शब्दावली : विकास

2.3 नई संकल्पनाएँ

2.4 विभिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द

2.5 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : संकर शब्दावली : रूपरचना और ग्रहण 65-123

3.0 प्रस्तावना

3.1 संकर शब्द : रूप-रचना प्रक्रिया

3.1.1 संकर शब्द की परिभाषा

3.1.2 रूप-रचना प्रक्रिया

3.2 स्रोतगत विवेचन

3.2.1 खेलकूद पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.2.2 पारिभाषिक पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.2.3 व्यावसायिक पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.2.4 विज्ञान पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.3 संकर शब्दावली का स्रोतगत विवेचन

3.3.1 अंग्रेज़ी + देशज

3.3.2 संस्कृत + देशज

3.3.3. उर्दू + देशज

3.3.4 संस्कृत + देशज

3.3.5 देशज + संस्कृत

3.3.6 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.3.7 उर्दू + संस्कृत

3.3.8 उर्दू + अंग्रेज़ी

3.3.9 संस्कृत + उर्दू

3.3.10 अंग्रेज़ी + उर्दू

3.3.11 देशज + अंग्रेज़ी

3.4 फिल्म पत्रकारिता के संदर्भ में संकर शब्दावली

3.4.1 संस्कृत + अंग्रेज़ी

3.4.2 अंग्रेज़ी + देशज

3.4.3 उर्दू + अंग्रेज़ी

3.4.4 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.4.5 अंग्रेज़ी + उर्दू

3.4.6 देशज + अंग्रेज़ी

3.4.7 संस्कृत + उर्दू

3.4.8 उर्दू + संस्कृत

3.4.9 देशज + संस्कृत

3.4.10 देशज + उर्दू

3.5 व्यावसायिक पत्रकारिता में संकर शब्दावली

3.5.1 अंग्रेज़ी + देशज

3.5.2 देशज + अंग्रेज़ी

3.5.3 संस्कृत + अंग्रेज़ी

3.5.4 देशज + संस्कृत

3.5.5 संस्कृत + देशज + संस्कृत

3.5.6 उर्दू + अंग्रेज़ी

3.5.7 अंग्रेज़ी + उर्दू

3.5.8 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.5.9 संस्कृत + देशज

3.6 विज्ञान पत्रकारिता में संकर शब्दावली

3.6.1 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.6.2 संस्कृत + उर्दू

3.7 पारिवारिक पत्रकारिता में संकर शब्दावली

3.7.1 संस्कृत + उर्दू

3.7.2 देशज + उर्दू

3.7.3 देशज + संस्कृत

3.7.4 संस्कृत + अंग्रेज़ी

3.7.5 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.7.6 देशज + अंग्रेज़ी

3.7.7 अंग्रेज़ी + देशज

3.8 निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : हिंदी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की भूमिका **124-149**

4.0 प्रस्तावना

4.1 हिंदी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियाँ : परिचय

4.1.1 मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.1.2 गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.1.3 क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ

4.1.4 सुझावात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.1.5 कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियाँ

4.2 हिंदी पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचन

4.2.1 साहित्यिक क्षेत्र में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.2 विज्ञान के क्षेत्र में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.3 फिल्म पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.4 व्यावसायिक पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.5 खेलपत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.6 पारिवारिक पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.3 हिंदी पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचन :

4.3.1 साहित्यिक क्षेत्र में गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.3.2 फिल्म पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.3.3 खेलकूद पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.4 हिंदी पत्रकारिता में क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचन :

4.4.1 व्यावसायिक पत्रकारिता में क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ

4.4.2 हिंदी पत्रकारिता में सुझावात्मक अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचन

4.4.3 हिंदी पत्रकारिता में कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियाँ

4.5 निष्कर्ष :

पंचम अध्याय : हिंदी पत्रकारिता का हिंदी शब्द-समूह एवं नव-सृजन **150-195**

5.0 प्रस्तावना

5.1 आगत शब्द : एक विवेचन

5.2 हिंदी पत्रकारिता में आगत शब्द

5.3 शब्द-निर्माण-प्रक्रिया में संक्षिप्तीकरण

5.3.1 हिंदी पत्रकारिता में संक्षिप्तियों का प्रयोग

5.4 हिंदी पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन

5.5 व्यावसायिक पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का स्त्रोतगत विवेचन

5.6 फिल्म पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन

5.7 विज्ञान पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन

5.8 पारिवारिक पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली

5.9 जन प्रचलित शब्दावली

5.10 हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में नये प्रयोग

5.11 निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय : उपसंहार **196-207**

संदर्भ-ग्रंथ सूची **208-211**

प्राक्कथन

मानव शरीर के लिए स्नायु तत्वों का जो महत्व है समाज और सभ्यता के लिए संचार का भी वही महत्व है। वर्तमान परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि संपूर्ण मानव समाज, राजनैतिक परिस्थितियों, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों से परिचित हों। समाचार-पत्र ही एक ऐसा साधन है जो वर्तमान जीवन की स्थितियों और परिस्थितियों से पूरी तरह परिचित कराता है।

आधुनिकता एक दृष्टि है और दर्शन भी। दृष्टि की माँग है कि उसे सदा खुला मैदान मिलना चाहिए, ताकि वह दूर, बहुत दूर तक पहुँच कर चीज़ों को अपनी परिधि में समेट लें। दर्शन का आग्रह है कि पल-पल बदल रहे संसार के बीच घटने वाली घटनाओं, प्रसंगों और दृश्यों को चिन्तन का आधार देकर उनकी व्याख्या करें। इसी दृष्टि और दर्शन को ही पत्रकारिता स्वीकार करती है।

पत्रकारिता अपेक्षाकृत एक नयी विधा और अनुशासन है, जो सारे विश्व को एक सूत्र में बांधती है। वह एक ऐसा दर्पण है, जिसमें समाज की एवं जनजीवन की विविध छवियों और रंग-रेखाओं को उभरता हुआ देखा जा सकता है। सूचनाओं तथा घटनाओं के वर्णन के साथ-साथ आज पत्रकारिता नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है और अपनी एक विशिष्ट छवि और भूमिका निर्मित कर चुकी है।

पत्रकारिता में रुचि मुझे तब जागी जब मैं आये दिन रेडियो और दूरदर्शन उद्घोषक के क्षेत्र में नौकरी के लिए विज्ञापन देखा करती थी, तब उसमें 'पत्रकारिता में डिप्लोमा' एक अनिवार्य विषय होता था। इसी के चलते मैंने पत्रकारिता में एक वर्ष का डिप्लोमा किया। अभ्यास के लिए हैदराबाद के प्रमुख पत्रकार एवं दक्षिण समाचार (हैदराबाद समाचार के नाम से विख्यात) के संपादक श्रद्धेय मुनींद्र जी के पास काम करती थी। उनके सान्निध्य में मैंने समाचार-पत्र के संचालन की कुछ बारीकियाँ सीखीं। मुझे वहाँ नये-नये शब्दों के प्रयोग पढ़ने को मिले। चूँकि उनके पास अधिकतर विविधि भाषा-भाषियों का आना-जाना लगा रहता था, साथ ही भाषागत पठन सामग्री भी मिलती थी।

उक्त भाषा प्रयोगों का असर मुझ पर पड़ा और मेरी किसी के मार्गदर्शन में शब्दावली से संबंधित कुछ कार्य करने की इच्छा जागृत हुई, फिर मैंने पी-एच.डी. के लिए इस विषय को चुना। अपनी सामर्थ्य, सोच व क्षमता के

अनुरूप कार्य करने का प्रयत्न किया है। मैं आज इसी क्षेत्र से संबंधित सूचना और प्रसारण मंत्रालय के पत्र सूचना कार्यालय में कार्यरत हूँ। अध्ययन की सुविधा के लिए पत्रकारिता के निम्नलिखित प्रयोजन निर्धारित किये जा सकते हैं।

1. पत्रकारिता लोकतंत्र की चौथी आँख है।

2. पत्रकारिता राष्ट्र और विश्व को जोड़ती है।

3. वह राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को दृढ़ करती है।

4. पत्रकारिता में तात्कालिकता तथा समसामयिकता पाई जाती है।

5. वह समाचार देती है, टिप्पणी देती है तथा आलोचना करती है।

6. वह राष्ट्र और विश्व के हित के लिए कार्य करती है।

7. ''पत्रकारिता अभिव्यक्ति का संपूर्ण विज्ञान है, यह दैनिक जीवन और मानव जिज्ञासा का सूत्रधार है।''

8. ''पत्रकारिता पूरे विश्व की ऐसी दैनंदिनी है, जो सबको दूरदृष्टि प्रदान करती है।''

9. पत्रकारिता शीघ्रता से लिखा जाने वाला साहित्य है।

10. सामयिकता से लिखा जाने वाला साहित्य है।

11. सामयिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है।

भारतीय नवजागरण की भावना प्रचारित करने का श्रेय पहले पहल भारत की बंग भूमि को प्राप्त है। सुधारवादी दृष्टिकोण से युक्त नवजागरण के अग्रदूत बनकर राजा राममोहन राय ने नेतृत्व किया। भारतीय पत्रकारिता का श्रीगणेश भी कलकत्ता से हुआ। अंग्रेज़ी शिक्षा, पत्रकारिता और भारतीय राष्ट्रीयता के त्रिकोण की नींव अनेक विरोधों व आक्रामक रवैयों के कारण वहाँ पहले ही पड़ चुकी थी। इसी नींव पर भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई भी लड़ी गयी और बाद में इसी पीठिका पर स्वतंत्रता का भव्य प्रासाद भी खड़ा किया गया।

हिंदी भाषा में पत्रकारिता के उद्भव के समय देश की स्थिति शोचनीय थी। देश की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति भारतीयों के शोषण से बंध गयी थी, दु:ख और दारिद्र्य का साम्राज्य था। युग की बदलती हुई माँग के अनुसार हिंदी पत्रकारिता, औद्योगिकरण, नवीन, समाज रचना अंतर्राष्ट्रीय संबंध और वैज्ञानिक प्रगति से संबद्ध होकर अपने उद्देश्यों को बहुमुखी बनाती चली गयी।

खड़ी बोली गद्य के आरंभिक काल में इसका अंकुर हुआ था।

हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप पिछले कुछ वर्षों में बहुमुखी और बहुआयामी बना है। आज पत्रकारिता का काम केवल सूचना देने वाला नहीं रह गया है, उसका क्षेत्र विशिष्ट बना है। इससे अनुकूल दिशाएँ सामने आयी हैं। आज फिल्म, खेलकूद, वाणिज्य, व्यवसाय, विज्ञान, साहित्यिक, राजनीतिक पत्रकारिता आदि अलग रूप में अपना स्थान बना चुके हैं, अर्थात् पत्रकारिता आज विशेषता के साथ जुड़ गयी है। प्रत्येक विषय विशिष्ट प्रकार की शब्दावली की माँग करती है। आज का पाठक पत्र-पत्रिकाओं की इन शब्दावलियों से पूर्णत: परिचित और इन्हीं के कारण पत्रकारिता में हिंदी का जो स्वरूप है वह संप्रेषणीय के साथ-साथ बोधगम्य व लोकप्रिय बना है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हिंदी पत्रकारिता को विविध क्षेत्रों के संदर्भ में देखा जा रहा है :

1. तत्सम, तद्भव शब्दावली :

1. फिल्म पत्रकारिता
2. खेलकूद पत्रकारिता
3. महिला पत्रकारिता
4. विज्ञान पत्रकारिता
5. व्यावसायिक पत्रकारिता आदि

इन सभी क्षेत्रों में तत्सम, तद्भव शब्दावली का प्रयोग मिलता है। यह प्रयोग अलग-अलग स्तरों में भी दिखाई देता है।

देशज शब्दावली :

2. देशज शब्दावली का प्रयोग हिंदी पत्रकारिता के हर क्षेत्र में दिखाई देता है। मूलरूप से फिल्मों और खेलकूद तथा पारिवारिक पत्रकारिता में देशज शब्द बड़ी संख्या में मिलते हैं।

3. **विदेशी शब्दावली** : मूल रूप से ये शब्द हिंदी पत्रकारिता को विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। अंग्रेज़ी के वे शब्द जिनकी संकल्पना को व्यक्त करने के लिए जहाँ देशज, संस्कृत या उर्दू शब्दावली में उपलब्ध नहीं है अथवा जो अंग्रेज़ी शब्द जनमानस में फैले हैं उन्हें हिंदी पत्रकारिता ने लिप्यांतरित करके अपना लिया है। उर्दू के शब्द सामान्य भाषा में लंबे समय से प्रचलित हैं। अत: इनके स्थान में संस्कृतनिष्ठ को न रखकर इनका प्रयोग हिंदी पत्रकारिता में किया जाता है। उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी संस्कृत शब्दावली की तरह क्षेत्र और उपक्षेत्र की विशेषता के अनुसार किया जाता है। ऐसी ही स्थिति अंग्रेज़ी शब्दों की भी है, जहाँ एक ही क्षेत्र के भीतर अलग-अलग प्रकार की स्थितियों को बताने के लिए इन्हें प्रयुक्त किया जाता है। परंतु विडंबना यह है कि भारत से जो समाचार विदेशों में जाता है वह समाचार पहले वहाँ की भाषाओं में अनूदित होता है और फिर उसका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जाता है। अत: यह भारतीय भाषाओं में काम करने वाले पत्रकारों की मजबूरी है कि परिस्थितिवश उन पर अंग्रेज़ी लादी हुई है, जिससे वे मुक्त नहीं हो सकते। दूसरों के मुकाबले हिंदी पत्रकार की स्थिति उन्नीस ही बैठती है, क्योंकि हिंदी क्षेत्र के सत्ता केंद्रों में भाषाई अखबारों की उतनी पूछ नहीं है जितनी की अन्य भाषा क्षेत्रों में है। सत्ता केंद्रों में कामकाज की भाषा होने के कारण हिंदी पत्रकार विदेशी भाषा के अनुवाद, अनुसरण और यहाँ तक कि उसके छिछलेपन से बच नहीं पाता। इस तरह पत्रकार दो पाटों के बीच से गुजरता है। एक ओर पत्रकारिता का तकाज़ा होता है तो दूसरी ओर भाषा के स्तर पर अपनी अस्मिता बनाये रखने का।

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों या भावों को हर भाषा में व्यक्त करने के लिए अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

हिंदी पत्रकारिता के विकास के साथ-साथ हिंदी की नई अभिव्यक्तियों का विकास हुआ। कई विषय क्षेत्र ऐसे हैं, जो हिंदी पत्रकारिता में पाश्चात्य देशों के माध्यम से आये। खेलकूद, फिल्म आदि प्रयुक्तियाँ अंग्रेज़ी के माध्यम से आयीं। ऐसी संकल्पनाएँ पहले हिंदी में नहीं थी। अनुवाद के माध्यम से इनका विकास किया जा रहा है। अंग्रेज़ी संकल्पनाओं के लिए हिंदी में शब्द निर्मित किये गये और इन विषयों की अनेक

अभिव्यक्तियाँ हिंदी ने स्वत: स्वीकार की।

आज क्रिकेट आदि क्षेत्रों में हिन्दी की अनेक अभिव्यक्तियाँ खूब प्रचलित हैं और पत्र-पत्रिकाओं का पाठक इन अभिव्यक्तियों के प्रयोग से अपने को पूरी तरह से जोड़ चुका है। पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियाँ किसी एक प्रयुक्त क्षेत्र में नहीं, बल्कि सभी विषयों में प्रयुक्त मिलती है।

अभिव्यक्ति के प्रयोग से पत्रकारिता की भाषा में प्रवाह आता है। उसकी प्रभावशीलता बढ़ती है और हिन्दी भाषा की अभिव्यंजना शक्ति को इससे विकास मिलता है। सामान्य भाषा के लिए अभिव्यक्तियों से युक्त वाक्यों का प्रयोग बहुत आवश्यक होता है।

सामान्य जीवन में भी हम अपनी बात को विशेष ढंग से करने के लिए इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं।

पत्रकारिता की इन अभिव्यक्तियों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया गया।

क) मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

ख) गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

ग) क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ

घ) सुझावात्मक अभिव्यक्तियाँ

ड) कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियाँ

आधुनिकीकरण व भौगोलिक दृष्टि से नित-नूतन संदर्भों में भाषायी स्वरूप बदलता जाता है और मनुष्य अपने आसपास के इसी समाज से, वातावरण से संप्रेषणीयता को बनाये रखने के लिए भाषा सीखता है। नई संकल्पनाओं और विचारों को अपनाने व व्यक्त करने के लिए नई संस्कृति की विशेषताओं को ग्रहण करता है। इसलिए बोलचाल और व्यवहार के लिए नई प्रयुक्तियों का विकास प्रयोजनपरक हो गया। क्योंकि इनके प्रयोग से हिन्दी प्रवाहमय और संप्रेषणीय बनती है।

अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि सहज और सामान्य भाषा के लिए अभिव्यक्तियों से युक्त वाक्यों का प्रयोग बहुत आवश्यक होता है। सामान्य जीवन में अपनी बात को विशेष ढंग से कहने के लिए पत्रकारिता एक ही भाषा को ग्रहण नहीं करती, बल्कि विभिन्न बोलियाँ, स्वदेशी व विदेशी भाषाओं को अपनाते हुए गूढ़ आगत शब्दों को ग्रहण करते हुए, संक्षिप्तियों, नए-नए प्रयोगों व जन-सामान्य की भाषा को समेटकर नये-नये शब्दों से परिचित कराती है। इसका क्षेत्र सीमित नहीं व्यापक है और इसमें अन्य प्रकार की क्षमता है। क्योंकि हिन्दी पत्रकारिता में इस प्रकार के तथ्य गढ़ने के कई विकल्प हैं तो नये-नये शब्दों को प्रयोग करना व नई संरचनाओं की आवश्यकता अवश्यंभावी है। इसी को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत शोध अध्ययन की योजना है।

इसी भूमिका में अध्ययन को निम्नलिखित आयामों में बाँटा जाएगा :

1. प्रथम अध्याय

शब्द, शब्द समूह और हिन्दी पत्रकारिता के संदर्भ में शब्दावली

2. द्वितीय अध्याय

पारिभाषिक, अर्द्ध पारिभाषिक और सामान्य शब्दावली का विवेचन

3. तीसरा अध्याय

संकर शब्दावली, रूप रचना और ग्रहण

4. चतुर्थ अध्याय

हिन्दी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की भूमिका

5. पंचम अध्याय

हिन्दी पत्रकारिता का हिन्दी शब्द समूह एवं नवसृजन

6. उपसंहार

प्रथम अध्याय में शब्द, शब्द- समूह, शब्द-भंडार और पत्रकारिता के विभिन्न स्रोतों - जैसे फिल्म पत्रकारिता, खेल-कूद पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, व्यावसायिक पत्रकारिता, महिला पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता आदि विशेषताओं को स्रोतगत आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त इस अध्याय में शब्द की व्युत्पत्ति व भाषागत परिभाषाएँ हिन्दी शब्द भण्डार के विविध स्रोत जैसे - तत्सम, तद्‌भव, विदेशी और संकर शब्दों के बारे में उदाहरण सहित जानकारी दी गई है।

द्वितीय अध्याय में पारिभाषिक, अर्द्ध पारिभाषिक तथा सामान्य शब्दावली का विवेचन किया गया है। पारिभाषिक शब्दों के छह प्रकार गिनाये गये। 1) स्रोत के आधार पर तत्सम, तद्भव, आगत, देशज, संकर शब्दों का वर्णन किया गया है। 2) रचना के आधार पर, 3) प्रयोग के आधार पर 4) अर्थ की सूक्ष्मता, स्थूलता के आधार पर संकरशब्दावली, रूपरचना और ग्रहण की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इसके अन्तर्गत संकर शब्द रूपरचना की प्रक्रिया, संकर शब्दों का स्रोतगत विवेचन व सामान्य शब्दों का विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की भूमिका का विवेचन गया गया है। इसके अन्तर्गत फिल्म, साहित्यिक क्षेत्र, विज्ञान, व्यावसायिक, खेल पत्रकारिता, पारिवारिक पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों, गुणात्मक, क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य और सुझावात्मक, कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियों का विवेचन किया गया है।

पाँचवे अध्याय के अन्तर्गत पत्रकारिता का हिन्दी शब्द समूह एवं नवसृजन में नवनिर्मित शब्दावली, आगत शब्दावली, संक्षिप्तियों और जन-सामान्य में प्रचलित शब्दावलियों का वर्णन किया गया है।

अन्त में उपसंहार है।

''हिन्दी पत्रकारिता की शब्दावली नये प्रयोग नई संरचनाएँ : एक विश्लेषण'' इस शोध प्रबन्ध का मूल उद्देश्य यह है कि आज की हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव और विकास का आकलन करते हुए यह देखा जाए कि हिन्दी पत्रकारिता ने अनेक क्षेत्रों - खेल-कूद, फिल्म, पारिवारिक, व्यवसाय, विज्ञान और साहित्य आदि में इसके विविध भाषा रूप (शब्दावली) किस आधार पर विकसित और प्रचलित हुए हैं और विभिन्न क्षेत्रों की शब्दावली किस

प्रकार लोकप्रिय होती हुई जन-सामान्य तक पहुँच रही है। इसके लिए पत्रकारिता कई मार्ग अपनाती है। जन-सामान्य तक पहुँचने के लिए उसने प्रारंभिक युग में पूर्वी और पश्चिमी बोलियों का सहारा लिया था और आज खड़ी बोली के रूप में हिन्दी के सरल, सुबोध और मानकीकृत स्वरूप में विकसित होकर हिन्दी भाषा का बहुमुखी विकास कर रही है। हिन्दी के भाषा रूपों को स्थिर और स्थापित कर रही है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शोध प्रबंध को पाँच प्रमुख अध्यायों में विभक्त किया गया है। पाँचों अध्याय अपने में स्वतंत्र भी है और एक- दूसरे से सम्बद्ध भी हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध संप्रेषणीयता के माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषा को सभी स्तरों पर देखने का प्रयास करता है। इस दिशा में हिन्दी पत्रकारिता में व्यक्त खेल-कूद, फिल्म, पारिवारिक पत्रकारिता में पाक कला, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, वैज्ञानिक लेखों, कृषि संबंधी, व्यवसाय संबंधी, तकनीकी आदि शब्दावलियों में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का हिन्दी भाषा के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है।

हिन्दी पत्रकारिता ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हिन्दी भाषा में सभी विषयों को व्यक्त करने की क्षमता है और आसान, लोकप्रिय सहज हिन्दी के माध्यम से सभी प्रकार के विषयों को सामान्य पाठक तक पहुँचाया जा सकता है।

हिन्दी की इस अभिव्यक्ति क्षमता को एक सीमित संदर्भ में देखने का यह एक प्रयास है। इसके निष्कर्ष ये बताते हैं कि हिन्दी भाषा का बहुमुखी विकास हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से संभव हो रहा है। किस प्रकार प्रारंभिक दौर से गुजरते हुए आधुनिक युग में नये-नये रूपों में हिन्दी के मानकीकरण का अर्थ हिन्दी पत्रकारिता ने गंभीरता के साथ लिया है यह भी बतलाने की चेष्ठा की गई है। आज वह आधुनिकीकरण पर टिकने का प्रयास कर रही है।

जब मनुष्य एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ इच्छा रखता है, तो उसे कई परीक्षाओं में खरा उतरना पड़ता है। समय उसके लिए चुनौती बन जाता है। परिस्थितियाँ भी परीक्षा लेती हैं। वे उसकी कठिनाइयों को पार करने की क्षमता को भी आंकती हैं। यदि कोई उसके कार्य को आगे बढ़ाने प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दें तो उसकी मुश्किल आसान हो जाती है।

जब मैंने पी-एच.डी. के लिए रजिस्ट्रेशन करवाया तभी से कुछ-कुछ अड़चनें मेरे साथ बंधी रहीं। स्वास्थ्य खराब रहने लगा था, फिर वैवाहिक जीवन में प्रवेश किया, परिवार, नौकरी सबमें एक-दूसरे से बंधे रहना पड़ा।

तत्पश्चात्, मातृत्व का दायित्व निभाना पड़ा। अत: मुझे इस बृहत् कार्य को संपन्न करने के लिए बहुत बार विचलित होना पड़ा। यदि मुझे एक्सटेंशन न मिलता तो शायद ही यह सपना पूरा होता।

इस कठिन कार्य व सपने को साकार करने में आदरणीय प्रो.वै. वेंकटरमण राव जी, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय का जो वरदहस्त रहा वह मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय प्रसंग है। यदि सभी को ऐसे जीवट व प्रेरणास्त्रोत मिलें तो निश्चय ही उनका जीवन सफल होगा। भला, मुझ जैसे अकिंचन व अशक्त विद्यार्थी को कौन संबल देता?

इसके पश्चात् मैं अपनी दोनों पुत्रियों, जो ढाई वर्ष व ग्यारह महीने की हैं, उनकी तहेदिल से आभारी हूँ। इन दोनों ने मेरे इस कार्य में बहुत सहयोग दिया। भूखी ही रहतीं, पर तंग नहीं करती थीं। जितना काम मैं छह वर्षों में नहीं कर सकी, छह महीनों में पूर्ण किया।

साथ ही, मेरे पति, मेरे भाई व माँ का बहुत योगदान रहा, जिन्होंने मुझे संबल प्रदान करके मेरे इस दुर्लभ कार्य को आगे बढ़ाने में बहुत मदद की। मैं इनके प्रति हमेशा नतमस्तक रहूँगी। साथ ही जिन इष्ट मित्रों के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अपना अपूर्व सहयोग प्रदान कर मुझे उपकृत किया है, उन सबकी मैं हृदय से आभारी रहूँगी।

विश्वविद्यालय के कुलपति व विभागाध्यक्षा श्रद्धेय प्रो. शशिमुदिराज जी के प्रति शाब्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना महज औपचारिकता होगी। मैं अन्य गुरूजनों और शोध प्रबंध के टंकक मित्र, विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के अधिकारियों और अन्य कर्मचारियों के सहयोग के लिए आभारी रहूँगी।

इस शोध प्रबंध के प्रणयन में जिन पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं से सामग्री संकलित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, उनके लेखकों एवं संपादकों के प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

आशा है कि यह प्रयास सारगर्भित हो सकेगा।

ममता रानी

प्रथम अध्याय

शब्द, शब्द समूह तथा हिन्दी पत्रकारिता के संदर्भ में शब्दावली

प्रथम अध्याय

शब्द, शब्द समूह तथा हिन्दी पत्रकारिता के संदर्भ में शब्दावली

1.0 प्रस्तावना

1.1 शब्द और शब्द समूह

1.1.1 शब्द क्या है?

1.1.2 शब्द का उच्चरित स्वरूप

1.1.3 शब्द की व्युत्पत्ति व भाषागत परिभाषाएँ

1.2 हिन्दी का शब्द भंडार

1.3 हिन्दी शब्द भंडार के विविध स्रोत

1.3.1 तत्सम शब्दावली

1.3.2 तद्भव शब्दावली

1.3.3 देशज शब्दावली

1.3.4 विदेशी शब्दावली

1.4 पत्रकारिता का शब्द भंडार : एक विश्लेषण

1.5 पत्रकारिता का शब्द भंडार : स्रोतगत विवेचन

1.6 निष्कर्ष

0.1 प्रस्तावना :

आदिकाल से ही मनुष्य अपनी भावभिव्यक्ति हेतु कुछ ध्वनि संकेतों का प्रयोग करता आ रहा है। वाचक भाषा-विकास के साथ धीरे-धीरे लिखित व्यवस्था का भी विकास हुआ है। लिपि के विकास के साथ भाषा में भी स्थायित्व गुण आ गया और स्थान तथा समय की सीमा को पार करने की शक्ति आ गई।

भर्तृहरि की मान्यता है कि संसार में ऐसा कोई ज्ञान नहीं है, जो शब्द-ज्ञान के बिना संभव हो। समस्त ज्ञान शब्द के ही साथ संसृष्ट-सा अनुभव होता है-

''न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।
अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्व शब्देन भासने।।''[*]

संसार का समस्त ज्ञान शब्द-मूलक है। समस्त विधाएँ, समस्त कलाएँ तथा समस्त शिल्पशास्त्र शब्द-शक्ति से संबंधित है।

पत्रकारिता भी एक अभिव्यक्ति का माध्यम है। साथ ही सूचना प्रचार और प्रसार का भी माध्यम है।

पत्रकारिता विभिन्न शब्दावलियों को स्थान देकर पाठकों को सूचनाओं, समाचारों, घटनाओं को संप्रेषणीय रूप में पहुँचाने का प्रयत्न कर रही है। ऐसा करने में विभिन्न स्त्रोतों के ये शब्द पत्रकारिता के लिए सहयोगी बनते हैं।

प्रस्तुत अध्याय में हिंदी के संदर्भ में शब्द-समूह, शब्द भंडार और पत्रकारिता के विभिन्न स्त्रोतों का विवेचन अभिप्रेत रहा है।

आज फिल्म पत्रकारिता, खेलकूद पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, व्यावसायिक पत्रकारिता, महिला पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता आदि विशेषज्ञता के साथ जुड़ गयी हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हिंदी पत्रकारिता के विविध क्षेत्रों में जो शब्द प्रयोग होते हैं उन्हें स्त्रोतगत आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

1.1 हिंदी का शब्द और शब्द-समूह

क) शब्द क्या है?

ख) शब्द का उच्चरित स्वरूप

ग) शब्द की व्युत्पत्ति व भाषागत परिभाषाएँ

मनुष्य अपनी भावाभिव्यक्ति हेतु कुछ संकेतों का प्रयोग करता रहा है। संसार का समस्त ज्ञान शब्द मूलक है। समस्त विधाएँ, समस्त कलाएँ तथा समस्त शिल्पशास्त्र शब्दशक्ति से संबंधित हैं। शब्द ही एक ऐसा माध्यम है, जिससे समस्त वस्तुओं का विवेचन किया जा सकता है। शब्द की चैतन्यता को आचार्यों ने स्वीकार करते हुए अपने मत प्रकट किये हैं कि शब्द-शक्ति ही समस्त प्राणियों में चैतन्यरूप से विद्यमान है। इसका प्रभाव बाहर ही नहीं, अंदर भी है।

क) शब्द क्या है?

शब्द एवं उसके अर्थ में अभेद संबंध का ज्ञान होता है। शब्द के द्वारा निर्दिष्ट वस्तु का ज्ञान होता है, किंतु शब्द वस्तु आदि सभी चीजों से भिन्न है। पहले उसका निजी स्वरूप प्रकट होता है और उसके पश्चात् ही उसका अर्थ बोध होता है।

शब्द के 16 पर्याय निनाद, निनद, ध्वनि, ध्वान, रव, स्वन-स्वान, निर्घोष, निर्ह्राद, नाद, निस्वन, आरव,

आराव, संराव तथा विराव शब्द हैं।

हिन्दी से इतर भारतीय भाषाओं में 'शब्द' का प्रयोग मूलरूप से उसी अर्थ में होता है, जैसे हिंदी में होता है। यदि शब्द का कोई अन्य पर्याय भी प्रयोग में आता है तो वह भी मूलत: एक-दूसरे के बहुत निकट का होता है।

ख) शब्द का उच्चरित स्वरूप :

शब्द का प्रथम रूप उच्चरित होता है, जो बाद में लिपि चिह्नों के माध्यम से लिपिबद्ध किया जाता है।

ग) शब्द की व्युत्पत्ति :

विश्व की समस्त भाषाओं को दृष्टि में रखते हुए शब्द की सभी दृष्टियों से पूर्ण तथा उपयोगी परिभाषा करना उतना कठिन ही नहीं, वरन् असंभव कहा जा सकता है।

शब्द की उत्पत्ति अनेक प्रकार से दी जा सकती है, पर सामान्यत: संस्कृत में इसको शब्द + वञ प्रत्यय के रूप में व्युत्पन्न किया गया है, जिसका अर्थ है शब्द का ध्वनि करना! शब्द के समानार्थक अंग्रेज़ी शब्द 'वर्ड' का शाब्दिक अर्थ भी बोलना ही है।

जहाँ भाषा वैज्ञानिकों ने विश्व की सभी भाषाओं के संदर्भ में सभी दृष्टियों से पूर्ण एवं उपयोगी परिभाषा बना पाने की असमर्थता व्यक्त की है, वहीं दूसरी तरफ अधिक से अधिक उपयोगी परिभाषा देने का प्रयत्न करते रहे हैं।

महाभाष्यकार पतंजलि के अनुसार "शब्द कान से प्राप्त, बुद्धि से ग्राह्य तथा प्रयोग से स्फुरित होने वाली आकाशव्यापी ध्वनि है।...[1]

पतंजलि की दृष्टि में शब्द की विशिष्टता घोषित करने वाले ये चार तत्व हैं- 1. उच्चरित, 2. श्रव्य, 3. बुद्धि ग्राह्य, 4. अर्थबोधक।

एक प्रकार से "शब्द वह ध्वनि है, जिससे व्यवहार या लोक में पदार्थ की प्रतीति हो।"...[2]

पतंजलि ने महाभाष्य में स्फोट को ही शब्द की संज्ञा दी है और ध्वनि को शब्द गुण बताया है।...[3]

"स्फोट शब्दः। ध्वनि शब्द गुणः।...[4]

यहाँ स्फोट को शब्द की ऐसी सत्ता के रूप में स्वीकार किया है, जिससे उसका अर्थ बोध होता है।

महाभाष्यकार पतंजलि दूसरे स्थान पर शब्द की परिभाषा करते हुए कहते हैं- "श्रोतोपलब्धि बुद्धि निग्रह्यिः प्रयोगेणाभिनलितः आकाश देशः शब्दः।...[5]

अर्थात् कान से प्राप्त, बुद्धि से ग्राह्य, प्रयोग से स्फुरित होने वाली आकाशव्यापी ध्वनि को शब्द कहते हैं।

पतंजलि एक अन्य स्थान पर शब्द की परिभाषा निम्न प्रकार करते हैं-

"प्रतीत पदार्थ कोलोके ध्वनि शब्द।"....[6]

अर्थात् वह ध्वनि जिससे लोक में पद के अर्थ की प्रतीति हो, उसे शब्द कहते हैं।

श्री गौरीनाथ शास्त्री महर्षि पतंजलि के महाभाष्य में लिखित शब्द की एक और परिभाषा प्रस्तुत करते हैं

"जिसका कुछ अर्थ हो वह शब्द है।"...[7]

आचार्य कुनारिल शब्द की परिभाषा करते हुए कहते हैं-

"जो कर्णेन्द्रिय द्वारा ग्रहण किया जाता है, वह शब्द है।"...[8]

श्रृंगार प्रकाश में शब्द की परिभाषा करते हुए लिखा गया है-

"येनोच्चारितेन अर्थः प्रतीयते स शब्दः।"...[9]

अर्थात् जिसके उच्चारण से अर्थ की प्रतीति हो उसे शब्द कहते हैं।

ग I) हिन्दी भाषागत परिभाषाएँ :

हिन्दी राष्ट्रभाषा कोश में **विश्वेश्वर नारायण श्रीवास्तव** शब्द की परिभाषा करते हुए लिखते हैं...

''वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो उसे शब्द कहते हैं''...[10]

भाषा शब्द कोश में **डॉ. रामशंकर शुक्ल** 'रसाल' शब्द की परिभाषा इस प्रकार करते हैं-

''किसी पदार्थ या भावादिबोधक सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं''...[11]

श्री रामचंद्र वर्मा अपने प्रामाणिक हिन्दी कोश में लिखते हैं -

''अक्षरों या वर्णों आदि से बना हुआ और मुँह से उच्चरित अथवा लिखा जाने वाला वह संकेत जो भाव, कार्य या बात का बोधक हो उसे शब्द कहते हैं।''...[12]

आचार्य श्याम सुंदर दास अपने कोश 'हिंदी शब्द-सागर' में एक स्थान पर शब्द की लंबी परिभाषा देते हैं:

''वायु में होने वाला वह कंप जो किसी पदार्थ पर आघात के कारण अथवा स्वयं वायु पर आघात पड़ने के कारण उत्पन्न होकर कान या श्रवणेन्द्रिय तक पहुँचता है और उसमें एक विशेष प्रकार का क्षोभ उत्पन्न करता है, उसे शब्द कहते हैं।''...[13]

हिंदी के महान् वैयाकरण **स्वर्गीय पं. कामता प्रसाद गुरू** अपनी व्याकरण-पुस्तक 'हिन्दी व्याकरण' के 'शब्द-विचार' शीर्षक के अंतर्गत शब्द की परिभाषा करते हुए लिखते हैं...

''एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।''...[14]

II हिंदी साहित्यगत परिभाषाएँ

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भाषा वैज्ञानिकों ने शब्द की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी हैं, जिनमें-

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा शब्द की परिभाषा इस प्रकार देते हैं :

''उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है और सार्थकता की दृष्टि से शब्द।''...[15]

डॉ. मंगलदेव शास्त्री के अनुसार

1. शब्द के श्रोतव्य या शाब्दिक रूप को दृष्टि में रखते हुए कहते हैं-

''अक्षरों या वर्णों के समुदाय विशेष को शब्द कहा जा सकता है।''...[16]

2. शब्द तथा अर्थ के परस्पर संबंध को ध्यान में रखते हुए शब्द की परिभाषा ''हमारे विचारों के प्रतीक रूप उच्चरित (या लिखित) संकेतों को शब्द कहते हैं''...[17]

आचार्य मंगलदेव ने शब्द की परिभाषा उनके लक्षणों के आधार पर की है।

डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना शब्द की परिभाषा इस प्रकार करते हैं-

''प्राय: उस ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं, जिसमें भावबोधन अथवा अर्थ वहन करने की क्षमता हो।''...[18]

डॉ. भोलानाथ तिवारी अपनी पुस्तक 'भाषा-विज्ञान' में शब्द की परिभाषा इस प्रकार करते हैं-

''शब्द अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई है।''...[19]

शब्द की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं :

1) भाषा में वाक्य होते हैं और वाक्य शब्दों से बनते हैं। इस तरह 'शब्द' भाषा की इकाई है।

2) प्रत्येक 'शब्द' का कोई न कोई अर्थ होता है।

3) भाषा के वाक्य, उपवाक्य, पदबंध, पद, शब्द आदि इकाइयों में 'शब्द' लघुतम होता है।

4) 'शब्द' भाषा की स्वतंत्र इकाई होता है। उपसर्ग या प्रत्यय की तरह उसके लिए किसी के साथ जुड़कर आना आवश्यक नहीं।

भाषा की सार्थक, लघुतम और स्वतंत्र इकाई को 'शब्द' कहते हैं।...[20]

विदेशी विद्वानों की परिभाषाएँ :

भारतीय वैयाकरणों भाषा वैज्ञानिकों एवं भाषाविदों के अतिरिक्त पश्चिमी देशों में भी इस विषय पर बहुत प्रयास किया गया है, जिनके अनुसार :-

'पामर' शब्द की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि

``The small speech unit capable of functioning as a complete utterance."

अर्थात् भाषा की ऐसी लघुतम इकाई जो एक महत्वपूर्ण उच्चारण के रूप में काम कर सके उसे शब्द कहते हैं।...[21]

उल्मैन की परिभाषा निम्न प्रकार है-

``The smallest significant unit of language."

अर्थात् शब्द को भाषा की महत्वपूर्ण इकाई कहते हैं...[22]

इंस्टिवंसल शब्द के विषय में लिखते हैं-

``A word is an autonomous unit of thought and sense. It results from the association of a given meaning with a given grammatical employment, or is a complex of sound which itself possesses a meaning fixed and accepted by convention or is the smallest thought unit vocally expressible."...[23]

अर्थात् ''शब्द विचार तथा भावना की स्वतंत्र इकाई है। यह एक इंगित व्याकरणात्मक प्रयोग से उत्पन्न होता

है, अथवा यह एक ध्वनि तंतु-जाल है, यह अपने आप में एक ऐसा अर्थ रखता है जो कि सुनिश्चित तथा परंपरागत होता है अथवा विचार की वह लघुतम इकाई है, जो कि ध्वनि में प्रकट किया जा सकता है।''...[23]

मैलेट का शब्द के विषय में कथन है-

A word is the result of the association of a given meaning with a given combination of sound capable of a given grammatical use.

अर्थात्

''शब्द, अर्थ और ध्वनि का वह योग है जिसका व्याकरणिक प्रयोग किया जा सके।''...[24]

राबर्टसन तथा कैसिडी शब्द की परिभाषा देते हुए कहते हैं-

``The smallest independent unit within the sentence."...[25]

स्वीट शब्द की परिभाषा इस प्रकार करते हैं-

``An ultimate sense unit."

अर्थात्

''लघुतम आर्थिक इकाई को ही शब्द कहते हैं।''...[26]

भारत की अन्य वर्तमान भाषाओं की तुलना में हिंदी सबसे अधिक प्रगतिशील एवं विकासमान भाषा है। स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार के निमित्त नये शब्दों का निर्माण कार्य तेजी से हुआ है। हिंदी में विभिन्न भाषाओं से आये बहुत से शब्द अधिक घुल मिल गये हैं कि उनके वास्तविक स्रोत का पता लगाना असंभव है।

भाषा को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने के लिए वाक्यों की आवश्यकता होती है। मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति वाक्य द्वारा करता है। अत: वाक्य को प्राय: लोग सार्थक शब्दों की मान्य संरचना मानते हैं। इसकी परिभाषाएँ विचारकों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से दी है;

यूरोपीय विद्वान थैकस एवं भारतीय आचार्य पतंजलि वाक्य को ''पूर्व प्रतीति करने वाले 'शब्द-समूह' मानते हैं।''...[27]

इस परिभाषा में दो बातें प्रमुख हैं-

1. वाक्य शब्दों का समूह होता है।

2. वाक्य अर्थ की दृष्टि से पूर्ण होता है।

''व्याकरणीय दृष्टि से क्रिया सहित संगठित एक या अधिक रूपग्रामों की सार्थक इकाई को वाक्य कहते हैं।''...[27ए]

वाक्य के दो अंग होते हैं- उद्देश्य (subject) एवं विधेय (prealicate)

उद्देश्य : वाक्य का वह अंग अथवा अंश जिसके बारे में वाक्य के शेषांश में कुछ कहा गया हो। जैसे- 'लड़का गया' में 'लड़का'। उद्देश्य में केंद्रीय शब्द तथा उसका विस्तार आ सकता है- अर्थात् उद्देश्य में कर्ता का विस्तार होता है।

विधेय : वाक्य का वह अंश जो उद्देश्य के विषय में कहा जाए उसे विधेय कहते हैं। इसमें क्रिया और उसका विस्तार होता है।

भर्तृहरि के अनुसार शब्द के साथ ही शब्द बोध भी अनिवार्य है।

''शब्द के उच्चारण से जिसकी प्रतीति होती है, वही उसका अर्थ है।''...[28]

इसलिए शब्द और अर्थ में घनिष्ट संबंध होता है। मनुष्य बाह्य-इंद्रिय तथा अंतर-इंद्रियों द्वारा अर्थ ग्रहण करता है। भाषा ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है। इसका अर्थ यह होता है कि भाषा के शब्द प्रतीक हैं। समाज ने विभिन्न शब्दों को विभिन्न अर्थों के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए शब्द विशिष्ट अर्थों के प्रतीक या संकेत है, जिसके कारण श्रोता उन शब्दों को उन्हीं अर्थों में ग्रहण करता है।

शब्द समूह एवं उनमें परिवर्तन के आधार

किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले समस्त शब्दों का समूह ही उस भाषा का 'शब्द समूह' है। हर भाषा के शब्द-समूह में परिवर्तन होता रहता है। इसके प्रमुखतः दो कारण हैं।

1. प्राचीन शब्दों का लोप, 2. नवीन शब्दों का आगम।

नवीन शब्दों के दो स्रोत हैं- निर्माण एवं उधार।

1. निर्माण : विभिन्न प्रत्ययों, उपसर्गों द्वारा नवीन शब्दों का निर्माण किया जाता है। प्रत्यय देशी और विदेशी दोनों ही हो सकते हैं। जैसे- अकलमंद, अज्ञान, सुंदरता, कमज़ोर, खुशदिल, हररोज, निराकार, लुटेरा आदि।

2. उधार : यह दूसरी भाषाओं से हो सकता है। आज हिंदी ने अरबी-फारसी, अंग्रेज़ी दक्षिण भारतीय भाषाओं के अनेक शब्द विभिन्न बोलियों को आवश्यकतानुसार आत्मसात कर लिया। पत्रकारिता के क्षेत्र ने भी उसे पूरी तरह अपना लिया।

1.2 हिंदी का शब्द भंडार

बहुभाषी देश में भाषा में विभिन्न स्रोतों की शब्दावली का प्रयोग होना स्वाभाविक है। प्रधानतः हिंदी में यह बात और निखरी लगती है। हिंदी पत्रकारिता में भी विभिन्न स्रोतों की शब्दावली का सृजन और सटीक प्रयोग कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हिंदी विभिन्न स्रोतों से शब्दावली को ग्रहण कर रही है। इसके कई भौगोलिक और ऐतिहासिक कारण हैं। भौगोलिक कारणों में प्रमुख बात यह है कि हिंदी का प्रयोग क्षेत्र बहुत व्यापक है। सात बड़े राज्य- उत्तर-प्रदेश, मध्य-प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और हरियाणा की यह जनभाषा भी है और भारतीय भाषा भी। यह भौगोलिक क्षेत्र व्यापक भी है और इसकी अनेक बोलियाँ भी हैं। इन बोलियों का प्रभाव हिंदी के विकास काल से ही उस पद दिखाई देने लगा था। इनके अत्यधिक प्रभाव के कारण ही 'पूर्वीपन' और 'पश्चिमीपन' लिए था, जिसे हम भारतेंदुयुगीन पत्रकारिता और साहित्य द्विवेदी युगीन पत्रकारिता और साहित्य में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। बाद में व्याकरण के स्तर पर धीरे-धीरे यह प्रभाव समाप्त हो गया। लेकिन इन बोलियों

की शब्दावली को हिंदी में स्वीकार कर लिया गया। इसके दो कारण हैं :-

1. ये बोलियाँ हिंदी की अधीनस्त बोलियाँ हैं। इनका विकास खड़ी बोली के समानांतर हुआ है। यही खड़ी बोली हिंदी भाषा के रूप में विकसित हो गयी और अन्य अधीनस्त बन गयी। इसके साथ ही हिंदी भाषा का प्रयोक्ता वर्ग या हिंदी भाषा समुदाय (Hindi Speech Community) (समाज) मूलत: बोली भाषी होता है, उसकी हिंदी पर स्वाभाविक रूप से बोली का प्रभाव रहता है। दूसरा कारण हिंदी की बोलियों के जो शब्द हैं वे जनप्रिय होने के साथ-साथ सार्थक व सटीक होते हैं और ऐसे अनेक देशज शब्द भी मिलते हैं, जिनके पर्याय संस्कृत या उर्दू में मिलना संभव होता है। ये शब्द जनजीवन और प्रयोक्ता से संबद्ध होते हैं। इनका उपयोग प्रचलन में होता है। कोई संभव नहीं है। इसलिए इनकी संख्या देशज शब्दों में मिलती है, ये रूप हिंदी पत्रकारिता में मिलते हैं, क्योंकि इनके प्रयोग से हिंदी प्रवाहमय और संप्रेषणीय बनती है।

ये शब्द ऐतिहासिक कारणों से हिंदी के शब्द समूहों में आये हैं। मुस्लिम शासनकाल में अरबी-फारसी, ब्रिटिश शासन में अंग्रेज़ी। इन विदेशी शब्दों को हिंदी ने केवल अपनाया ही नहीं, बल्कि आत्मसात कर लिया। इनमें ध्वन्यात्मक और रूपगत परिवर्तन लाकर भी इन्हें हिंदी ने अपना बना लिया। आज अनेक ऐसे उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्द हैं, जिनका हिंदी पत्रकारिता में बार-बार प्रयोग होता है, जिन्हें हिंदी से निकालना असंभव है। वास्तव में ये शब्द हिंदी के ही बन गये हैं और इनकी अलग से पहचान करना भी कठिन है।

इसके अतिरिक्त अपने स्रोतगत धरातल पर हिंदी भाषा पर संस्कृत का व्यापक प्रभाव है। हिंदी का विकास ही संस्कृत से हुआ है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हुए आज की हिंदी का स्वरूप विकसित हुआ है। अत: मुख्य रूप से हिंदी के स्वरूप में तत्सम स्रोत की शब्दावली सर्वाधिक है। हिंदी साहित्य और पत्रकारिता में भी हिंदी के इस स्वरूप को विवरणात्मक या गंभीर लेखों में लिया गया। अत: वैचारिक रूप से संस्कृतनिष्ठ शब्दावली उपयुक्त समझी जाती है।

इस प्रकार हिंदी का शब्द समूह शैली भेद से युक्त है। ये शैली भेद बोलियों और देशी-विदेशी भाषाओं से प्राप्त हैं। अर्थात् हिंदी ने अनेक स्रोतों से शब्दावलियाँ ग्रहण करके उन्हें अपनी प्रकृति के अनुकूल बनाया है और इनके प्रयोग द्वारा हिंदी का व्यापक रूप निर्मित हुआ है।

1.3 हिंदी शब्द भंडार के विविधि स्रोत एक विवेचन

यद्यपि हिंदी शब्दों का प्रमुख आधार संस्कृत है, किंतु सामान्य रूप से हिंदी के शब्दभंडार को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

1) तत्सम

2) तद्भव शब्द

3) विदेशी शब्द

4) संकर शब्द

शब्द-समूह के मुख्य दो वर्ग हैं :

1. भारतीय शब्द

क) तत्सम, तद्भव, अर्द्धतत्सम शब्द

ख) देशज, अनुकरणात्मक शब्द

अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द

1. मराठी. 2. बंगला, 3. गुजराती

अनार्य भाषाओं के शब्द

1. मुंडा, 2. द्रविड़

2. विदेशी शब्द

क) एशिया की भाषाओं के शब्द

1. अरबी, 2. फारसी, 3. पश्तो, 4. तुर्की, 5. चीनी, 6. तिब्बती, 7. मलय।

ख) यूरोपीय भाषाओं के शब्द

1. अंग्रेज़ी, 2. डच, 3. फ्रांसीसी, 4. पुर्तगाली।

पं. कामता प्रसाद गुरू शब्दों के वर्गीकरण के विषय में हिंदी व्याकरण में लिखते हैं-

''किसी वस्तु के विषय में मनुष्य की भावनाएँ जितने प्रकार की होती हैं, उन्हें सूचित करने के लिए शब्दों के उतने ही भेद होते हैं और उनके उतने ही रूपान्तर होते हैं।''...[29]

हिंदी व्याकरण में अन्यत्र एक स्थान पर वाक्य में प्रयोग के अनुसार शब्दों के आठ भेद किए हैं, जो निम्नलिखित हैं- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, संबंध-सूचक, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक। हिंदी पत्रकारिता ने भी इन भेदों को बढ़ चढ़कर स्थान दिया है।

तत्सम शब्द : हिंदी शब्द-समूह में तत्सम शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत-भाषा से आने वाले शब्दों का यह एक विशेष वर्ग है।

परिभाषा :

पंडित कामता प्रसाद के अनुसार -

''तत्सम वे संस्कृत शब्द हैं, जो अपने असली स्वरूप में हिंदी भाषा में प्रचलित हैं।''...[30]

''जो शब्द संस्कृत भाषा से यथावत् परवर्ती भाषा में आते हैं, अर्थात् जिनमें परिवर्तन नहीं होता, उन्हें तत्सम कहते हैं.''...[31]

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार -

''तत्सम वे शब्द हैं जो संस्कृत के समान हैं, अर्थात् जिनमें परिवर्तन नहीं हुआ है।''...[32]

तद्भव

तद्भव शब्द की परिभाषा के विषय में सभी वैयाकरणों तथा वैज्ञानिकों में मतैक्य है।

पं. कामता प्रसाद गुरू ने तद्भव शब्द पर विचार करते हुए कहा है- ''तद्भव वे शब्द हैं, जो या तो सीधे प्राकृत से हिंदी भाषा में आ गये हैं या प्राकृत के शब्द संस्कृत से निकले हैं''...[33]

भाषा विज्ञान के अधिकारी तथा प्रसिद्ध विद्वान **डॉ. वर्मा** ने भारतीय आर्य भाषाओं के शब्द-समूह के अंतर्गत तद्भव शब्द पर विचार करते हुए इसकी परिभाषा इस प्रकार की है-

''हिंदी शब्द-समूह जो प्राचीन आर्य भाषा में होते हुए चले आ रहे हैं।''...[34]

डॉ. हरदेव बाहरी तद्भव शब्द पर विचार करते हुए इसकी परिभाषा इस प्रकार की है-

''पूर्ववर्ती आर्य भाषाओं के शब्दों के जो रूप हमें प्राप्त हुए हैं, उन्हें तद्भव कहा जाता है।''...[35]

डॉ. भोलानाथ तिवारी तद्भव शब्दों का मूलस्रोत संस्कृत मानते हैं। उनके अनुसार-

''वे शब्द जो 'तत्' अर्थात् संस्कृत से 'भव' अर्थात् उत्पन्न या विकसित है, तद्भव कहलाते हैं।''...[36]

हिंदी शब्द समूह में तद्भव शब्द जिस प्रकार संज्ञा की दृष्टि से सर्वाधिक हैं उसी प्रकार इनका विस्तार भी जीवन का प्रत्येक क्षेत्र तक है। उन जीवनोपयोगी वस्तुओं के लिए तद्भव नाम अवश्य है, जिनका नामकरण प्राचीनकाल में संस्कृत के माध्यम से हुआ था और प्राकृत के माध्यम से वे हिन्दी में स्थान पा गए हैं।

देशज

प्रमुख शब्द-कोशों में देशज का अर्थ :

क) ''शब्द, जो देश में ही उपजा या बना हो। ऐसा शब्द जो न संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो और न ही किसी दूसरी भाषा के शब्द से बना हो, बल्कि किसी प्रदेश के लोगों ने बोलचाल में यों ही बना लिया।''...[37]

ख) ''शब्द के तीन विभागों में से एक वह शब्द जो न संस्कृत का हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोलचाल से यों ही उत्पन्न हो गया हो।''...[38]

ग) ''जो किसी दूसरी भाषा से न निकला हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोलचाल से बन गया हो।''...[39]

ज) ''देश में उत्पन्न स्थानीय, ठीक स्थान पर उत्पन्न या निर्मित।''...[40]

स्रोत की दृष्टि से हिंदी शब्दावली का जो मोटा विभाजन तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी के रूप में किया जाता है, उसमें देशी/देशज अवश्य सम्मिलित किया जाता है।

देशी का शाब्दिक अर्थ है- ''देश का।'' जो स्थानीय पदार्थ होते हैं, उनकी संज्ञा देशी से दी जाती है।

दूसरा बहुप्रयुक्त शब्द देशज है; जिसका शाब्दिक अर्थ है- ''देश से / में उत्पन्न।''

प्रत्येक युग में व्याकरण सम्मत साहित्यिक भाषा से इतर जनसाधारण की भाषा को 'भाषा' या 'देशी' से अनिहित किया गया है। इसके लिए अन्य प्रचलित शब्द प्राकृत/परकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, अवहंस, देसी आदि हैं, ये सभी शब्द अपने-अपने युग की तत्कालीन जनभाषा के द्योतक रहे।

देशी अथवा देशज प्राय: दोनों शब्दार्थ की दृष्टि से किंचित भिन्न होते हुए भी हिंदी में समानार्थक हैं, जिसमें उस शब्दावली को स्वीकृत किया जाता है, जो अन्य प्राय: स्वीकृत कोटियों में नहीं आतीं।

आज देशी/देशज शब्दों का मुख्य आधार व्युत्पत्ति स्वीकार किया गया है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार संपूर्ण शब्दावली को दो भागों में बांटा जा सकता है।

1. ज्ञात व्युत्पत्तिक (ज्ञात स्रोतिक)

2. अज्ञात व्युत्पत्तिक (अज्ञात स्रोतिक)

अज्ञात व्युत्पत्तिक शब्द ही 'देशज' है। व्युत्पत्ति को आधार मानना कोई नई बात नहीं है। हिंदी व्याकरण में **कामता प्रसाद गुरू** ने लिखा है कि ''देशज वे शब्द हैं, जो किसी संस्कृत या प्राकृत मूल से निकले हुए नहीं जान पड़ते और उनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं लगता। जैसे- तेंदुआ, खिड़की, ठेस आदि।...[41]

इस प्रकार देशज/देशी की परिभाषा तथा उसका स्वरूप निरंतर बदलता रहा। अंतत: इस कोटि के शब्दों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करने वाले **डॉ. पूर्णसिंह** ने परिभाषा को पूर्णता देते हुए लिखा है : ''हिंदी में प्रचलित उन अज्ञात व्युत्पत्ति शब्दों का नाम देशज है, जिनकी निश्चित व्युत्पत्ति तो अज्ञात हैं, किंतु संभावना की दृष्टि से जो लोक व्यवहार में अज्ञात अथवा ध्वनि अनुकरण के आधार पर निर्मित अत्यधिक विकार के कारण संस्कृत शब्दों के ही पहचाने जाने वाले रूप प्रारंभिक प्राकृतों अथवा संस्कृत में अप्रयुक्त शब्द तथा आस्ट्रिक एवं द्रविड़ आदि अनार्य भाषाओं से गृहीत हो सकते हैं।''...[42]

एक विद्वान जिस शब्द को 'देशी' कहता है दूसरा उसको 'तद्भव' घोषित कर देता है। अगर उत्पत्ति को ही आधार माना जाए तो, जब तक कोई व्यक्ति किसी शब्द की उचित व्युत्पत्ति न ढूँढ़ ले तब तक वह देशी कहा जाएगा और व्युत्पत्ति ज्ञात होते ही वह अन्य कोटि में चला जाएगा।

विदेशी शब्दावली :

हिंदी शब्द-समूह के इस वर्ग के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि स्वदेश के अतिरिक्त अन्य देशों की भाषाओं से आये हुए शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं। आधुनिक आर्य भाषा का विकास 11वीं शताब्दी से प्रारंभ होता है और लगभग इसी समय से हिंदी-भाषी प्रदेश पर विदेशियों के आक्रमण होते हैं और उन्हें शासन का अधिकार भी प्राप्त होता रहा है। परिणाम स्वरूप प्रशासन, धर्म और संस्कृति से संबंधित कतिपय विदेशी शब्द हिंदी-भाषी प्रदेश में प्रयुक्त होने लगे थे। धीरे-धीरे वे भाषा के अभिन्न अंग बन गये। इन शब्दों को ही कोटियों में रखा जा सकता है:

क) मुसलमानी प्रभाव-युक्त शब्द :

अरबी, फारसी, तुर्की और पश्तो

ख) यूरोपीय प्रभाव-युक्त शब्द :

पुर्तगाली, फ्रांसीसी, अंग्रेज़ी

क) पंजाब पर तुर्कों ने सन् 1000 ई. के आसपास अपना अधिकार कर लिया था और उसी समय से तुर्की का प्रभाव हिंदी-भाषी क्षेत्रों में होने लगा था। पृथ्वीराज रासो (अन्य रासो ग्रंथों) में इस प्रभाव को स्पष्ट देखा जा

सकता है। हिंदी के विदेशी शब्दों में सबसे अधिक संख्या फारसी शब्दों की है और उसके उपरांत अरबी, तुर्की या पश्तो की।

ख) 17वीं शताब्दी के आसपास भारत के पश्चिमी तट पर पुर्तगालियों का आगमन हुआ। परिणामस्वरूप तटवर्ती निवासियों की भाषा में पुर्तगाली शब्दों का प्रयोग होने लगा। 18वीं शताब्दी में पुर्तगाल, फ्रांस और इंग्लैंड - इन तीनों शक्तियों ने भारत पर आधिपत्य के लिए संघर्ष किया और 19वीं शताब्दी में भारत अंग्रेज़ों का उपनिवेश बन गया। शासन के, शिक्षा के और सामाजिक क्षेत्रों में दैनंदिन संपर्क के कारण अनेक अंग्रेज़ी शब्द धीरे-धीरे हिंदी के अंग बन चुके हैं। पुर्तगाली, फ्रांसीसी तथा डच का प्रभाव अपेक्षाकृत बहुत ही सीमित रहा है, इसलिए ये शब्द कम हैं। भावों और विचारों की अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से अंग्रेज़ी यों भी विश्व की सर्वोत्कृष्ट भाषाओं में अपना स्थान रखती है, दूसरे वह शासकों की भाषा थी। अत: हिंदी पर उसकी शब्दावली का ही नहीं, प्रत्युत साहित्यधाराओं का भी प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

अंग्रेज़ी शब्द तत्सम और तद्भव तथा मिश्रित रूप में हिंदी भाषा में समाहित हैं।

विदेशी भाषाओं से आए शब्दों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है-

1. विभिन्न भाषाओं की (आगत) संख्या के आधार पर

2. विभिन्न महाद्वीपों के आधार पर

3. विभिन्न भाषाओं के भिन्न-भिन्न प्रभाव के आधार पर

इस प्रकार ज्ञात होता है कि संस्कृत प्राकृत से लेकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं तक में अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द स्थान पा गए हैं। इनमें से कुछ शब्द तो इतने गहरे पैठ गए हैं कि उनको अलग करना भी असंभव है।

1.4 पत्रकारिता का शब्द भंडार : एक विश्लेषण

हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप पिछले कुछ वर्षों में बहुमुखी और बहुआयामी बना है। आज पत्रकारिता का काम केवल सूचना देने वाला नहीं रह गया है, बल्कि उसका क्षेत्र विशिष्ट बना है। इससे अनुकूल दिशाएँ सामने आयी हैं।

आज फिल्म पत्रकारिता, खेलकूद पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, व्यवसाय पत्रकारिता विशेषज्ञता के साथ जुड़ गयी हैं। प्रत्येक विषय विशिष्ट प्रकार की शब्दावली की माँग करता है। इसमें संदेह नहीं कि शब्दावली ही विषय और उसके प्रकृति-स्वरूप को स्वीकार करती है। हिंदी पत्रकारिता ने इन क्षेत्रों में शब्दावली का विकास किया है।

इन शब्दावलियों में भी विभिन्न स्रोतों ने अपनी शब्दावली का योगदान दिया है। इनके उपयोग द्वारा हिंदी पत्रकारिता ने अनेक विषयों में लिखने और रचने की क्षमता हिंदी भाषा को प्रदान की। इनके मिले-जुले प्रयोग से हिंदी का ऐसा रूप बना जो बड़ी आसानी से जनसामान्य तक पहुँच जाता है।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में जो शब्द प्रयोग होते हैं, उन्हें स्रोतगत आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

पत्रकारिता का शब्द भंडार : स्रोत विवेचन

हिंदी पत्रकारिता की शब्दावली को निम्नलिखित विषय क्षेत्रों के संदर्भ में देखा जा सकता है :

1. फिल्म पत्रकारिता
2. खेलकूद पत्रकारिता
3. महिला पत्रकारिता
4. विज्ञान पत्रकारिता
5. साहित्यिक पत्रकारिता
6. व्यावसायिक पत्रकारिता

इन सभी क्षेत्रों में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दावली का प्रयोग मिलता है। जब कोई भाषा विभिन्न भाषाओं के संपर्क में आती है, तो उनका उसकी शब्दावली पर सर्वाधिक असर पड़ता है। हिंदी पत्रकारिता तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग नहीं करती, बल्कि एक विषय के जो विविध क्षेत्र होते हैं, उनसे संबद्ध करके ही इनका प्रयोग करती है।

फिल्म पत्रकारिता में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली :

क) फिल्म से जुड़े व्यक्ति :

निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक, अभिनेता, अभिनेत्री, तारिका, विलन।

सहायक, पार्श्व गायिका, सुगम संगीत, खलनायक, खलनायिका।

ख) फिल्म के गुण से संबंधित :

सशक्त, उत्तेजक, आलोचक, हास्य, रहस्य, संगीत, कर्णप्रिय, अद्वितीय, नवीनतम, नारकीय, अपशब्द, कालगर्ल।

फ़िल्म समाचार से संबंधित

पत्रकारों, प्रचार अभियान, शिखर, रंगमंच, मॉडलिंग, अश्लीलता, द्विअर्थी, अनुबंध, आरोप, अंगरक्षक, वृत्तचित्र, प्रदर्शन, प्रदर्शन प्रमाण-पत्र, तेलुगु संस्करण, स्थगित।

तत्सम शब्दों में से अनेक शब्द धर्म, भोजन-पान, रहन-सहन, फल, मकान, जंतु, पक्षी, शरीर, मानव संबंध सूचक, वनस्पति, चिकित्सा-स्वास्थ्य, तिथि-महीना, ऋतु, प्रकृति-अंग आदि से संबंधित शब्द हिंदी साहित्य में स्थान पा गये हैं।

धर्मसंबंधी : अर्चना, अवधूत, ईश, ईश्वर, उपासक, उपासना, कीर्तन, दक्षिणा, पूजन, भजन, मंदिर, यज्ञ, व्रत, हवन आदि।

शिक्षा-संबंधी : अध्ययन, उपनिषद्, काव्य, चंपू, ज्ञान, नक्षत्र, पत्र, परीक्षा, पुराण, पुस्तक, लेखनी, वेद, व्युत्पत्ति, साहित्य आदि।

भोजन-पान संबंधी : अन्न, धृत, जल, नवनीत, पीयूष, नीर, भोजन, मद्य, मांस, मोरक, वारि आदि।

रहन-सहन संबंधी : कंगन, दया, दान, नम्र, पट, पारितोषिक, यूथ, वसन, वस्त्र, विवाह, विष, वैभव, व्रत, शैया, श्वेत-वस्त्र, शृंगार, पुरस्कार, स्नान आदि।

फल-फूल संबंधी : इंगुदी, कंज, कदंब, कदली, कुसुम, खजूर, जंबीर, तमाल, पंकज, पद्म, पनस, पुष्प, पसून, बदरी, सरोज आदि।

मकान-संबंधी ; आश्रम, उटज, कुटी, कुटीर, गृह, प्रासाद, भवन, सदन आदि।

जंतु संबंधी : कृमि, गज, गर्दभ, गो, धेनु, पशु, मत्स्य, मृग, मृगया, व्याल, श्रृगाल, सिंह।

पक्षी संबंधी : कोकिल, खग, चातक, पिक, मयूर, विहंग, शुक, सारिका।

शरीरांग संबंधी : अंक, अंग, उरोज, कंठ, कटि, कपोल, चरण, तन, दृग, नयन, भुज मस्तक, मस्तिष्क, मुख, रक्त, रसना, रुधिर, लोचन, वदन, शरीर शोणित, हस्त, हृदय।

मानव एवं उनके संबंध सूचक : मुसलमानी तथा यूरोपीय प्रभाव से बालक, बाल, बालिका, युवा-युवती, वृद्ध तथा वृद्धा आदि के स्थान पर अनेक विदेशी शब्द डैडी, ममी, अंकल आंटी आदि का प्रचलन हो गया। इस प्रकार के कुछ प्रचलित शब्द निम्नलिखित हैं : कन्या, तात, दूत, पति, पत्नी, पितृ, पुत्र, बंधु, बालक, बालिका, भ्रातृ, माँ, मातृ, वत्स, वधू, वर, शिशु सखा, सुता आदि।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य-संबंधी : आयुर्वेद, आलस्य, औषध, चरक, चिकित्सा, ज्वर, निदान, रस, रेचन, रोग, विराग, विश्राम, वैद्य, वैद्यक, सुदर्शन, स्फूर्ति आदि।

वनस्पति एवं वाटिका संबंधी : प्राचीन समय से ही संस्कृत के साहित्यकारों ने शस्यश्यामला भारत भूमि के वर्णन द्वारा संस्कृत-साहित्य को गौरव प्रदान किया है। उसी परंपरा को सराहनीय ढंग से आगे बढ़ाते हुए हिंदी साहित्यकारों व पत्रकारों ने भी अनेक तत्सम शब्दों को अपनी भाषा में स्थान दिया है।

उदा : अशोक, उपवन, कुंज, तमाल, तरू, द्रुम, पथ, माधवी, मुकुल, रसाल, लता, लतिका, वृक्ष, शिंशपा, शिखा आदि।

तिथि-मास तथा ऋतु संबंधी : हिंदी में इस प्रकार के नामों की शब्दावली के कुछ शब्द तद्भव रूप में तथा अधिकांश तत्सम रूप में प्रचलित हैं, अमावस्या, तिथि, पूर्णिमा, चैत्र, जेष्ठ, फाल्गुन, ऋतु, ग्रीष्म, वर्षा, वसंत, शरत्, शिशिर आदि।

कुछ अन्य प्रमुख वस्तुओं-संबंधी : संस्कृत भाषा में विभिन्न वस्तुओं के लिए प्रयुक्त नामों का हिंदी भाषा में ज्यों का त्यों प्रयोग मिलता है। विदेशी प्रभाव के कारण कुछ वस्तुओं के नाम विदेशी भाषा के शब्दों में भी प्रचलित हैं : यथा- कंदुक के लिए फुटबाल, तूलिका के लिए ब्रश यवनिका के लिए पर्दा किंतु अनेक तत्सम शब्द अपने महत्व के कारण अब भी हिंदी भाषा में प्रचलित हैं।

उदा : अंजन, कंदुक, कवच, तूलिका, पाषाण, मुकुट, मुक्ता, मुरली, यवनिका, वस्तु, वीणा, स्वर्ण, हेम आदि।

प्रकृति-संबंधी : साहित्यविदों ने प्रकृति के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करते रहे हैं। ऐसी रचनाएँ भारतीय संस्कृति तथा सभ्यात की पृष्ठ-भूमि पर रची गयी है। इस प्रकार के कुछ प्रचलित तत्सम शब्द निम्नलिखित हैं :

अंबर, अंबुधि, अनिल, उर्मि, गगन, चंद्र, जलद, ज्योत्स्ना, दिनकर, धरा, नदी, निशीथ, पयोधि, पवन, प्रभंजन, प्रात:काल, मलय, मारूत, मेघ, रामा, रात्रि, वायु, विधु, सरित, सरोवर, हिम आदि।

2. महिला पत्रकारिता में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली :

पत्रिका से संबंधित (संपादकीय, संपादक के नाम पत्र आदि।

रोचक सामग्री, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्षा, नियुक्ति, विशेषधिकार, अंक, दुर्लभ, चयन, प्रबंधक।

युवा जगत : युवा पौध, वरक्रय प्रथा, नाममात्र, यंत्रणाजनक, स्वजनों, परिजनों, एकाकी, विशोरी, आधुनिका, संयुक्त परिवार, चतुर्मुखी विकास, केन्द्रीय शक्ति, युगल, संभ्रांत, गृहिणी, रूक्ष, ग्रंथि, पुनर्विवाह, उत्पीड़ित, अर्धांगिनी।

ख) पाक-कला

व्यंजन विधि, फलाहार, खाद्य-सामग्री, खोआ, पिस्ता, काजू, बादाम, चीनी या बूरा, गूदे, लोइयां, अरारोट, गोल बैंगन आदि।

ग) **स्वास्थ्य, यौन-संबंधी** :

मासिक धर्म, डिंबवाही नलियाँ, प्रजनन प्रणाली, उपचार, स्नान, स्पर्श, चुंबन, आलिंगन, गरिष्ठ, चक्रनुमा मासिक परिवर्तन, मासिक सुख, चर्मरोग विशेषज्ञ, रोमछिद्र, संतान सुख, रजोदर्शन, यौन इच्छा, कामसुख, प्रौढ़, गर्भाशय, सक्रिय, शुक्राणु, व्यवधान, व्यायाम, निरोधित डिंब, सतही, ऊत्तक। इसके अतिरिक्त खेलकूद, व्यवसाय, विज्ञान साहित्यिक पत्रकारिता में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली को भी इस संदर्भ में देखा जा सकता है।

खेलकूद संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली : मनोवृत्ति, हिंसक प्रवृत्ति, पारी, प्रतिद्वंद्वी, प्रतिभावान, रक्षापंक्ति, अंतर्राष्ट्रीय खेल, राष्ट्र मंडल खेल, अटकलें, भारोत्तोलन।

व्यवसाय संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली :

क) मूल शब्द :

उपभोक्ता, कोष, हित, वित्तमंत्री, जर्जर, दर, नियंत्रण, विश्लेषण, शक्ति, उपभोग, आबंटन, क्षेत्रफल, राजस्व, अनुबंध, देयता, विपणन, रोकड़, बड़ी, बहीखाता, लेनदेन।

ख) **संयुक्त शब्द** :

उदारीकरण, आत्मनिर्भर, प्रतिबद्धता, लाभवृद्धि, अग्रणी, विश्व व्यापी, सार्वजनिक, कुठाराघात, अल्पसंख्यक सरकार, उत्पादकता, आर्थिक नीति, मुद्रा-स्फीति, संतुलित, आर्थिक संवृद्धि, मानव शक्ति, प्राकृति संसाधनों, सूचना प्रणाली, व्यावसायिक यांत्रिकी, खाद्य संसाधन, निवेशक, प्राथमिकता, अल्पावधि, दीर्घावधि।

अस्थायी स्थिति, सेकेंडरी मार्केट, सूचीबद्धता, पारदर्शिता, संयुक्त योजना, समभाव, निर्यात आय, सक्रिय

ध्रुवीकरण, अवमूल्यन, समानुपातिक, औद्योगिक नगर, भूमि अधिग्रहण, सांख्यिकी, विनियोजन, निगम, प्रदूषण निवारण, उपभोक्ता बाज़ार, वातानुकूल, सावधि ऋण, उद्योग औसत, विदेशी मुद्रा विनिमय।

5) विज्ञान संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली :

क) मूलशब्द :

ब्रह्माण्ड, आविष्कार, ऊर्जा, निदेशक, प्राण, उपादान, समीकरण, सूत्र, विकिरण, परिधि आदि।

ख) संयुक्त शब्द :

मूलभूत, सूक्ष्मग्राहीयंत्र, सम्मिश्रण, परमाणु कण, अकल्पनीय, शक्यकण, भौतिकी, अविभाज्य, चरमकरण, चुंबकीय क्षेत्र, त्वरकों, द्रुतगामी, खगोल विज्ञान, पनडुब्बियाँ खगोलीय पुंज, क्षुद्रकण, आतंरिक संरचना, उपस्कर आदि।

साहित्यिक पत्रकारिता में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली :

निबंध : विभाजन, जनभाषा, शब्द-संपदा, कोशीय अर्थ, चेतना, निरोधक चिंतन, गतिशीलता, अमरबेल, तंतु, क्षितिज, मूल्यसत्ता, अवरोध, शिथिल, पूंजीवाद, पुष्ट-प्रमाण, भाषा-शैली आदि।

समीक्षा : अप्रचलित, अंतरंग, सृजनात्मक, जड़ता, अनुष्ठान, गतिशीलता, मौलिकता, जागरूक, क्रियाशील, त्वरा, कालखंड, धरातल, परिदृश्य, कृतियाँ, लोकप्रिय कलेवर, आकलन, पिष्टपेषण, विवृत्ति, भौक्तृत्व, कर्तृत्व, आलोच्य आदि।

हिंदी पत्रकारिता में तद्भव प्रकार के अनेक शब्द भोजन-पान, रहन-सहन, आवास, जंतु, वनस्पति, मानव तथा उनके संबंध, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, शरीरांग, कृषि, तिथि, मास, ऋतु तथा प्रकृति आदि से संबंधित हैं :

1. धर्म-संबंधी, 2. भोजन-संबंधी, 3. रहन-सहन संबंधी, 4. आवास-संबंधी, 5. जंतु-संबंधी, 6. वनस्पति-संबंधी, 7. मानव-संबंधी एवं संबंध सूचक, 8. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधी, 9. शरीरांग संबंधी, 10.

कृषि संबंधी, 11. तिथि-मास तथा ऋतु संबंधी, 12. प्रकृति संबंधी।

धर्म-संबंधी : दैव, कौर, धरम, पुण्य, मूरति, सच आदि।

भोजन-संबंधी : आटा, आम, कड़ी, कौर, खांड, गुड़, गेहूँ, घी, चटनी, चना, चावल, छांछ, जौ, तेल, दूध, लोटा, पेड़ा, भंग, मक्खन, मटर, माखन, मिठाई, मिर्च, लड्डू, लाडू आदि।

रहन-सहन संबंधी : अंगीठी, आंचल, आग, कठौत, कपड़ा, खटिया, घूंघट, चलनी, चांदी, चारपाई, चोर, जुआ, जूड़ा, जूता, ठग, तेल, नहाना, नाच, पलंग, पाती, बसन, बिंदी, बेश, भेरू, रुपया, साड़ी, सिंदूर, सोना, सोहर, सेवा, हीरा आदि।

आवास-संबंधी : जीवन की आवश्यकाताओं में भोजन और कपड़े के बाद आवास का स्थान है। यह आवश्यकता मानव की उत्पत्ति के समय से है। आज के वैज्ञानिक युग में इच्छा तथा आवश्यकता के अनुसार इस क्षेत्र का बहुत विकास हुआ है। आवास-संबंधी संस्कृत शब्दावली का बहुत कुछ अंश परिवर्तित होकर हिंदी भाषा में आया है। उदाहरण :- कुटिया, घर, झोपड़ा, झोपड़ी, ठौर, भौन आदि।

जंतु-संबंधी : कीड़ा, कुत्ता, कौवा, गाय, गीदड़, घोड़ा, टिटेहरी, तितली, बगुला, बछिया, बाघ, भैंस, भेड़िया, भौंरा, मच्छर, मछली, सपेरा, सांप, स्यार आदि।

वनस्पति-संबंधी : कोंपल, मूली, तिल्ली, पत्ता, पात, पौधा, बांस, बेल, सरसों आदि।

मानव-संबंधी एवं संबंध सूचक : पाश्चात्य सभ्यता की अपेक्षा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में मानव संबंधों का अधिक महत्व है। यही कारण है कि हिंदी भाषा में संबंध सूचक तत्सम शब्दों के साथ तद्भव शब्दों का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

उदाहरण : अम्मा, अहीर, चश्मा, चमार, चाचा, चाची, तेली, दाऊ, देवर, पिया, पूत, बहू, बहन, बाप, बाबा, बुढ़िया, बेटा, बेटी, भाई, भाभी, भैया, ससुर, सास, सौतन आदि।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य-संबंधी :

उदाहरण : औषधि, कपूर, छुट्टी, नारी, पसीना, पुड़िया, सांस, सौरी आदि।

शरीरांग-संबंधी : आंख, उर, ओंठ, कंधा, कान, खोपड़ी, चमड़ी, तिल्ली, दांत, नाक, नैन, पांव, पीठ, पैर, बदन, बाँह, माथा, मुँह, मुट्ठी, रोआं, लहू, शरीर, हथेली, हाथ, होंठ आदि।

कृषि-संबंधी : किसान, कृषि, क्यारी, खेत, गन्ना, गोबर, पौधा, बीज, बैल आदि।

तिथि-मास तथा ऋतु संबंधी : तिथि-मास तथा ऋतुओं से संबंधित शब्द संस्कृत के तत्सम रूप में प्रयुक्त हुए हैं, किंतु कभी-कभी उनका प्रयोग तद्भव रूप में भी होता रहा है-

उदाहरण : अगहन, आषाढ़, चैत, जेठ, फागुन, ग्रीष्म, बसंत, बैसाख, शरद, सरद हवा, शिशिर, हेमंत आदि।

कुछ अन्य प्रमुख वस्तुओं संबंधी : कटोरा, कन, कसौटी, कांटा, काठ, कौड़ी, घड़ा, चक्की, छुरी, तलवार, दीया, धुआं, पंखा, पत्थर, बांसुरी, मोती, लकुटिया, लाठी, लोटा, सीढ़ी आदि।

तद्भव शब्दों का संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण तथा अव्यय रूप में वर्गीकरण :

हिंदी पत्रकारिता में प्राकृत के माध्यम से परिवर्तित रूप में आने वाले संस्कृत के शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण तथा अव्यय सभी प्रकार के शब्द हैं। इस प्रकार तद्भव शब्दों को भी उनके भिन्न-भिन्न वर्ग के शब्दों के अनुसार वर्गीकृत कर सकते हैं। जैसे :- काम, कुटीर, गोबर, घर, छेद, नाच, नींद, बीज, भस्म, भाषण, रात, संदेश, हाथ, कविता, कुटिया, गुड़िया, गुफ़ा, चंद्रमा, पालना, पौधा, भैया, रुपया, सपना, सुधि, थपकी, फांसी, बांसुरी, मोती, लकड़ी, लाठी, सीढ़ी, बालू, गेहूँ, लड्डू आदि।

विशेषण : अच्छा, अरुण, कड़वा, कायर, टेढ़ा, तेज, दारुन, पुराना, बड़ा, भद्दा, भोली, मझली, मीठा, मैली, रूखी, लंबा, सच्चा, सारा, शुभ, सूखा, सूक्ष्म, सूना, कैसा, कोई, कौन, जैसा, ये, यह।

क्रिया : आना, उगलना, उछलना, कढ़वा, करना, कांपना, खोलना, गरजना, गाना, चलना, चुभना, चूमना, चूसना, छिपना, छूटना, जाना, देना, धंसना, नाचना, धोना, पढ़ना, पसारना, पिलाना, पूंछना, फूलना, फेंकना, फैलना, बनाना, बहना, बिसरना, बुलाना, बुहारना, बैठना, बोलना, भेजना, मिलना, रहना, रोना, लगना, लचकना, लिखना, समझना, सुनता, सोना, हंसना, होना आदि।

अव्यय : अजी, अहा, आह, आहा, ओह, प्रात, भला, हाय आदि।

ये तब तक देशी कहे जाएँगे और व्युत्पत्ति ज्ञान होते ही वह अन्य कोटि में चला जाएगा।

देशज शब्दावली :

क) खेलकूद में प्रयुक्त देशज शब्दावली : खिलाड़ी, जोखिम, माहिर, घरेलू, तिहरा, रस्सों, मुक्केबाज़ी, पहलवानी, पिस्तौल, बोरियत, लंगोट, रिश्तेदार, हथकड़ी, मासूमियत, कारगुजारी, भिडंत, तुक्का, चक्का, फेंकना, चप्पू, पखवाड़ा, खचाखच, गिचपिच, दनादन, धड़ाधड़, हुड़दंग आदि।

ख) फिल्म-जगत में प्रयुक्त देशज शब्दावली : पथराव, गड़बड़-झड़बड़, भोंडे, हथकंडा, चमचों, नकेल, बड़े पर्दे, छोटे पर्दे, ऊटपटांग, बिंदास, फूहड़, बिगडैल, कोसते, ढिंढोरा, कट्टर, तनातनी, पंगा, कड़ियाँ, मुहिम, बात का बतंगड़, ओछी, धुनाई, ललकारते, रंगरेलियाँ, बेसब्री, बासी आदि।

ग) पारिवारिक पत्रकारिता में प्रयुक्त देशज शब्दावली :

1. संज्ञा : बड़प्पन, गुट, बिरादरी, हंसी, ठिठोली, अड़चनें, कलह, बट्टा, नानुकर, सूजन, खूसटपन, मनमनोव्वल, लिजलिजापन, चाकरी, मक्खन, गद्दा, ठुमरी, पपीहा, पपीहरा आदि।

2. विशेषण : सटीक, कारगर, बड़बोला, खरीखोटी, ब्याहता, अनापशनाय, बनीठनी, खुरदुरे, चहेती, घरेलू, सन्नाटा, अलल टप्पू, कल-कल, काँव-काँव, खल-खल, खिलखिलाना, घनन-घनन, चपपट, टाँय-टाँय ढिंढोरा, रिमझिम, रुनझुन, हल्ला, हुल्लड़, हुड़दंग आदि।

3. क्रिया : बिदकना, अखरता, थकेमांदे, कटकटाना, कड़-कड़ करना, कराहना, कल-कल, काँव-काँव, किलकिलाना, कुलबुल, खटकना, खटखटाना, खट-पट, खड़खड़ाना, खनकना, खनखनाना, खरखराना, खल-खल, खलबली, खसकना, खिलखिलाना, खुरखुरा, खुसुर-फुसुर, गिजमिजाना, गिड़गिड़ाना, गुनगुना, गुर्राना, घनघन, धर्म, घिग्घी, घुड़की, चटकना, चटखारे, चटखना, चटपट, चरद-मरद, चहकना, चहचहाना,

चहल-पहल, चांटा, चिड़चिड़ाना, चुटकी, चुभना, चुहल, चूं-चकार, छक-छक, छटपटाना, छन-छन, छनननन, छप-छप, छम-छम, छल-छल, छीं, झकझक, झकोर, झगड़ना, झन-झन, झन्नाटा, झुंझलाना, झर-झर, टन-टन, टपक, टपकना, टाँय-टाँय, ठट्टा, ठुमकना, डबडबा, डूबना, डुबोना, ढमाढम, तड़-तड़, तिलमिलाना, थपकना, थपकी, थूंकना, थपेड़ा, थरथर, दनादन, धक-धक, धड़ाम, धधकना, धमाका, धम्म-धम्म, धुकधुकी, पड़ापड़, पिउ-पिउ, पुचकारना, पों-पों, फटकना, फटकारना, फड़पड़ाना, फुफकारना, फुसफुसाना, फू-फू करना, फूंकना, बक-बक, बड़बड़ाना, बिलबिलाना, भड़कना, भभकना, भरभराना, भिनभिनाना, मचकना, मचलाना, रिरियाना, सकपकाना, सटर-पटर, सर्राटा, सिटपिटाना, सिसकना, हक्का-बक्का, हड़बड़ाना, हल्ला, हाहा! हिचकी, हिनहिनाना, हाहा-हाही आदि। इनमें कुछ 'करना' को लेते हैं जिससे क्रिया शब्द बन जाता है।

घ) व्यवसाय-संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त देशज शब्दावली : आमूल-चूल, कायापलट, कामकाज, निचले-तबके, बढ़ोतरी, छंटनी, जोखिम, साख, उतार-चढ़ाव, गिरावट, लेवाली, बिकवाली, निगरानी, घाटा, मंदी, नरम-गरम, लागत, भागीदारी, पहली छमाही, ऊबड़-खाबड़, टिकाऊ, फुटकार, बिक्री, कटौती आदि।

च) विज्ञान-संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त देशज शब्दावली : लगन, बनावट, अरबों-खरबों, निराई, गुड़ाई, सिंचाई आदि।

ज) साहित्य-संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त देशज शब्दावली : टूटन, बंटवारा, भिड़ाया, जुड़ाव, ठेकेदारों, सूखी-रोटियाँ, जुगाड़, रोजी-रोटी, लीपापोती, पुरसाहाल, ददुआ गिरोह, नौबत, गल्ले की दुकान, गमक, गड़बड़, घमासान, चोचला, झंझट, झिझक, टटोलना, टुकुर-टुकुर, डगमग, डहडहाना, तड़क-भड़क, धांधली, भोंडी, लतपत, लथपथ, हड़पना आदि।

विदेशी शब्दावली : विदेशी शब्द भारतीय आर्य भाषा में प्राचीन समय से ही आते रहे हैं। संस्कृत, प्राकृतकाल से लेकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं तक में अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द स्थान पा गए हैं। इनमें से कुछ शब्द तो इतने गहरे पैठ गए हैं कि उनको अलग करना असंभव है। हिंदी में भी अनेक विदेशी भाषां के शब्द आते रहे हैं। जिन विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में शब्द आये हैं वे फारसी, अरबी, तुर्की, ईरानी, पश्तो (अफगानी), अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, फ्रेंच, डच, लैटिन, ग्रीक, इटैलियन, जर्मन, स्पैनिश,

चीनी, जापानी आदि है।

विदेशी शब्दावली के अंतर्गत उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्दों को यहाँ लिया गया है। इन दोनों स्रोतों की शब्दावली का प्रयोग हिंदी पत्रकारिता में पूरी तरह प्रचलित और स्वीकार्य है। सभी विषय क्षेत्रों में इस शब्दावली का प्रयोग होता है और मूलरूप से ये शब्द हिंदी पत्रकारिता को विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। अंग्रेज़ी के वे शब्द जिनकी संकल्पना को व्यक्त करने के लिए देशज, संस्कृत या उर्दू शब्दावली में शब्द उपलब्ध नहीं है अथवा जो अंग्रेज़ी शब्द जनमानस पूर्ण हैं उन्हें हिंदी पत्रकारिता ने लिप्यंतरित करके अपना लिया है। उर्दू के शब्द सामान्य भाषा में लंबे समय से प्रचलित हैं। अत: इनके स्थान में संस्कृत-निष्ठ को न रखकर इनका प्रयोग हिंदी पत्रकारिता में किया जाता है। उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी संस्कृत शब्दावली की तरह क्षेत्र और उसके उपक्षेत्र के अनुसार किया जाता है।

ऐसी ही स्थिति अंग्रेज़ी शब्दों की भी हैं, जहां एक ही क्षेत्र के भीतर अलग-अलग प्रकार की स्थितियों को बताने के लिए इन्हें प्रयुक्त किया जाता है।

उदाहरण के लिए महिला पत्रकारिता में उर्दू शब्दों के विविध उपक्षेत्रों को देखा जा सकता है।

1. महिला पत्रकारिता में प्रयुक्त उर्दू शब्दावली :

क) संपादकीय में - उदा : अखबार

ख) लेख में : उदा : फिजूलखर्ची, जोश, मस्ती, सबक़, आज़ादी, रस्मों, तमाम कानून, चुहल बाज़ी, निशानों, खुश्की, रजामंद, राजी, दिलोजान, पेंचीदगियाँ, रंजिश, इल्म, नाईसाफी, गुनाह, कागजात, कोफ्त, ईजाद, दिलचस्पी, परहेज, नफरत, ज्यादतियाँ, रोज़मार्रा, तरीक़ा, मुबारकबाद, दिक्कत, फर्क, मेहमाननवाजी, नज़रअंदाज, नजाकत, सलीके आदि।

ग) पाक कला में - उदा : पकवान-संबंधी।

घ) स्वास्थ्य - उदा : रोग विषयक लेखों, प्रश्नोत्तरों में

उदा : खुश्की, रजामन्द, राज़ी, दिलोजान, पेचींदगियाँ, तकलीफ़, पसोपेश, परहेज़, नफ़रत, सख्त

नफरत, एहतियात, अरमान, कसरत, मालिश, दस्तानों आदि।

इस शब्दावली में उर्दू की विशेषताओं का भी सार्थक प्रयोग दिखता है। कुछ विशेषण और अव्यय भी प्रयुक्त मिलते हैं, जैसे-

विशेषण - उदा : खुशहाल, बदचलन, हमपेशा, शक्की मिजाज, अजीज, खफ़ा, बखूबी, कानूनी, हल्का-फुल्का, खूबसूरत, हमराज़, आरामदेह, तरोताज़ा, रोजमर्रा, मेज़बान, मेहमान, चंद आदि।

अव्यय - उदा : बेहद, वाकई, आईंदा, आदि।

इसके अतिरिक्त खेलकूद, फिल्म, व्यवसाय, साहित्य, विज्ञान, पारिवारिक, पत्रकारिता में भी उर्दू के शब्द देखे जा सकते हैं।

खेलकूद की पत्रकारिता में प्रयुक्त शब्दावली - **उदा** : बावजूद, मजबूरन, बखूबी, मौजूदगी, तेज़, हासिल, मजबूत, शामिल, बेहतर, खौफनाक, गेंदबाज, मदद, बेमिसाल, अदा की, बेहतरीन, न सिर्फ, जोरदार, प्रदर्शन, की बदोलत, मौकों, लाजवाब, तरीके, हिस्सा, ख़ासी मशक्कत, एतराज, औकात, ख्वाहिश, उम्दा, काबलियत, मेजबानी, मुकाबले, तहत, बकौल, अख्तियार, पेशेवर, नामर्द, खुशियाँ, तैराकी, खुशफहमी, फीसदी, बमुश्किल, सितारे आदि।

फिल्म पत्रकारिता में प्रयुक्त उर्दू शब्दावली - उदा : हंगामा, अंदाज़, रूतबा, दावेदार, खिताब, तमन्ना, खुदगर्ज, दौलत, किरदार, मजाकिया किरदार, बेमिसाल, हक़दार, फरियाद, अफवाह, बरदाश्त, औकात, फुर्सत, बयानबाज़ी, शख्सियत, हरकते, फहरिस्त, सफेदपोश, तादाद, जवाब तलब, बारीकियाँ, हिरासत, शिकन, काबिले तारीफ़, ज़हमत, महज़, फिकरे कस्ता आदि।

व्यवसाय संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त उर्दू शब्दावली - उदा : काश्तकार, मुहैया, कारोबार, दूरदराज़, रोज़गार, दाम, रफ्तार, खराब असर, करार, बेहतर, मुआवज़ा, हिस्सों, गुंजाइश आदि।

विज्ञान सम्बन्धी पत्रकारिता में प्रयुक्त उर्दू शब्दावली - उदा : तस्वीर, खुर्दबीनों, वज़न, दौरान, रफ्तार, हैरत अंगेज़, फिल्म, खूबियाँ, अजीबोग़रीब, कलाबाजी, कारनामे आदि।

साहित्यिक पत्रकारिता में प्रयुक्त उर्दू शब्दावली - उदा : तक़सीम, हकूमत, तज़बीज़, जद्दोजहद, इंकार, नक़ल, इशारा, अहसास, दस्तावेज, मौत, अफीम, तरोताज़ा, जायजा, दायरे में, बेहद आदि।

2. अंग्रेज़ी शब्दावली :

क) खेलकूद की पत्रकारिता में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दावली : उदा : फुटवर्क, स्क्वायर, ड्राइव, कैप्टन, गेम, क्रिकेट, हुकशाट, ऑफस्टैंप, सीजन, टीम, पोलो, प्लेयर, क्रीज़, स्क्वायर कट, आफसाइड, फारवर्ड डिफेंस, स्ट्रीक, फालोआन, फुटबाल, विलियर्ड, विकेट कीपिंग, कवर, लिफ्ट, बैडमिंडन, फ्लिक, लिटिल मास्टर, स्ट्रेट ड्राइव, रेफरी, मैच, रिटायर, रेफरी, रैकिट, शटलकार्क, चेंपियन, सीरिज, फुलटास बैनर, लेफ्ट आर्मस्पिनर, आलराउंडर, फील्डिंग, सेमीफाइनल, मैच्योर प्लेटफार्म, आउट, पेनल्टी रन, फिटनेस, पेड, थर्डमेन, मिडविकेट, स्ट्रोक, पैच, नाक आउट, कैरियर, जज, ओलोंपिक, हॉकी, ड्रा, लेफ्टइन, लेफ्टआउट, टेस्ट मैच, फारवर्ड लाइन, बाक्सिग, एथलिट, गोल आदि।

ख. फिल्म पत्रकारिता में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दावली -

सामान्य - उदा : थियेटर, रिलीज़, इमोशनल, ग्लास, जाकेट, सेट, सीन, गर्म हीरोइनों, टाइमटेबल, एलबम, शूटिंग, लंच, टेक्नीशियंस, कामनरूम, कालर, स्पॉट बॉय, पब्लिसिटी, बॉक्स ऑफिस, प्राइस, वेल्यू, स्टाइल, आर्टिस्ट, आउटडोर शूटिंग, इंगोरिलीज़, टाइम, बोट, रोमांस, प्रोपगंडा, फिल्मी कैरियर, नंबर वन, नेगेटिव रोल, सुपर हिट, प्रोफेशन, फ्लोर, रोल, विलेन, फंक्शन, बेस्ट परफारमेंस, एक्शन, लेबल, स्टारडम, स्कोप पब्लिसिटी, ट्यूनिंग, चाकलेटी हीरो, टेलेन्ट, सिनेएक्टर, स्कीन टेस्ट, फाइनांसर, सेटअप, मल्टी स्टार्स फिल्म आदि।

मूल - उदा : डायरेक्टर, मार्किट, शेड्यूल, चैनल, ऑफर, टेकनीकी, डेट्स, एडजस्ट, बिजनेस, शॉट, केरियर, बुक, शूटिंग, फेवर, स्क्रिप्ट, स्टाईल, लोकेशन, यूनिट, आइटम, डायलॉग आदि।

संयुक्त - उदा : हिट फिल्म, शेयर मार्केट, पब्लिक इश्यू, कमीशन्ड सीरियल, एपीसोइल, पावरफुल, अन्योवेशनल फाउलिंग, केरियर प्रोमोट, फास्टिंग, नम्बर वन, रिएक्शन, लाइफ-टाइम, पेकअप, कैमरा लुक, डबिंग, शोपीस, सिल्वर जुबली आदि।

ग. विज्ञान संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दावली - उदा : रेडशिफ्ट, हैंडलूम, सब्सिडी कार, क्लाक, ग्रामोफोन, टन, इलेक्ट्रॉनिक, आइसोटोप, टाइमपीस, स्प्रिट, लेबोरेटरी, टेलीफोन, पिस्तौल, फिल्म, फोटोग्राफ, बाइसाइकिल, मशीन, मिस्त्री, रिवाल्वर, वाच, स्प्रिंग, हैंडिल, इग्जर्शन, इनर्जी, एंबुलेंस, कार्बन, कैलिशयम, क्लोरोफार्म, ग्रेन, टॉनिक, टेंपरेचर, डॉक्टर, डिजीज, डेबीलीटी, ड्रिंक, नार्मल, न्यूमोनिया,

पल्स, पाउंड, पाउडर, पेस्ट, पोस्टमार्टम, प्रेसक्राइब, प्लेग, फिल्टर, मिक्शचर, मेडिकल रेस्ट, लिक्विड, विकनेस, सिविलसर्जन, सिगरेट, सेरीब्रल, स्ट्रेचर, स्पेशियालिस्ट, हिस्टीरिया, हैमरेज, आदि।

घ. व्यवसाय संबंधी पत्रकारिता में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दावली - उदा : कंपनी फूड, ड्रग, एंबुलेंस, कम्पार्टमेंट, कार, टमटम, ट्रेक, चेयरमेन, स्टॉक एक्सचेंज, प्राजेक्ट, डाउन, ड्राइवर, पैकेज, इश्यू, पावर रिफाइनरी, प्लेटफार्म, फिटन, बग्घी, स्टील-पेट्रोकेमिक्ल, ओवर सबस्क्राइल, प्लेटफ़ार्म, मोटर, पैड्स, लिक्विडिटी, डिस्काउंट, रोड, लाइन, शार्ट टर्न, प्रीमियस, प्राइस रिरिंग, सिगनल, रिगिंग सेक्रेंडरी मार्केट, लिस्टेड, स्टेशन, स्टीमर, इन्वेस्टर, फोरम, हाटमनी, स्ट्रीट, फोजन मनी, पिक्चर ट्यूब, एक्साइज व कस्टम ड्यूटी, केमिकल, टेक्स्टाइज व कस्टम फ्लाट, नेट प्राफिट, क्वालिटी की गारंटी फोमन (बन्य पड़ावन) डायज़ सविलिस ड्यूटी रिफंड, एडवांस लाइसेंस, लाइसेंस ब्रोकर, वॉयडॉग, चेक पोस्ट सर्विस स्टेशन, टेलीफोन एक्सचेंज, कन्वर्जन, बुलेटिन, न्यूज़प्रिन्ट, स्पेशलिटी, पेपर, ओवर सब्सक्राइव, बल्क पावर आदि।

ड. साहित्यिक पत्रकारिता में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दावली - उदा : थियेटर, मिस्टर, कम्यूनिस्ट, रूम, तौलिया, थियेटर, पम्पशू, पतलून, पार्क, पार्टी, फैमिली, पालिश, पालिटिक्स, फिल्टर, फिल्म, फैशन, फैशनेबिल, बक्स, बनियान बार, बिस्कुट, बूट, बोतल, ब्रदरहुड, मनी, लब, लान, लालटेन, लिबरल, लैंप, वाइफ़, शू, सूट, सोडावाटर, हारमोनियम, हाल, हैंडबिल, हैट, होटल, ह्विस्की, कॉलेज, कोर्स, ट्यूशन, प्रोफेसर, नावेल, ड्रामा, थिओरी, नोटबुक, पी-एच.डी., पेंसिल, पेपर, प्रिंसिपल, फिजिक्स, बुक, यूनिवर्सिटी, रजिस्टर, रबर, लाइब्रेरी, लेबोरेटरी, साइंस, स्कूल, स्टडी, हॉस्टल, स्टूडेंट आदि।

1.6 निष्कर्ष :

आज का पाठक पत्र-पत्रिकाओं की शब्दावलियों से पूर्णत: परिचित है और हो रहा है। इसके कारण ही पत्रकारिता की हिंदी का जो स्वरूप है वह संप्रेषणीय और साथ-साथ बोधगम्य व लोकप्रिय है।

सम्यक रूप से दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि शब्द-समूह के एक-एक वर्ग का अपना महत्व है और हिंदी-भाषा की भी वृद्धि में उन सभी वर्गों का महत्वपूर्ण योगदान है। यदि किसी भाव की अभिव्यक्ति के लिए शब्द का अभाव हो, तो पहले संस्कृत के तत्सम, तद्भव और उससे भी अभिव्यक्ति संभव न हो तो देशी भाषाओं अर्थात् बंगला, मराठी, तमिल, तेलुगु आदि के शब्दों को ग्रहण करना उचित होगा। यदि तब भी अभिव्यक्ति संभव न हो तो बिना किसी संकोच के अर्थात् सहर्ष विदेशी भाषा के शब्दों को अपनाना हिंदी के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है।

संदर्भिका

* हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 6
1. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 6
2. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 6
3. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 6
4. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 6
5. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 6
6. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 6
7. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 7
8. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 7
9. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 7
10. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 7
11. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 7
12. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 8
13. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 8
14. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 8
15. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 9
16. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 9
17. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 9
18. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 9
19. हिंदी शब्द-समूह का विकास, डॉ. सत्यव्रत - पृ. 9
20. शब्द विज्ञान, भोलानाथ तिवारी - पृ. 17
21. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 10
22. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 10
23. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 10
23ए. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 10
24. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 10
25. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 10
26. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 11
27. आधुनिक भाषा विज्ञान : डॉ. हणमंत राव पाटिल, पृ. 195
27ए. आधुनिक भाषा विज्ञान : डॉ. हणमंत राव पाटिल - पृ. 196

28. आधुनिक भाषा विज्ञान : डॉ. हणमंत राव पाटिल - पृ. 211
29. हिंदी शब्द-समूह का विकास : डॉ. सत्यव्रत - पृ. 15
30. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 63
31. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 64
32. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 64
33. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 102
34. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 102
35. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 102
36. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 102
37. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 287
38. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 287
39. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 287
40. हिंदी शब्द-समूह का विकास : नरेश मिश्र - पृ. 287
41. शब्द श्री : भोलानाथ तिवारी - पृ. 61
42. शब्द श्री : भोलानाथ तिवारी - पृ. 61

द्वितीय अध्याय

पारिभाषिक, अर्द्ध-पारिभाषिक तथा सामान्य शब्दावली का विवेचन

द्वितीय अध्याय

पारिभाषिक, अर्द्ध-पारिभाषिक तथा सामान्य शब्दावली का विवेचन

2.0 प्रस्तावना

2.1 शब्द और पारिभाषिक शब्द

2.1.2 पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

2.1.3 पारिभाषिक शब्द की रचना

2.2 पारिभाषिक शब्दावली : विकास

2.3 नई संकल्पनाएँ

2.4 विभिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द

2.5 निष्कर्ष

2.0 प्रस्तावना

भाषा की लघुतम, स्वतंत्र और अर्थ की प्रतीति देनेवाली इकाई शब्द है। किसी भाषा के शब्दों को रचना, स्रोत, अर्थ आदि अनेकानेक आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है। उनमें एक महत्वपूर्ण आधार प्रयोग है।

प्रयोग के आधार पर एक ओर बहुप्रयुक्त, अल्पप्रयुक्त, अत्यल्पप्रयुक्त, अप्रयुक्त आदि वर्ग बनाये जा सकते हैं तो दूसरी ओर प्रयोग विषय अथवा प्रयोग क्षेत्र के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए व्याकरण में 'विशेषण', दर्शन में 'द्वैतवाद', साहित्य में 'कथोपकथन', तथा 'काव्यशास्त्र' में 'लक्षणा' आदि इसी श्रेणी के शब्द हैं।

द्विभाषिक, बहुभाषिक नगरीय समाज में और विशेषत: महानगरों में, जहाँ बहुस्तरीय जनों के संपर्क को टाला ही नहीं जा सकता, उनके बीच जो एक भाषा उभरेगी, (वह हिंदी ही क्यों न हो) वह अपने मानक रूप से बहुत कुछ भिन्न होगी और विभिन्न भाषाओं का प्रभाव लिए हुए होगी। बम्बइया हिंदी इसका एक उदाहरण है। इस हिंदी का कुछ न कुछ प्रभाव उन शिक्षितों की भाषा पर भी पड़े बिना न रहेगा जो इसे अपने कार्यालय में दूसरों की

सुकरता (और कदाचित् अपनी भी) के लिए व्यवहार में लाना चाहेंगे।

व्यक्तिभेद से ही इसकी शिथिलता या दृढ़ता का रूप निश्चित होगा। यह व्यक्तिभेद एक तो आंतरिक ढंग का होगा और दूसरे बाह्य ढंग का।

आंतरिक ढंग से तात्पर्य है कि जब किसी भाषा का प्रयोग किसी एक क्षेत्र के निवासी बहुभाषी समाज के बीच होगा, तो उसमें कुछ इस तरह के परिवर्तन होंगे जो उसके आंतरिक गठन को ही प्रभावित करेंगे और बाह्य ढंग वह होगा जब उस भाषा का मूल व्यवहार्ता ही उस क्षेत्र में जाएगा, तो वह जिस भाषा का प्रयोग करेगा उसका व्याकरणिक गठन अपने मूलस्वरूप में बना रहेगा, किंतु संप्रेषण की सुविधा के लिए वह कुछ क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर लेगा। साथ ही यह भी कि व्यक्ति जितना शिक्षित है, उतना ही उसकी भाषा में परिवर्तन कम होगा और व्याकरणिक ढांचा भी उतना ही टूटने से बचा रहेगा। उसकी भाषा पर जो भी प्रभाव होगा, वह बाहरी या ऊपरी होगा, तलगामी नहीं।

अल्पशिक्षित या अशिक्षित समाज में दूसरे शिक्षितों से हिंदी सुनकर भी या सिनेमा, दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि माध्यमों से ग्रहण करके भी हिंदी का जो रूप उभरता है वह मुंबई कुछ इस प्रकार का है : ''काहे को बूम मारता है? तू क्यों खाली-पीली करता है? मैंने तेरे को बोला न ऐसेच् रहना, गाली देना नई, दूसरे की चीज वापरना नई।''

कभी-कभी 'वापरना' जैसे शब्दों को स्थान मिल जाए और इसके बहुप्रचलन का प्रभाव उस व्यक्ति पर भी पड़े जो भले ही बाहर से कहीं इसी देश में हिंदी प्रदेश से आया है और जनसंपर्क में आना चाहता है। कारण यह कि वहाँ भाषा का सरल रूप तो अभिप्रेत रहता है, पर माध्यम के कारण भाषा बोलचाल से हटकर लिखित रूप ले लेती है और लिखित रूप मानक या स्थिर रूप या उसके समीप हुआ करता है। ऐसे समय जब तक क्षेत्रीयता या व्यक्ति वैशिष्ट्य ही न दिखाना हो, तब तक भाषा में आंतरिक परिवर्तन नहीं होता, बाह्य थोड़ा बहुत भले ही हो। संस्कृत में उपसर्ग और प्रत्यय की इतनी प्रचुरता और अर्थवत्ता है कि एक धातु से पचासों शब्द बनाये जा सकते हैं।

भाषाएँ दो प्रकार की होती है- नैसर्गिक और कृत्रिम।

''नैसर्गिक भाषा वह है जो अपने आप निकले और स्वाभाविक रूप से जनता की भाषा हो। कृत्रिम भाषा विज्ञान की भाषा होती है। वह वैज्ञानिक द्वारा बनायी जाती है। जो भाषा चिंतन द्वारा बनायी जाएगी, उसमें ग्रामीणता

का अभाव निश्चित ही रहेगा।'' [1]

दार्शनिक, शास्त्रीय चिंतक अथवा वैज्ञानिक, जीवन और प्रकृति के रहस्यों के विषय में जो सिद्धांत-निर्धारण करते हैं, उनको भाषा में बांधना कठिन होता है। इस कठिनाई का हल करने के लिए वे नई शब्दावली और अभिव्यक्तियों को जन्म देते हैं। भाषा में इस तरह की शब्दावली और अभिव्यक्तियों के प्राचुर्य और आवृत्ति के कारण ही शास्त्रीय और साहित्यिक भाषाओं में भेद उत्पन्न हो जाता है। इन्हीं का विचार प्रस्तुत अध्याय का अभिप्रेत है।

2.1 शब्द और पारिभाषिक शब्द

प्रत्येक भाषा का रूप-विन्यास अलग होता है, इसलिए रूप की दृष्टि से शब्द की व्याख्या भाषा-सापेक्ष होती है।

एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि रचना रूप को शब्द कहते हैं। सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों, पदार्थों, धर्मों और उनके सब प्रकार के संबंधों को व्यक्त करने के लिए शब्दों का उपयोग होता है।

पारिभाषिक शब्द ''वह शब्द है जो किसी विशेष ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है।'' [2]

''पारिभाषिक शब्द वह शब्द या अभिव्यक्ति है, जो मानव की विशिष्ट गतिविधियों या प्रकृति के किसी विशेष पहलू से संबंधित ज्ञान की शाखा के विद्वान् या कुशल व्यक्ति के लिए विशेष महत्व का या मूल्यवान हो।'' [3]

यद्वाधुनिक संकेतशालिस्याटपारिभाषिकम्।

गदाधर भट्टने इसे और भी स्पष्ट रूप से समझाया है-

''तत्राधुनिक संकेत: परिभाषा तथा चार्थबोधकं पदम्
पारिभाषिकं यथा शास्त्रकारादि संकेतित नदीवृद्धयादि पदम्।''

आधुनिक संकेत, परिभाषा तथा अर्थबोधक पद पारिभाषिक कहलाता है। [4]

2.1.2 पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

पारिभाषिक शब्दावली में तीन प्रकार के शब्द मिलते हैं। यथा

1) पूर्ण पारिभाषिक

2) मध्यस्थ और

3) सामान्य

शब्दों का एक वर्ग ऐसा होता है, जो पारिभाषिक अर्थों में प्रयोग में आता है और सामान्य अर्थों में भी, जैसे attachment, operation दावा, अनुमोदन, आपत्ति आदि। यह शब्द समूह भाषा के स्वरूप का अभिन्न अंग होता है, साथ ही अधिकांश शास्त्रीय चिंतन का आधार भी। इस प्रकार के शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं। प्रकरण, परंपरा अथवा आचार्यों द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार वे उन अर्थों को व्यक्त करते हैं।

2.1.3 पारिभाषिक शब्द की रचना :

Chambers Technical Dictionary की भूमिका में एक स्थान पर लिखा है-

``Technical words are infact symbols adopted, adapted or invented by specialists and technicians to facilitate the precise recording of their Ideas." [5]

''पारिभाषिक शब्द वास्तव में विशेषज्ञों और तकनीकज्ञों द्वारा अपने विचारों को ठीक-ठीक लिखने के लिए गृहीत, अनुकूलित या आविष्कृत प्रतीक हैं।'' [6]

जो भी नई वस्तुएँ खोजी अथवा आविष्कृत की जाती हैं या नये पदार्थ सामने आते हैं उनके नाम प्रथम ऋषि, आचार्यों या आप्तों द्वारा तय किये जाते हैं। ''नये भाव या विचार संस्कृति और सभ्यता के विकास से उद्भूत होते हैं।''

''पारिभाषिक शब्द का अर्थ है, जिसकी परिभाषा की गई हो, या जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हो।'' [7]

भाषा की लघुतम, स्वतंत्र और सार्थक ईकाई को शब्द कहते हैं। किसी भाषा के शब्दों को रचना, स्रोत, अर्थ आदि जिन अनेकानेक आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है, उनमें एक महत्वपूर्ण आधार प्रयोग है।

स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्दावली प्रधानत: तीन तरीकों से बनाई जाती है आविष्कार, अनुकूलन, स्वीकरण। इसमें सर्वप्रथम आविष्कार क्रिया का विवेचन कर लेना उचित होगा।

पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं, ''जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति आदि विभिन्न विज्ञानों

या शास्त्रों के शब्द होते हैं तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से परिभाषित होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं।'' [8]

प्रयोग के आधार पर एक ओर तो बहुप्रयुक्त, अल्पप्रयुक्त, अत्यल्पप्रयुक्त, अप्रयुक्त आदि वर्ग बनाये जा सकते हैं, और दूसरी ओर प्रयोग-विषय अथवा प्रयोग-क्षेत्र के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है।

क) पारिभाषिक - वे शब्द जो विभिन्न विज्ञानों और शास्त्रों में ही प्रयुक्त होते हैं तथा जिनको संबद्ध विज्ञान या शास्त्र के प्रसंग में परिभाषित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए व्याकरण में 'प्रविशेषण', दर्शन में 'द्वैतवाद', साहित्य में 'कथोपकथन' तथा काव्यशास्त्र में 'लक्षणा' आदि इसी श्रेणी के शब्द हैं।

ख) अर्द्धपारिभाषिक - इसके अंतर्गत वे शब्द आते हैं जो कभी तो पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त होते हैं और कभी सामान्य शब्द के रूप में। उदाहरण के लिए, व्याकरण में 'क्रिया' पारिभाषिक शब्द है, किंतु 'उनके क्रिया-कलाप' जैसे सामान्य प्रयोगों में यह एक सामान्य शब्द है। ऐसे ही 'वे माया-मोह से ऊपर हैं' जैसे प्रयोग में 'माया' सामान्य शब्द है, किंतु दर्शनशास्त्र में 'माया' एक पारिभाषिक शब्द है या 'रस' काव्यशास्त्र में पारिभाषिक शब्द है, तो 'वे इस तरह की बातों में रस लेने लगे हैं' में सामान्य शब्द।

ग) अपारिभाषिक अथवा सामान्य शब्द - जो शब्द सामान्य बोलचाल में आते हैं तथा कभी भी पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त नहीं होते। उदाहरण के लिए रोटी, कपड़ा, मकान आदि।

पारिभाषिक शब्दावली पर विचार करने वाले प्रथम भारतीय विद्वान् राजेन्द्र लाल मिश्र ने पारिभाषिक शब्दों के छह प्रकार गिनाये हैं।

1) स्रोत के आधार पर : 1. तत्सम, 2. तद्भव, 3. आगत (विदेशी), 4. देशज, 5. संकर (मिश्रित) अथवा परंपरागत - अर्थात् अपनी भाषा-परंपरा में पहले से प्रयुक्त है। गृहीत-दूसरी भाषा से लिए गए, नवनिर्मित नए बनाए गए।

2) रचना के आधार पर : 1. मूल, 2. यौगिक।

यौगिक के अर्थ के आधार पर दो भेद हो सकेत हैं। 1. सामान्य और रूढ़। सामान्य शब्द तो अपना सामान्य

अर्थ देते हैं, किंतु रूढ़ शब्द विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं।

3) प्रयोग के आधार पर : 1. पूर्ण पारिभाषिक - जो केवल पारिभाषिक हों, सामान्य भाषा में प्रयुक्त न होते हों। जैसे- 'अक्षर' जो सामान्य भाषा में 'लेटर' या 'हर्फ़' है, तो भाषाविज्ञान में 'सिलेबल' सामान्य शब्द यदि कभी-कभी पारिभाषिक रूप में प्रयुक्त होता है, तो उसे भी इसी वर्ग में रखना चाहिए।

4) अर्थ की सूक्ष्मता-स्थूलता के आधार पर : 1. संकल्पनाबोधक, 2. वस्तुबोधक।

संकल्पनाबोधक - जो सूक्ष्म संकल्पनाओं, प्रत्ययों या अवधारणाओं को व्यक्त करें। जैसे- अद्वैतवाद, समीकरण, ऊर्जा।

वस्तुबोधक - जो वस्तु को बोधित करें। जैसे- कैल्शियम।

घ) शब्द में पदीय इकाइयों के आधार पर :

इस आधार पर मुख्य प्रकार तीन हो सकते हैं।

एकपदीय - जिसमें एक पद हो। जैसे- धमनी।

द्विपदीय - जिसमें दो पद हों। वनस्पति विज्ञान तथा प्राणिविज्ञान में ऐसे नाम प्राय: मिलते हैं। जैसे- 'आम' के लिए Mangiferre Indica या 'मोर' के लिए Povocristatus. ऐसे नामों में पहला नाम वंश का तथा दूसरा जाति का होता है। दो शब्दों वाले पारिभाषिक शब्द अन्य विज्ञानों में भी हो सकते हैं, किंतु उन्हें प्राय: द्विपदीय नहीं कहते। जैसे- गणित में 'चक्रवृद्धि ब्याज' या भाषाविज्ञान में 'निकटस्थ अवयव'। 3. त्रिपदीय - जिसमें तीन पद हों। ये दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जिनमें पहला शब्द वंश का, दूसरा जाति का तथा तीसरा प्रजाति का होता है। जैसे- मनुष्य के सिर के जूं के लिए Peniculus Humanus Capitis या शरीर के अन्य भागों के जूं के लिए Pediculus Humanus Coporis अथवा आधुनिक मानव वेफ लिए Homo Sapiens तथा एक प्राचीन मानव वेफ लिए Homo Sapiens Meanderthelenis. दूसरे प्रकार के त्रिपदीय पारिभाषिक शब्दों में पहला नाम वंश का, दूसरा जाति का तथा तीसरा अन्वेषक का होता है। जैसे- 'मोर' के लिए Povocristatus Linnaens. तीन शब्दों वाले

पारिभाषिक शब्द अन्य विज्ञानों के भी हो सकते हैं। किंतु इनमें वस्तुतः नाम तीन ही होते हैं।

एक नाम अन्वेषक का जोड़ देने से शब्द चार हो जाते हैं। यदि अन्वेषक किसी पुराने मत का संशोधन हो तो वह नाम कोष्ठक में होता है। जैसे- एक विशेष प्रकार की कोयल के लिए 'ट्रीपाई डैंड्रोसिटा वैगावंडा' (लेथम)'। नामों में पदों की संख्या और भी बढ़ सकती है। जैसे- वंश + जाति + प्रजाति + अन्वेषक + संशोधक + अन्वेषण + संशोधन + वर्ष आदि।

विषय के आधार पर : इस आधार पर हर विज्ञान या शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों को अलग-अलग वर्गों में रखा जा सकता है। जैसे- दर्शन, भाषाशास्त्र, जीव विज्ञान, रसायन आदि। प्रयोगवादी या लोकप्रचलित शब्दों के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग किया जाने लगा है। इसकी मूलभूत बातें ये हैं- क) अपने लोकप्रचलित शब्द-भंडार, उपसर्ग तथा प्रत्यय आदि का सार्थक उपयोग करें, चाहे शब्द ग्रहण करने की समस्या हो, अथवा नए शब्द बनाने की। ख) ऐसे विदेशी, देशज तथा तद्भव शब्द जो खूब चल पड़े हैं, या नए हैं, किंतु जिनके लिए नए शब्द लेने या गढ़ने की आवश्यकता नहीं हैं, वे ले लिए जाएँ। यह लेना अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का भी, अपनी परंपरा के प्राचीन शब्दों का भी तथा किसी अन्य भारतीय भाषा या बोलियों के शब्दों का भी।

ङ) लिया जाने वाला कोई शब्द यदि ध्वनि की दृष्टि से हमारी ध्वनि-व्यवस्था के अनुकूल नहीं है, तो उसे अनुकूलित कर लेना चाहिए। जैसे- academy के लिए अकादमी या टेकनीक के लिए तकनीक।

च) अनिवार्य होने पर अपनी भाषा के उपसर्ग, प्रत्यय, शब्द, धातु या अन्य भाषाओं से गृहीत शब्दों के आधार पर नए शब्द बनाए जाएँ, किंतु यह ध्यान रखा जाए कि उनमें अटपटापन न हो। काफ़ी पारिभाषिक और अर्द्धपारिभाषिक शब्द तो अपने प्रचलित शब्द भंडार से लिए गए हैं। जैसे- तत्सम - अणु, लवण, सचिव, मंत्री, वर्ग, मंडल, परमाणु, ग्रंथि, स्पर्श, संधि, समास, अभ्यास आदि।

तद्‌भव - थाना, थोक, डाक, जाकड़, बिचौलिया, उचैती आदि।

अरबी-फ़ारसी - नामंजूर, नायब, क़ानून, अदालत, दलाल, जिला, दस्तावेज़, मुख्तारनामा, वकालतनामा आदि।

अंग्रेज़ी - कापीराइट, ऑफसेट, प्रेस, टाइप, जेल आदि। अंग्रेज़ी से लिए जाने वाले शब्दों में काफ़ी से हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय हैं। अर्थात् उनका प्रयोग विश्व की कई भाषाओं में होता है, जैसे- रेडियो, राडार, टेलीविज़न, ऑक्सीजन आदि।

इन प्रचलित शब्दों से काम नहीं चला तो काफ़ी नए शब्द संस्कृति तथा अंग्रेज़ी से लिए गए। साथ ही कुछ शब्द अन्य भारतीय भाषाओं- मराठी - झोंपड़पट्टी, गुजराती - नवलिका, बंगला - साजगृह, रूपारोप, उड़िया-गोती, कन्नड़ - प्रतिष्ठान, तमिल - चिल्लर से भी लिए गए हैं।

जहाँ तक समास का प्रश्न है, अधिकांश शब्द **तत्सम + तत्सम** (जैसे- शक्ति संघर्ष Power Contest, भाषा-शिक्षण, घात-कुलक Powerset, यौवनारंभ Pubescence, लोक-चेतना - Public Consciunsness) हैं, किंतु, साथ ही **तत्सम + तद्भव** (जैसे - रक्षा चौकी) **तद्भव + तद्भव** (दोहरा बोरा Double Gunny, गोल नाली Double Valley, गोल धरना Circular Picketing), **तद्भव + तत्सम** (भाड़ा - क्रय Hire-purchase भाड़ा जल) **तद्भव + विदेशी** (दोहरी किलेबंदी, बाहरी हाशिया), **विदेशी + विदेशी** (कमान अफसर = Commanding Officer), **विदेशी + तत्सम** (रसद - विभाग, ज़िलाधीश, आर्डर - पुस्तिका, बीमा - राशि, कानूनी - कार्यवाही), **विदेशी + तद्भव** (पाउडर - छिड़काव), **तत्सम + विदेशी** (निवेदन फ़ार्म Request form, मुद्रा - बाज़ार, सामान्य स्टॉक, मूल दस्तावेज़, पुनर्बीमा) **तत्सम + तद्भव** (प्रतिकारी सट्टा, भावी लेनदार) आदि अन्य प्रकार के भी हैं।

वे **उपसर्ग**, जिनसे नये पारिभाषिक शब्द बनाए गए हैं, प्राय: तत्सम हैं तथा तत्सम शब्दों में ही उन्हें जोड़ा गया है। उदाहरणार्थ- आवंटन, आयुक्त, अधिक्षेत्र, अधिवाक्य, अधिप्रमाणन, अनुक्रेता, अभिकल्पना, अभिलक्षण आदि। यों कुछ शब्द, विदेशी उपसर्गों (बेकब्ज़ा, बेइंदराजी, बेमरम्मती) से भी बनाए गए हैं, किंतु उन्हें प्राय: विदेशी शब्दों में ही जोड़ा गया है। कुछ शब्द ऐसे भी बने हैं, जिनमें उपसर्ग तत्सम हैं, तथा शब्द विदेशी, जैसे-अधिबीमा (Over ensurance).

प्रत्ययों की सहायता से सर्वाधिक शब्द बने हैं। इन प्रत्ययों में तत्सम (जैसे- अकृतता Nullity, प्रशासनिक), तद्भव (डूबंत Bad, Bad डूबंत ऋण), तथा विदेशी (जैसे- मुजराई Set off) तो हैं, किंतु देशज नहीं। यों तो प्राय: तत्सम शब्द के साथ तत्सम प्रत्यय, तद्भव के साथ तद्भव प्रत्यय तथा विदेशी के साथ विदेशी आए हैं, किंतु

अपवादत: संकर शब्दों की भी रचना हुई है। जैसे- गुप्तचरी, गैसीय, अपीलनीय / अपीली (Appellate). कुछ प्रत्यय अंग्रेज़ी से भी लिए गए हैं, जैसे- इम (Eme), स्वनिम (Phoneme), रूपिम (Morpheme), लेखिम (Grapheme), ई (ee), परेषिती (Consignee), परित्यक्ति (Abodonee), या अंग्रेज़ी के आधार पर बनाए गए हैं, इसी (Ics), भौतिकी (Physics) भाषिकी (Linguistic's). इसके आधार पर काफी शब्द बने हैं : वाष्पित्र (Boiler), साधित्र (Appliance), निष्कासित्र (Ejector), वातलेखित्र (Aerograph), जनित्र (Generator). संस्कृत शब्दों से कुछ नए प्रत्यय भी बनाए गए, जैसे- 'धातु' से 'ध' हटाकर 'आतु' : तेजातु (Radium), स्फट्यातु (Aluminium), या वाति (हवा) से 'व' हटाकर 'आति' शिथिराति (Neon), मंदाति (Argon), भूयाति (Nitrogen).

कुछ शब्द, अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदीकरण द्वारा भी बनाए गए हैं : Academy - अकादमी, Parabola - परवलय, Technic - तकनीक, Tragedy - त्रासदी, Comedy - कामदी। कुछ शब्दों में अंग्रेज़ी का आधार पूरा न होकर थोड़ा है : Intonation - अनुतान, Parapsychology - परा मनोविज्ञान।

यों तो नए शब्दों के निर्माण में शब्दों द्वारा व्यक्त संकल्पना पर ही विशेष ध्यान रखा गया है, किंतु उन शब्दों के शब्दानुवाद भी कर दिए गए हैं, जिनके अनुवाद से प्राप्त शब्द से संकल्पना के व्यक्त होने की संभावना थी। उदाहरणार्थ : Redtapism - लालफीताशाही, Blackmarket - कालाबाज़ार, Rightist - दक्षिणपंथी - Leftist - वामपंथी, Fifth Columnist - पंचमांगी।

शब्दों के बनाने में प्राय: उच्चारण की सरलता का ध्यान रखा गया है। भाषा में स्वीकृत संधि नियम इसी प्रक्रिया विश्लेषक हैं। उदाहरण-

'दवा' के लिए औषधि।

औषधि + उन्माद = औषधोन्माद।

सचिव + आलय = सचिवालय।

मंत्री + आलय = मंत्रालय।

Multi Syllable = बहुअक्षर

Multi Purpose = बहुद्देशीय

2.2 पारिभाषिक शब्दावली : विकास

वस्तुत: हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली के विकास की तीन धाराएँ हैं। एक का संबंध भाषा के आधुनिकीकरण से है, जिसमें अंग्रेज़ी शब्दों को या तो प्राय: ज्यों का त्यों (जैसे- राडार), या उन्हें 'ध्वनि' की दृष्टि से अनुकूलित करके (जैसे- अकादमी), या उनका अनुवाद करके (जैसे- काला बाज़ार) या उनका 'लगभग' अनुवाद (जैसे- 'जीरो आवर' के लिए 'शून्य काल' न कि 'शून्य घंटा') करके या उनके लिए स्वतंत्रत: शब्द बनाकर लिया गया है।

इंफिल्ट्रेटर = घुसपैठिया

इंस्टैब्लिशमेंट = प्रतिष्ठान (कन्नड़)

स्मगलर = तस्कर

संस्कृत से लिए गए कुछ शब्दों में पुराना अर्थ निकालकर नया अर्थ भरा गया है। जैसे- आकाशवाणी, मूलत: देववाणी या अब रेडियो का पर्याय बन गया है। उदाहरणार्थ, अंग्रेज़ी में धातुविज्ञान में Metal आयुर्विज्ञान में Element, भाषाविज्ञान में Root है, तो हिंदी में तीनों में धातु है। इसी प्रकार अंग्रेज़ी में तर्कशास्त्र में Concept है, तो विधि में Credit, किंतु हिंदी दोनों में 'प्रत्यय'।

2.3 नई संकल्पनाएँ :

नई संकल्पनाओं एवं वस्तुं आदि से संबद्ध पारिभाषिक शब्दों को इन स्रोतों से पूरा किया जाता है।

क) प्राचीन भाषाओं से संबद्ध शब्द : तस्कर (स्मग्लर), मंत्री (मिनिस्टर) आदि। ऐसे शब्दों में, कुछ में तो नया अर्थ भरा गया है (जैसे- आकाशवाणी), कुछ के अर्थ को सीमित (शब्द) कर दिया गया है।

ख) आम बोलचाल की भाषा में प्रचलित (या निर्मित) शब्दों को लेकर। जैसे- दलबदलू (डिफेक्टर), घुसपैठिया (इनफ़िल्ट्रेटर) तथा फिरौती आदि।

ग) प्रांतीय भाषाओं के शब्द ग्रहण करके - उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी में अमेच्योर, ग्रीनरूम, इस्टैब्लिशमेंट (औत्साहिक), साजगृह, प्रतिष्ठान, तेलुगु, बंगला तथा कन्नड़ से लिए गए हैं।

घ) विदेशी भाषाओं से शब्द ग्रहण करके : किसी संकल्पना या पदार्थ के लिए अपनी भाषा में पारिभाषिक शब्द न होने पर विदेशी भाषाओं से भी शब्द ग्रहण कर लिए जाते हैं। जैसे- वाट, वोल्ट, मीटर, लीटर, पेट्रोल, रेडियो, विटामिन, एक्सरे, बोनस, बजट, बुलेटिन, फोरम तथा ग्लूकोस आदि। कभी अपनी भाषा के अनुकूल बनाकर भी - (जैसे- त्रासदी (Tragedy), अकादमी (Academy), तकनीक (Technique) तथा अंतरिम (Interim) आदि)। हिंदी में यों तो तत्सम (जैसे- अ, अति, अधि, अनु, अप, दु:, प्र, प्रति आदि) तद्भव (जैसे- दु, नि, पर आदि) तथा विदेशी (जैसे- बद, बे, ला, बा दि) तीन प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है।

अदह = Incombatial

अवैतनिक = Without pay

अराजपत्रित = Non-gazetted

अतिचालकता = Superconductivity

अतिक्रमण = Encroachment

अतिसंदाय = Overpayment

अधिगम = Approach

अधिसूचना = Notification

अधिकोषण = Banking

अधिनायक = Dictator

अनुसीमन = Moderation

अनुक्रिया = Response

अनुबंध = Contract

अनुकल्प = Alternative

अपसामान्य = Abnormal

अपमार्जक = Detergent

अपमिश्रण = Adulteration

अभिकल्प = Design

अभिकर्ता = Agent

अभियाचना = Demand

अभिस्वीकृति = Acknowledgement

अवप्राक्कलन = Underestimate

अनिर्धारित = Underassed

आवर्ती = Recurring

आप्रवासी = Emigrant

उपधारा = Sub-section

उपजात = Pre-product

उपमंत्री = Deputy minister

उपग्रह = Insat

दुर्विनियोग = Misappropriation

निर्जलित = Dihydratid

निर्वात = Vaccum

परिमाप = Perimeter

परिकल्पना = Hypothesis

परिसंवाद = सिंपोजियम

परिवादी = कम्प्लेनैट

प्रभाग = डिविजन

प्रभार = चार्ज

शिक्षण = प्रशिक्षण

प्रवर्ग = कैटेगरी

प्रतिजैविक = (एंटिबायोटिक)

प्रति हस्ताक्षर = काउंटर साइन

प्रतिनियुक्ति = डेप्युटेशन

विनिर्णय = रुलिंग

वियोजित = डिटैण्ड

संवेग = इमोशन

संतृप्ति = सैच्युरेशन

संप्रेक्षण = आब्ज़र्वेशन

सक्षम = कम्पीटेंट

सक़ब्जा = इन पजेंशन

सजातीय = कॉगनेट

सशर्त = कंडिशनल

प्रत्यय - हिंदी में तत्सम (जैसे- ता, आलु, जीवी, इक, अनीय, इमा आदि)

तद्भव जैसे- आई, आहट, आइन, एरा आदि

देशज जैसे- अक्कड़, आटा, आदि तथा

विदेशी जैसे- आना, इपत, मन्द, आदि, चार प्रकार के प्रत्यय मिलते हैं।

पारिभाषिक शब्दों की रचना में देशज प्रत्ययों का प्रयोग नहीं हुआ है तथा तद्भव और विदेशी प्रत्ययों के आधार पर भी कुछ ही शब्द जैसे- दीवानी कुहासिया बने है। अधिकांश पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में उपसर्गों, की भांति ही तत्सम प्रत्ययों का ही प्रयोग किया गया है। यहाँ कुछ प्रमुख प्रत्ययों के आधार पर रचित पारिभाषिक शब्दों के कुछ और उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

पंजीयन - रजिस्ट्रेशन

सारिणीयन - टेबुलेशन

ढलाई - फाउण्ड्री ढलाई वृत्ति का फाउण्ड्री वाले

मात्रात्मक - क्वांटिटेटिव

गुणात्मक - क्वालिटेटिव

बहुलयात्मक - पोलिकेमिक

यांत्रिक - सेयलिकल

आंचलिक - लोकलरीजनल

वैकल्पिक - आफ्शनल

बहुवर्णिक - पोलिक्रोमेटिक

भाषिक - लिंग्विस्टिक

अकादमिक - एकैडमिक

परिचारिका - होस्टेस

गारंटित - गैरंटीड

फोकसित - फोकस्ड

क्लोरीनित - क्लोरीनेटेड

आवंटित - डिस्ट्रिब्यूटिड

अन्तर्राज्यीय - इंटरस्टेट

गोपनीय - कानफिडेंशियल

अपरिवर्णनीय - अनअवायडेबल

फिरौती - रैनसम

प्रचालक - आपरेटर

गणक - काउंटर स्फोरर

लिपिक - क्लर्क

प्रतिवेदक - रिपोर्टर

संवीक्षक - स्क्रूटिनाइज़र

परावर्तक - रिपलैक्टर

चालक - ड्राइवर

पुनर्वेधीकरण - रिवैलीडेशन

निरस्त्रीकरण - डिसअर्मामेंट

परिबद्धकरण - इम्बाउडिंग

टाइपकार - टाइपिस्ट - टंकक

सहकार - को ऑपरेशन

अनुकूलतम - आप्टिमम, अर्थशास्त्र

वरिष्ठतम - सीनियर मोस्ट

कनिष्ठतम - जूनियर मोस्ट

उच्चतम - हाइएस्ट

इसके अतिरिक्त पारिभाषिक शब्दों की रचना में कुछ शब्द भी प्रत्ययों के कारण कार्य करते हैं। जैसे-

अग्निसह - फायरप्रूफ

जलसह - वाटरप्रूफ

परजीवी - पैरासाइट

विसमीभवन - डिस्मीमिलेशन

समास - समास के द्वारा भी काफी शब्दों का निर्माण किया गया है। इनमें मुख्यत: तत्सम + तत्सम हैं, किंतु अन्य प्रकार के भी उदाहरण मिल जाते हैं।

(क) तत्सम + तत्सम = गाथागीत बैलेड, लोकसभा, नगरपालिका राज्यपाल, मंत्रि मंडल।

(ख) तत्सम + तद्भव तथा तद्भव + तत्सम = रक्षा चौकी, ढलाई मृत्ति, फाउंड्रीक्ले - भाड़ा क्रय।

(ग) तत्सम + विदेशी तथा विदेशी + तत्सम = प्रत्यक्ष वारिस (अपेरेंटहैयर) अनुसूचित बैंक मौसमविज्ञानी - बागबानी निरीक्षक, हार्टिकल्चर इंस्पेक्टर, सामान्य वार्ड, इंजीनियरी संकाय, हवाई पत्र, ज़िलाधीश, जोखिम बिक्री, रिस्कसेल।

(घ) तद्भव + तद्भव = पहाड़ - भत्ता हथकरघा, घुसपैठ, दलबदलू

(ङ) तद्भव + विदेशी = बचतस्कीम, तिरछा (शॉट कैटिड शॉट) चपटी तश्तरी, फ्लैट - प्लेटर)

(च) अपवादत: तत्सम + विदेशी + तद्भव = (अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डा)

(छ) तत्सम + विदेशी + विदेशी = (केन्द्रीय बस टर्मिनस) आदि कुछ अन्य प्रकार के भी उदाहरण मिल जाते हैं।

संधि - पारिभाषिक शब्दों की रचना में संधियों का भी प्रयोग हुआ है। इनमें संस्कृत की संधियां ही मुख्यतः हैं।

अधीश - जिलाधीश

अवगुण - गुणावगुण - मैरिट

अनुशासक - कुलानुशासक - प्रॉक्टर

नियुक्ति - रिलीज

अधिकार - मताधिकार

अत्युपलब्धि - ओवर अमीपमेंट

निर्वसीमती - नॉन टैस्टामेंट्री

अभ्यावेदन - रिप्रैज़ेंटेशन

पुनर्वधीकरण - रिविलिडेशन

निजर्मित - स्टप्लाइज़र

यांत्रिक - मेकानिकल

अनुपातिक - प्रोपोर्शनल

वार्षिकी - ईयरली

ध्वनि साम्य पर बनाये गये शब्द

अंग्रेज़ी के शब्दों के समानार्थक शब्द ध्वनि साम्य पर भी गढ़ लिये जाते हैं।

अ) अपनी भाषा की धातु से निर्मित -

Survey - सर्वेक्षण (दै.जा.पृ. 12. 2 मार्च, 2002)

Interim - अंतरिम (जनसत्ता, पृ. 8, 18 अप्रैल, 2003)

ब) अंग्रेज़ी के शब्दों को ही अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल बना देना-

Academy - अकादमी (हिंदी मिलाप, पृ. 3, 16 दिसम्बर, 2002)

Technique - तकनीक (दलाल स्ट्रीट, पृ. 10, 8-12 मई, '95)

Party - पार्टी (गृहलक्ष्मी, पृ. 132, जनवरी, '98)

Agenda - एजेंडा (दै.जा. मुख पृष्ठ, 10 जनवरी, 2002)

Operation - ऑपरेशन (स्वतंत्र वार्ता साप्ताहिकी, मुख पृष्ठ, 14 जून, 2003)

Vote - वोट (स्वतंत्र वार्ता, पृ. 9, 13 जुलाई, 2002)

Airmail - एअरमेल (स्वतंत्र वार्ता, पृ. 3, 12 मार्च, 2001)

Airconditioning - एयरकंडीशनिंग (जनसत्ता, पृ. 5, 13 अप्रैल, 2003)

Conductor - कंडक्टर (हिंदी मिलाप, 13 जनवरी, 2003)

Olympic - ओलंपिक (क्रिकेट भारती, पृ. सं. 36, मई,1995)

Current - करंट (गृहलक्ष्मी, पृ. 14, जनवरी, '98)

Card - कार्ड (वनिता, पृ. 98, अक्तूबर, 2002)

Gazzette - गजट, राजपत्र (जनसत्ता, पृ. 3, 2 मई, 2002)

Guarantee - गारंटी (गृहलक्ष्मी, पृ. 18, मार्च, 2002)

Gas - गैस - (वनिता, पृ. 123, अक्तूबर, 2002)

Chocolate - चाकलेट (वनिता, पृ. 100, अक्तूबर, 2002)

Cheque - चेक (वार्ता, मुख पृष्ठ, 28 मार्च, 2003)

Tyre - टायर (दै.जा.पृ. 3, 21 अप्रैल, 2003)

Technology - टेक्नॉलजी (दै.जा.पृ. 7, 22 मार्च, 2003)

Tennis - टेनिस (स्वतंत्र वार्ता, पृ. 11, 15 जून, 2003)

Train - ट्रेन (स्वतंत्र वार्ता, मुख पृष्ठ, 27 जनवरी, 2002)

Makeup - मेकअप (गृहलक्ष्मी, पृ. 25, जून '98)

Cinema - सिनेमा (फिल्मी दुनिया, पृ. 8, जून '95)

Sex - सेक्स (फिल्मी दुनिया, पृ. 7, जून, '95)

Station - स्टेशन (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 132, जनवरी, '98)

Honeymoon - हनीमून (गृहशोभा, पृ. 75, मार्च '95)

Star - स्टार - (फिल्मी दुनिया, पृ. 13, 13 जून, '95)

2.4 विभिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द :

प्राय: देखा गया है कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो एक अर्थ के अनेक अर्थ बतलाते हैं, जिनकी अलग-अलग क्षेत्रों में अलग भूमिका या संदर्भ के अनुसार शब्दों के अर्थ बनते हैं।

जैसे- किसी भी 'प्रधान' के लिए 'सभापति' का प्रयोग कर लिया जाता है। आज किसी भी सभा के प्रधान के लिए सभापति से काम चल सकता है, पर उसका अर्थ विकास सभी स्थलों के प्रधान के लिए समुचित हो गया है-

President - देश के प्रधान के लिए या **राष्ट्रपति** के लिए प्रयुक्त होता है।

* सार्वजनिक सभा के प्रधान के लिए **सभापति** के रूप में President का प्रयोग होता है।

* राज्य परिषद के प्रधान के लिए **प्रधान परिषद** शब्द का प्रयोग होता है।

इस प्रकार अंग्रेज़ी के शब्द के द्वारा जो भ्रम उत्पन्न हो जाता है, वह हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली से मिट जाता है। अन्य विभागों के प्रधान के लिए देखिए-

Chairman - नगरपालिका तथा जिलाबोर्ड का प्रधान Chairman या **अध्यक्ष**।

किसी भी लिमिटेड कंपनी का प्रधान **सभापति** होता है।

Speaker - लोकसभा का प्रधान Speaker या **अध्यक्ष** कहलाता है।

सभापति अंग्रेज़ी के दो शब्दों के लिए दो भिन्न स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है-

सभापति : Chairman - किसी लिमिटेड कंपनी का प्रधान।

President - किसी सार्वजनिक सभा का प्रधान

दूसरी ओर **अध्यक्ष**

Chairman - नगरपालिका का प्रधान

Speaker - लोकसभा का अध्यक्ष

इस संबंध में एक और शब्द गवर्नर पहिले प्रान्त का प्रधान था अब राज्य का। अंग्रेज़ी शब्द में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, पर हिंदी में राज्य के प्रधान होने के नाते राज्यपाल चलाया गया।

Attachment - के लिए नत्थी, संलग्नता, आसक्ति।

Case - के लिए विषय, प्रसंग, अवस्था, स्थिति, मामला, मुकदमा, अभियोग जैसे शब्द निश्चित किये गये।

अंग्रेज़ी के अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द :

Legislative Assembly - विधानसभा

Meeting - सभा, बैठक

House of Commons - लोकसभा

Council of State - राज्यसभा

All India Congress Committee - अखिल भारतीय महासभा

सूक्ष्म अर्थ प्रकट करने वाले अंग्रेज़ी शब्दों के स्थान पर हिंदी शब्द :

रक्षा-विभाग के अंतर्गत Dismiss के लिए '**विसर्जन**' और Disperse के लिए '**वियोजन**' बनाना पड़ा। इसी प्रकार **हमले** से संबंधित अंग्रेज़ी में चार शब्द हैं,

Attack - आक्रमण

Aggression - हमला, ध्वनि साम्य पर

Invasion - चढ़ाई

Charge - धावा

भौतिकशास्त्र में 'हीट' के लिए 'ऊष्मा' और 'टेम्परेचर' के लिए 'ताप' बनाने पड़े, जिसके लिए बहुप्रचलित शब्द तापक्रम को छोड़ना पड़ा।

अंग्रेज़ी शब्दों में ही प्रत्यय, उपसर्ग आदि लगाकर बनाना :

Registered - रजिस्ट्रीकृत

Censorship - सेंसरी

Shareholder - शेयरधारी

Cylindrical - सिलिंडराकार

बहुप्रचलित उर्दू शब्दों का स्थान :

Bureaucracy - दफ्तरशाही

Candidate - उम्मीदवार

Community - बिरादरी

Land Revenue - मालगुजारी

Drill - कवायद

Mark - निशान

Law - कानून

देश की सांस्कृतिक परिपाटी का ध्यान रखते हुए कुछ प्रचलित अंग्रेज़ी के शब्दों के साथ-साथ कालांतर में हिंदी शब्द भी चलाये जा रहे हैं :

Act	एक्ट	अधिनियम
Bill	बिल	विधेयक

Gazette	गजट	राजपत्र
Syndicate	सिंडीकेट	अभिपद
Veto	वीटो	रोध अधिकार
Platoon	पलटन	गुल्म
Company	कंपनी	गण
Battalion	बटालियन	वाहिनी

इस भांति विभिन्न प्रणालियाँ हैं, जिनके द्वारा शब्दों का आगमन आज प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में देश की विभिन्न संस्थाओं, लेखकों, भाषाविदों एवं समाचार-पत्रों के माध्यम से हिंदी के भंडार में हो रहा है। जैसे `Appendix' के लिए 'अनुक्रमणिका' बनाया गया, किंतु आज उसके स्थान पर परिशिष्ट ही अधिक चलता है।

आज हिंदी केवल राष्ट्रभाषा, राजभाषा या संपर्क भाषा ही नहीं, देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली महत्वपूर्ण कड़ी भी है। नवीनतम विचारों, धारणाओं, वैज्ञानिक, तकनीकी उपलब्धियों को सहज ही अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी को लचीला बनाना अनिवार्य हो गया। इसीलिए शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में एक ही मूल शब्द से अनेक अलग-अलग अर्थों को अभिव्यक्ति किया गया है।

उदाहरण के लिए :

सूचना, अधिसूचना

सूचना : Notice

उदा : टेंडर आमंत्रित करने के लिए यह सूचना दी जा रही है।

(उदा : हिंदी मिलाप, पृ. 3, 4 अगस्त, 2002)

अधिसूचना : Information

उदा : चुनाव आयोग की अधिसूचना पर सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए।

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, पृ. 2, 13 जुलाई, 2002)

सूची : List, inventory

शब्दों व नामों आदि की तालिका 'सूची' कहलाती है।

उदा : पाक की अपराधियों की सूची में आडवाणी का नाम भी शामिल?

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, मुख पृष्ठ, 31 जनवरी, 2002)

अनुसूची : Schedule

अनुसूची मुख्यत: वह सूची कहलाती है, जो किसी मुख्य या विवरणात्मक ग्रंथ के अंत में परिशिष्ट के रूप में लगी रहती है और जिसमें कोष्ठकों, स्तंभों आदि के रूप में कोई ऐसी सूचना रहती है, जिसका उस ग्रंथ या लेख में साधारण उल्लेखमात्र रहता है। ऐसी अनुसूची में गिनाई जाने वाली चीजों या नामों के संबंध में कुछ विशिष्ट विवरण या स्पष्टीकरण भी रहते हैं।

उदा : संविधान ने भारत की कितनी भाषाओं को समान स्थान दिया है और राष्ट्रभाषा माना है यह हम संविधान के अंत में दी गई आठवीं 'अनुसूची' को देखकर जान सकते हैं।

(उदा : हिंदी मिलाप, पृ. 8, 14 सितम्बर, 2002)

2.5 निष्कर्ष :

निष्कर्ष यह निकलता है कि विश्लेष्यता हिंदी की शक्ति है। नये शब्द-निर्माण करने के लिए और उनका ठीक से प्रयोग करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली एक सहायक शक्ति है। यह क्षेत्र विज्ञान और तकनीक का क्षेत्र होता है। यह भी देखा गया है कि अंतर्राष्ट्रीय रूप में प्रयुक्त होने वाले नए और गढ़े गए पारिभाषिक शब्द हिंदी (और दूसरी भारतीय भाषाओं) में सामान्यत: उसी रूप में अपना लिए गए जिस रूप में उनका प्रयोग अंग्रेज़ी में होता है। इनका आधार है वैज्ञानिकों की सहायता से बनी शब्दावली है। इसे पत्रकारिता ने प्राय: स्वीकारा है।

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए उत्तरदायी वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अस्तित्व को कुछ वर्गों के शब्दों के रूप में व्यक्त करने की चेष्टा की है और परिभाषा के रूप में उन्हीं वर्गों का उल्लेख किया है। सामान्य भाषा के जिन शब्दों को ऊपर उठाकर पारिभाषिक शब्दों के रूप में ग्रहण कर

लिया जाता है, उनमें प्रयोग के क्रमश: आर्थी शिथिलता का लोप हो जाता है। शास्त्र और विज्ञान की भाषा में पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता उनकी प्रगति के अनुरूप निरंतर बढ़ती रहती है।

ज्यों-ज्यों ज्ञान-विज्ञान के चरण आगे बढ़ते हैं, उनकी नई उपलब्धियों को मूर्ति रूप देने के लिए पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता पड़ती है।

पारिभाषिक शब्द का जन्म एक सीमित बौद्धिक वर्ग में होता है और वह एक खास सीमा के नीचे या बाहर कभी नहीं जाता, और वह सीमा होती है ज्ञान एवं बौद्धिकता के प्रसाद की सीमा। इस दृष्टि से पारिभाषिक शब्दावली बौद्धिक तंत्र की उपज है और जहां तक इस तंत्र की सीमा है वहीं तक उसका प्रसार होता है, हो सकता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर एक सामान्य निष्कर्ष यह निकाल सकते हैं कि विशेषीकृत और विशिष्ट बौद्धिक लेखन पारिभाषिक शब्दावली के अभाव में संभव नहीं होता, जहाँ जितनी अधिक विचारात्मकता और बौद्धिकता अपेक्षित होगी वहाँ उतना ही अधिक पारिभाषिक शब्दों का सहारा लेना पड़ेगा। पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका विस्तार और जन समूह तक ले जाने का कार्य संपन्न होता है। यहाँ आधुनिक पत्रकारिता में हो रहा है।

संदर्भिका

1. पारिभाषिक शब्दावली कुछ समस्याएँ, भोलानाथ तिवारी, महेंद्र चतुर्वेदी, पृ. सं. 14)

2. सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. गोपाल शर्मा, पृ. सं. 8)

3. सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. गोपाल शर्मा, पृ. सं. 8)

4. सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. गोपाल शर्मा, पृ. सं. 10)

5. सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. गोपाल शर्मा, पृ. सं. 10)

6. पारिभाषिक शब्दावली कुछ समस्याएँ, भोलानाथ तिवारी, महेंद्र चतुर्वेदी, पृ. सं. 9)

7. पारिभाषिक शब्दावली कुछ समस्याएँ, भोलानाथ तिवारी, महेंद्र चतुर्वेदी, पृ. सं. 17)

8. पारिभाषिक शब्दावली कुछ समस्याएँ, भोलानाथ तिवारी, महेंद्र चतुर्वेदी, पृ. सं. 17)

उपयोग की गई पत्र-पत्रिकाएँ

पुस्तकें

1. हिंदी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों का भाषा तात्विक अध्ययन - लेखक - डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया - प्रकाशक - हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
2. पारिभाषिक शब्दावली कुछ समस्याएँ, भोलानाथ तिवारी, महेंद्र चतुर्वेदी, शब्दकार, 159, गुरू अंगदनगर (वैस्ट), दिल्ली - 110 092.
3. प्रशासनिक शब्दमालाएँ, शिवनारायण चतुर्वेदी, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
4. सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. गोपाल शर्मा, 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट), दिल्ली - 110 092.

समाचार-पत्र

1. दैनिक जागरण - संपादक, संजय गुप्ता, 501, आईएनएस बिल्डिंग रफी मार्ग, नई दिल्ली।
2. जनसत्ता - संपादकीय सलाहकार प्रभाष जोशी, 9-10, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली।
3. डेली हिन्दी मिलाप - विनयवीर, कट्टलमंडी, मोजमजाही मार्केट, हैदराबाद - 500 001.
4. स्वतंत्र वार्ता - स्थानीय संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल, एजीए पब्लिकेशंस, प्लांट नं. 396, लोअर टैंक बंड, हैदराबाद - 500 080.

पत्रिकाएँ

1. दलाल स्ट्रीट - 105, श्रेयस बिल्डिंग, न्यूलिंग रोड, मोजिनिस फैक्टरी के. पीछे, अंधेरी (प), मुंबई - 400 058.
2. गृहलक्ष्मी - डायमंड मैगजिन, एच.ओ., X-30, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस II, नई दिल्ली, 20.
3. क्रिकेट भारती - ए-7, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, मुखर्जी नगर, दिल्ली - 110 009.
4. वनिता - दिल्ली, ए-146, पहली मंजिल, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली - 110 024.
5. गृहशोभा - दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली - 110 055.

तृतीय अध्याय

संकर शब्दावली : रूपरचना और ग्रहण

तृतीय अध्याय

संकर शब्दावली : रूप रचना और ग्रहण

3.0 प्रस्तावना

3.1 संकर शब्द : रूप-रचना प्रक्रिया

3.1.1 संकर शब्द की परिभाषा

3.1.2 रूप-रचना प्रक्रिया

3.2 स्त्रोतगत विवेचन

3.2.1 खेल-कूद पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.2.2 पारिभाषिक पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.2.3 व्यावसायिक पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.2.4 विज्ञान पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

3.3 संकर शब्दावली का स्त्रोतगत विवेचन

3.3.1 अंग्रेज़ी + देशज

3.3.2 संस्कृत + देशज

3.3.3. उर्दू + देशज

3.3.4 संस्कृत + देशज

3.3.5 देशज + संस्कृत

3.3.6 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.3.7 उर्दू + संस्कृत

3.3.8 उर्दू + अंग्रेज़ी

3.3.9 संस्कृत + उर्दू

3.3.10 अंग्रेज़ी + उर्दू

3.3.11 देशज + अंग्रेज़ी

3.4 फिल्म पत्रकारिता के संदर्भ में संकर शब्दावली

3.4.1 संस्कृत + अंग्रेज़ी

3.4.2 अंग्रेज़ी + देशज

3.4.3 उर्दू + अंग्रेज़ी

3.4.4 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.4.5 अंग्रेज़ी + उर्दू

3.4.6 देशज + अंग्रेज़ी

3.4.7 संस्कृत + उर्दू

3.4.8 उर्दू + संस्कृत

3.4.9 देशज + संस्कृत

3.4.10 देशज + उर्दू

3.5 व्यावसायिक पत्रकारिता में संकर शब्दावली

3.5.1 अंग्रेज़ी + देशज

3.5.2 देशज + अंग्रेज़ी

3.5.3 संस्कृत + अंग्रेज़ी

3.5.4 देशज + संस्कृत

3.5.5 संस्कृत + देशज + संस्कृत

3.5.6 उर्दू + अंग्रेज़ी

3.5.7 अंग्रेज़ी + उर्दू

3.5.8 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.5.9 संस्कृत + देशज

3.6 विज्ञान पत्रकारिता में संकर शब्दावली

3.6.1 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.6.2 संस्कृत + उर्दू

3.7 पारिवारिक पत्रकारिता में संकर शब्दावली

3.7.1 संस्कृत + उर्दू

3.7.2 देशज + उर्दू

3.7.3 देशज + संस्कृत

3.7.4 संस्कृत + अंग्रेज़ी

3.7.5 अंग्रेज़ी + संस्कृत

3.7.6 देशज + अंग्रेज़ी

3.7.7 अंग्रेज़ी + देशज

3.8 निष्कर्ष

3.0 प्रस्तावना

शब्द स्तर पर हिंदी पत्रकारिता में हिंदी की प्रयुक्तियों में दो प्रक्रियाएँ अपनाई गयी हैं। एक तो रूपरचना के द्वारा हिंदीकरण की प्रक्रिया और इसका संकर शब्दों का प्रयोग। यह प्रक्रिया सभी विषय-क्षेत्रों, जैसे- खेलकूद पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता, व्यावसायिक पत्रकारिता, पारिवारिक पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता में देखने को मिलती हैं। जब विभिन्न भाषाओं से शब्दों का प्रयोग हिंदी के वाक्यों के बीच किया जाता है तब ये शब्द हमें अपरिचित या अटपटे नहीं लगते बल्कि एक नये शब्द निर्माण प्रक्रिया से गुजरते मिलते हैं, जो भाषा को समझने में सहायक हैं। हिंदी पत्रकारिता ने इन शब्दों को अपनाकर उसे हिंदी का ही एक अंग बना लिया। प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न भाषाओं से जुड़े शब्दों को दर्शाया गया है।

3.1 संकर शब्द : रूप-रचना प्रक्रिया

3.1.1 संकर शब्द की परिभाषा :

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, ''दो भाषाओं के तत्वों अर्थात् शब्द, प्रत्यय, उपसर्ग के योग से बने शब्दों को संकर शब्द कहते हैं।''[1]

इस विषय में डॉ. पं.आ. वारन्निकोव का मत है कि "संकर शब्द उन शब्दों को कह सकते हैं, जिनके अवयवों का संबंध व्युत्पत्ति की दृष्टि से भिन्न शब्द शास्त्रीय वर्गों से हैं।"[2]

इस वर्ग में वे शब्द आते हैं, जिनके अवयवों का संबंध व्युत्पत्ति की दृष्टि से भिन्न शब्द शास्त्रीय वर्गों से है। ये शब्द दो या दो से अधिक भाषाओं के तत्वों अथवा शब्द-समूह के भाषा-वैज्ञानिक वर्गों के दो या दो से अधिक वर्गों के तत्वों से मिलकर बने होते हैं।

उदाहरण :-

1. अरबी + फारसी

   इत्र + दान = इत्रदान

2. फारसी + अरबी

   बे + हाल = बेहाल

3. फारसी + अरबी = फारसी

   बे + मदद + गार = बेमददगार

4. अंग्रेज़ी + हिंदी (देशज)

   डॉक्टर + ई = डॉक्टरी

5. अरबी + फारसी

   जेल + खाना = जेलखाना।

सामान्यत: सभी विद्वानों ने भाषा-अध्ययन के अंतर्गत किसी न किसी संदर्भ में 'संकर' शब्दों का सामान्य वर्णन किया है।

कामता प्रसाद गुरु ने, हिंदी शब्द समूह का व्युत्पत्तिपरक विश्लेषण करते समय संकर वर्ग का विभेद किए बिना शब्द निर्माण पद्धति के विवेचन में वंशगति की दृष्टि से परस्पर भिन्न शब्दों के असंख्य संयोगों की ओर संकेत किया है।

3.1.2 रूप-रचना प्रक्रिया :

पाठकों को, संदेश को समग्र रूप से अवगत कराने के लिए विदेशी स्रोत, विशेषकर अंग्रेज़ी भाषा की शब्दावली के साथ हिंदी के उपसर्गों, प्रत्ययों का प्रयोग करके उन्हें हिंदी की प्रकृति में ढाल लिया जाता है। रूपरचना में यह विधान विदेशी शब्दों का हिंदीकरण कर देता है। ऐसे रूपगत परिवर्तनों से कहा जा सकता है कि हिंदी ने अंग्रेज़ी शब्दों को अपना लिया है और अपनी रूपरचना संबंधी नियमावली को अंग्रेज़ी शब्दों पर लागू करके उन्हें हिंदी का ही एक अंग बना लिया है। यह प्रक्रिया सभी विषयों के क्षेत्रों में परस्पर सभी स्रोतों की शब्दावली के साथ देखी जा सकती है।

इन उपर्युक्त दोनों प्रवृत्तियों से निर्मित शब्दों का विवेचन आगे किया जा रहा है।

3.2. रूप रचना के आधार पर पत्रकारिता की शब्दावली का स्रोतगत विवेचन

3.2.1. खेलकूद पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना :

1. रनों : रन [1] क्रिया है। यह अंग्रेज़ी शब्द है। खेल-कूद, विशेषकर क्रिकेट के संदर्भ में इसे 'रन' के रूप में स्वीकृत कर लिया गया है। यद्यपि 'रन' का संबंध दौड़ से है। खिलाड़ी बल्लेबाज़ी करते समय भाग-भाग कर स्कोर बनाता है। इसे हिंदी पत्रकारिता ने अपना लिया है। उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार एक से अधिक संख्या में दर्शाने के लिए विदेशी स्रोतों के साथ उपसर्गों, प्रत्ययों का प्रयोग करके उन्हें हिंदी में आत्मसात कर लिया गया है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 4, मई, '95)

2. कप्तानी : कप्तान 'संज्ञा' है। कप्तान 'कैप्टन' [2] से बना शब्द है। अर्थात् जो नेतृत्व करे। दल का मुखिया, जिसके नेतृत्व में टीम अपना प्रदर्शन करती है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 9, मई '95)

3. स्पिनरों : स्पिनर [3] स्पिन 'क्रियात्मक' शब्द है, जो घुमाव, दौड़, फिरना के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। हिंदी में इसे फिरकी गेंदबाज़ कहा जाता है। प्रचलन में सरल होने की वजह से 'स्पिनर' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। गेंदबाज़ी के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 16 मई '95)

4. क्रिकेटरों : क्रिकेटर [4] 'संज्ञा' विशेषण है। इसका संबंध गेंद-बल्लेबाज़ से है। क्रिकेट का खिलाड़ी क्रिकेटर है।

(उदा : क्रिकेट वर्ल्ड, पृ. सं. 31, अप्रैल '98)

5. टेस्ट मैचों : यह 'संज्ञा' विशेषण है। क्रिकेट में लगातार प्रतिस्पर्धा चलने वाली श्रृंखला को टेस्ट मैच [5] कहा जाता है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 16, मई '95)

6. अम्पायरिंग : खेल, विशेषकर क्रिकेट में, खेल का निर्णय लेने वाले को अम्पायर [6] कहा जाता है और उसके कार्य को अम्पायरिंग नाम दिया जाता है। 'अम्पायर' रेफरी खेल का निर्णायक करने वाले 'निर्णायक' को कहा जाता है।

7. एक्टिंग : एक्टिंग [7] विशेषण है। यद्यपि इसका तात्पर्य अभिनय से है, किंतु इस शब्द का प्रयोग किसी अमुक व्यक्ति की अनुपस्थिति में, कुछ समय तक के लिए किया जाता है। समय इसे कार्यकारी के रूप में लिया जाता है।

8. ऑस्ट्रेलियाई * : मूलत: जब ऑस्ट्रेलिया का पता चला तो इसे सबसे पहले दक्षिण का देश माना गया तथा इसी आधार पर इसे लैटिन नाम 'टेरा ऑस्ट्रेलिया' से अभिहित किया गया। लैटिन में 'टेरा ऑस्ट्रेलिया' का अर्थ है 'दक्षिणी देश' या 'दक्षिणी भूभाग'। आगे चलकर 'आस्ट्रेलिया' ही 'आस्ट्रेलिया' बन गया। आस्ट्रेलिया निवासी को 'आस्ट्रेलियाई' [8] कहा जाता है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 36, मई, '95)

9. एंट्रिया : एंट्री [9] यह संज्ञा है। अंग्रेज़ी में 'एंट्री' शब्द का तात्पर्य हिंदी में प्रवेश के लिए प्रयुक्त किया जाता है। चाहे व किसी प्रवेश परीक्षा में भर्ती होने, फिल्मों में पर्दे पर किसी अभिनेता का आगमन, किसी भवन में घुसने के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। किंतु खेल के क्षेत्र में विशेषकर क्रिकेट में जब खिलाड़ी बल्लेबाज़ी के या बैटिंग के लिए मैदान में उतरता है तो इस संदर्भ में उस शब्द का धड़ल्ले से प्रयोग होता है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 54, मई 1995)

फिल्म पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना

1. फिल्में : फिल्म [10] संज्ञा है। झिल्ली, परत, चलचित्र को फिल्म कहा जाता है। यह अंग्रेज़ी का ही शब्द है। रूप रचना के आधार पर एक से अधिक की संख्या को दर्शाने के लिए इसमें 'एं' स्वर को जोड़ा गया है।

(उदा : जी स्टार, पृ. सं. 7, 31 अक्तूबर, '94)

2. नंबरों : 'नंबर' [11] यह सज्ञा है। यद्यपि अंग्रेज़ी का ही शब्द है। इसे कुल संख्या के रूप में गृहीत कर लिया गया है। 'नंबर्स' का बहुवचन, समूह के रूप में, रूप रचना के आधार पर हिंदीकरण करके 'नंबरों' किया गया है।

(उदा : जी स्टार, पृ. सं. 7, 31 अक्तूबर, '94)

3. डुप्लीकेटों : डुप्लीकेट [12] विशेषण है, का मूल अर्थ द्वितीयक या दोहरा के लिए प्रयोग किया जाता है। किंतु सिनेमा में अक्सर हमशक्ल हीरो की भूमिका दर्शायी जाती है, जिसे डुप्लीकेट के नाम से स्वीकृत कर लिया गया है। पत्रकारिता ने इसे अपने क्षेत्र में स्थान दिया है।

(उदा : जी स्टार, पृ. सं. 58, 31 अक्तबर '94)

4. सिने : सिने [13] संयोजन शब्द है। फिल्म को यद्यपि चलचित्र कहा जाता है। इसे पिक्चर भी कहा जाता है। परदे पर देखा जाने वाला चलचित्र। इसे सिनेमा भी कहा जाता है। ऐसा चलचित्र जो चित्र, सीन (दृश्य) से संबद्ध है। लघुकरण करके सिनेमा जगत का सिने जगत कर दिया गया। फिल्म पत्रकारिता में इसे स्थान मिल गया।

(उदा : जी. स्टार, आवरण पृष्ठ, 31 अक्तूबर, '94)

5. सेक्सी : सेक्सी [14] यौगिक है। सेक्स का अर्थ लिंग से है। स्त्री या पुरुष लिंग। इसके अतिरिक्त कामुकता, कामवासना, घोर श्रृंगार के लिए प्रयोग होता है। यौनाकर्षण या कामुकता वाली छवि को बतलाने के लिए सेक्सी शब्द का प्रयोग किया जाता है। किंतु फिल्मों में अंगप्रदर्शन, कामप्रवृत्ति आदि के संदर्भ में सेक्सी के नाम से जाना जाने लगा है। विशेषकर फिल्म-जगत् में इस शब्द का धड़ल्ले से प्रयोग होने लगा है और पत्रकारिता ने भी इसे स्थान दिया है।

(उदा : रंगभूमि, आवरण पृष्ठ, मई '95)

6. फिल्माने : पिक्चराइज्ड [15] का हिंदी अर्थ फिल्म या चित्र बनाना यह विशेषण है। देखा जाए तो यह शब्द 'पिक्चराइज़' का अनूदित शब्द है। चित्र बनाने के अंग्रेज़ी में पिक्चराइज़ कहा जाता है। किंतु फिल्म जगत में किसी कलाकार पर फिल्में बनाने के संदर्भ में इसे 'फिल्माने' के रूप में प्रयोग किया जाता है। बोलचाल के रूप में इसे अपनाया जाने लगा है।

(उदा : जी स्टार, पृ. सं. 8, 31 अक्तूबर, '94)

3.2.2 पारिवारिक पत्रकारिता के संदर्भ में रूपरचना :

1. सलादें : सलाद [16] संज्ञा है। हिन्दी में अर्थ कच्चा (अधपका) से है। कच्ची साग-सब्ज़ी, फलों के टुकड़ों, जिस पर नमक, नींबू, विनेगर, कालामिर्च आदि डालकर सजाया जाता है, गर्मियों में ज्यादा खाया जाता है उसे सलाद के नाम से जाना जाता है। पारिवारिक पत्रकारिता विशेषकर महिला जगत में इसे व्यंजन-पकवान के संबंध में लिया गया है।

(उदा : वनिता, पृ. सं. 35, अक्तूबर, '99)

2. पार्टियों : पार्टी [17] संज्ञा है। यद्यपि यह शब्द रक्षा, राजनीति विज्ञान से संबंधित है। यह शब्द दल, मंडली, टोली, गोष्ठी, प्रीतिभोजादि के संबंध में भी इस्तेमाल होता है। हिंदी पत्रकारिता ने इसे राजनीतिक कॉलम और पारिवारिक पत्रकारिता में ग्रहण कर लिया है। पारिवारिक पत्रकारिता में दावतों के लिए इस्तेमाल कर लिया है।

(उदा : गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 132, जनवरी, '98)

हिंदी रूपरचना के आधार, पर पार्टी से 'पार्टियों' कर लिया गया है। हिंदी पत्रकारिता ने पारिवारिक पत्रकारिता में विभिन्न अवसरों पर आयोजित छोटे-बड़े समारोहों के संदर्भ में अपना लिया है।

(उदा : गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 132, जनवरी, '98)

3. ड्रेसों : 'ड्रेस' [18] संज्ञा है। अंग्रेज़ी शब्द का हिंदी अर्थ पहनावा, पोशाक या पहचान, वर्दी से है। हिंदी पत्रकारिता ने इसे प्रसाधन अथवा परिधान के लिए पारिवारिक पत्रकारिता में अपना लिया।

(उदा : आउटलुक, पृ. सं. 31, 21 अक्तूबर, 2002)

4. डिजाइनरों : डिजाइनर [19] संज्ञा है। डिजाइनर का अर्थ अभिकल्पनाकार, रूपरेखा तैयार करने वाला, खाका बनानेवाला आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। प्रयोग में प्रवाह लाने व शीघ्र ही समझ में आने के लिए हिंदी भाषा में व हिंदी पत्रकारिता में 'डिजाइनर' ही इस्तेमाल किया जा रहा है, विशेषकर पारिवारिक पत्रकारिता में ले लिया गया है।

(उदा : आउटलुक, पृ. सं. 31, 21, अक्तूबर, 2002)

5. स्टेशनों : 'स्टेशन' [20] संज्ञा है। स्टेशन का हिंदी में प्रयोग अवस्थान, ठिकाना, कार्यालय, केंद्र, सेना चौकी, स्थान, मुकाम, किसी स्थान पर नियुक्त करना के लिए होता है। किंतु रेलवे केंद्रों के लिए 'रेलवे स्टेशनों' का धड़ल्ले से प्रयोग होने लगा है।

(उदा : गृह लक्ष्मी, पृ. सं. 132, जनवरी, '98)

3.2.3 व्यावसायिक पत्रकारिता के संदर्भ में रूप रचना :

1. बैंकों : बैंक [21] संज्ञा है। यह सुनकर किसे आश्चर्य नहीं होगा कि बैठने की 'बैंच' और रुपया लेने-देने का कारोबार करने वाला 'बैंक' ये दोनों ही मूलत: एक ही शब्द हैं। बैंको का वेनिस नगर किसी समय विश्व-व्यापार का केंद्र था, अत: व्यापारियों की सहूलियत के लिए बहुत से लोग सेंट मार्क के चौराहे पर बेंचों पर सिक्के रखकर बैठते थे और सिक्के की अदला-बदली करते थे। 'बेंच' के लिए इटैलियन शब्द 'बैंको' है अत: इनके 'बेंच' जिन पर पैसे रखे रहते थे, 'बैंको' कहलाते थे। बाद में ये 'बेंच' के स्थान पर 'टेबुल' या 'मेज' का प्रयोग करने लगे तो वही 'बैंको' नाम उन मेज़ों के लिए भी प्रयुक्त हुआ। इस प्रकार 'बैंको' शब्द का अर्थ 'बेंच' से परिवर्तित होकर रुपये-पैसे रखने की बेंच तथा और आगे चलकर रुपये-पैसे रखने की मेज़ हो गया। आगे चलकर रुपये-पैसे की ढेर को 'बैंको' कहने लगे और उससे विकसित होकर 'बैंक' शब्द में आज का अर्थ आया।

अंग्रेज़ी शब्द 'बेंच' तथा इटैलियन बेंचवाची शब्द 'बैंको' या 'बैंक' ये तीनों ही बेंचवाची ट्यूटनिक शब्द 'बैंको' से निकले हैं। इस प्रकार 'बेंच' और 'बैंक' शब्द एक ही हैं। इन्हें देखकर कहाँ राजा भोज और कहाँ भोजवा (गंगू) तेली। कहाँ तो आज के कारोबार का प्रमुख साधन बैंक और कहाँ बैठने की एक सामान्य-सी चीज़ बेंच। मूलत: दोनों एक हैं, किंतु आज इनमें कितना अंतर है?

लेन-देन व्यापार की दृष्टि से हिंदी पत्रकारिता ने इसे व्यावसायिक पत्रकारिता के संदर्भ में ले लिया है।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 8, 21 मई, '95)

2. बीमा : बीमा [22] मूलत: यह फारसी का शब्द 'बीम' है, जिसका अर्थ है 'डर', 'भय' या 'खतरा'। बाद में इसी में 'बीमह्' बना, जिसका अर्थ हुआ 'कुछ धन के बदले किसी भी प्रकार का खतरा या हानि की जिम्मेदारी।' यही 'बीमह' हिंदी में 'बीमा' हो गया। अंग्रेज़ी के 'इंश्यूरेंस' और 'एश्युरेंस' के संदर्भ में इसका हिंदीकरण कर लिया गया।

(उदा : जनसत्ता, पृ. सं. 3, 31 मार्च, 2003)

3. प्रमोटरों : प्रमोटर [23] संज्ञा है। संवर्धक, प्रोत्साहक, प्रवर्तक, आयोजक व्यवसाय के क्षेत्र में इसे ज्यों का त्यों ले लिया गया है, ताकि संप्रेषण में आसानी हो।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 11, 21 मई, '95)

4. शेयर होल्डर : शेयर होल्डर संज्ञा है। पूंजी, हिंसा इसी से शेयर होल्डर [24] बना। वैसे तो शेयर होल्डर का अर्थ है शेयर धारक साझेदार, हिस्सेदार। किंतु प्रयोग के लिए शेयर होल्डर का ही इस्तेमाल किया जाता है।

(उदा : कैपिटल मार्केट, पृ. सं. 19, 8-21 मई, '95)

5. प्रॉडक्ट : प्रॉडक्ट [25] संज्ञा है। उत्पाद, माल, उत्पादन, पैदावार, उपज, उत्पत्ति से है। हिंदी शब्दों के साथ-साथ अंग्रेज़ी शब्द 'प्रॉडक्टर' का भी हिंदी पत्रकारिता में प्रयोग होता है।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 5, मई, '95)

6. फंडों : फंड [26] शब्द कोश के अनुसार 'फंड' का अर्थ निधि, कोष, जमा करना, वितरण, स्थायी सरकारी ऋण, धन, नकदी, ब्याज के लिए रुपया लगाना।' फंड संज्ञा है।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 5, मई, '95)

7. इश्युओं : इश्यु [27] संज्ञा है। हिंदी में इसे जारी करना, बांटना, देना, प्रकाशित करना, निकालना, विषय, समस्या, परिणाम, निर्णय, अंक, प्रकाशन आदि से है। पत्रकारिता ने विभिन्न संदर्भों व विभिन्न स्त्रोतों में 'इश्यु' को विभिन्न अर्थों में लिया है। जबकि यहाँ व्यावसायिक पत्रकारिता में 'लाभ' के लिए चुना है। प्रचलन में आसान होने की वजह से इसे 'इश्यु' ही अपना लिया गया।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 1, मई, '95)

8. इंवेस्टर : इंवेस्टर [28] संज्ञा है। पूंजी निवेशक, धन लगाना, सजाना, नियुक्त करना, घेरना आदि। व्यावसायिक पत्रकारिता में लेन-देन के मामले की दृष्टि से पूंजी-निवेश करने पर 'इंवेस्टर' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 1, मई, '95)

9. इंस्टिट्यूशनों : इंस्टिट्यूशन [29] संज्ञा है। संस्थापन, संस्थान, नींव, विधि, संस्था, विद्यालय, नियुक्ति आदि के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। हिंदी पत्रकारिता के हर क्षेत्र में इसका प्रयोग होता है।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 13, मई, '95)

10. प्लॉटों : प्लॉटों [30] यह संज्ञा है। हिंदी में इसका अर्थ भूखंड, भूमि का टुकड़ा, आलेख, नक्शा, षड्यंत्र, साज़िश करना आदि है। एक से अधिक भूखंड या भूमि के टुकड़ों को अंग्रेज़ी में 'प्लॉट्स' कहा जाता है, जबकि रूप-रचना के आधार पर प्रचलन में 'प्लॉटों' कहा जाता है।

(उदा : प्लॉटो कैपिटल मार्केट, पृ. सं. 5, मई, '95)

3.2.4 विज्ञान पत्रकारिता के संदर्भ में रूप-रचना :

1. इलेक्ट्रॉनिकी : इलेक्ट्रॉनिकी [31] संज्ञा है। इलेक्ट्रॉन अर्थात् विद्युकरणों से बना हुआ तत्व। इलेक्ट्रॉनिक का हिंदी अनुवाद इलेक्ट्रॉनिकी है। इसका इलेक्ट्रिकल इंजीनियरी, चिकित्सा, भौतिक शास्त्र और सूचना व प्रसारण माध्यम में प्रयोग होता है।

(उदा : योजना, पृ. सं. 28, 1-15, नवम्बर, '90)

2. कैपिसटरों : कैपिसटरों [32] यह संज्ञा है। भौतिक शास्त्र में इसका प्रयोग होता है। कैपिसटर का अर्त है ऊष्मा को धारण करने वाला।

(उदा : योजना, पृ. सं. 28, 1-15, नवम्बर, '90)

3. फेराइटो : फेराइट [33] यह संज्ञा है। यह रसायनशास्त्र से संबंधित शब्द है। लौह-अयस्क को अंग्रेज़ी में फेराइट कहा जाता है। रूप-रचना के आधार पर अंग्रेज़ी के फेराइट्स से 'फेराइटों' बना।

(उदा : योजना, पृ. सं. 28, 1-15, नवम्बर, '90)

4. सर्किटों : सर्किट [34] यह संज्ञा है। माप-पद्धति में इसका अधिकतर प्रयोग होता है। सर्किट का हिंदी अर्थ गोलमोल, रास्ता, घेरा, बिजली का विद्युत-परिपथ, एक प्रबंधी थियेटर या सिनेमा के लिए प्रयोग होता है।

(उदा : योजना, पृ. सं. 28, 1-15, नवम्बर, '90)

5. रिसीवरों : रिसीवर [35] पाने वाला, प्राप्तकर्ता, प्रापक, लेने वाला, रेडियो आदि। टेलिफोन हैंडसेट को भी रिसीवर कहा जाता है। प्रचलन में रिसीवर आसान शब्द होने की वजह से संप्रेषण माध्यम को सरल बनाने के लिए इसी शब्द को स्वीकार कर लिया गया। हिंदी पत्रकारिता ने भी हर क्षेत्र में इसे अपनाया है।

(उदा : योजना, पृ. सं. 28, 1-15, नवम्बर, '90)

3.3 संकर शब्दावली का स्रोतगत विवेचन :

(I) खेलकूद पत्रकारिता के संदर्भ में संकर शब्दावली को कुछ उदाहरण द्वारा 12 उपवर्गों में रखा जा सकता है।

3.3.1 अंग्रेज़ी + देशज

1. वाइड गेंद - अं. वाइड + गेंद

वाइड [36] = दूर से, काफीदूर, विस्तृत, विस्तारपूर्वक, बीच के अंतराल से। क्रिकेट में वाइड बॉल का एक रन होगा। वाइड विशेषण है। गेंद संज्ञा है। अत: वाइड गेंद, जबकि संज्ञा विशेषण है। क्रिकेट में 'हिंदी कमेंट्री' करते

समय कमेंटेटर धारा प्रवाह में वाइड गेंद का प्रयोग करता है, जो आम जनता के लिए परिचित शब्द है। वाइड अंग्रेज़ी और गेंद देशज शब्द है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 4, मई, '95)

2. **स्विंग गेंद =** स्विंग (अं) + गेंद (दे. हिंदी)

स्विंग [37] : स्विंग क्रिया है। इसका अर्थ है झूलना, घुमाव, घुमाऊ, हिलना आदि है। क्रिकेट में बल्लेबाज़ी/ गेंदबाज़ी करते हुए गेंद, छक्का, मारने पर हवा में घुमते हुए बाउंडरी पार करते हुए बाहर की ओर गिरती है, तो ऊँचाई में जाने पर वह आसमान में घूमती हुई नज़र आती है, उसे 'स्विंग गेंद' कहा जाता है। स्विंग अंग्रेज़ी शब्द है, जबकि गेंद को अंग्रेज़ी में बॉल कहा जाता है, देशज शब्द है।

(उदा : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 7, मई, '95)

3. **शार्टगेंद** : शार्ट (अं) + गेंद (दे.)। शार्ट [38] विशेषण + संज्ञा है। यद्यपि 'शार्ट' का अर्थ है छोटा, अल्पकालीन थोड़े समय का आदि। क्रिकेट में 'शार्ट लेग', 'शार्ट स्लिप', 'शार्ट गेंद' का प्रयोग किया जाता है। 'शार्ट लेग' का अर्थ है बल्लेबाज के पास विकेट के पीछे बाई ओर का क्षेत्र रक्षक खिलाड़ी या स्थान) 'शॉर्ट स्लिप' बल्लेबाज का बायां हाथ विकेट के पीछे। अथवा स्थान या क्षेत्र रक्षक से है।

(उदा : क्रिकेट भारती (35), मई, '95)

4. **ओलंपिक खेल *** : ओलंपिक [39] संज्ञा है। ओलंपिक यूनानी देवताओं का निवास स्थान है। ऑलिम्पस पर्वत, स्वर्ग, देवलोक है। ओलंपिक ऑलिम्पिक खेलों का शहर कहलाता है।

ऑलिम्पिया में चार वर्ष बाद होने वाले खेलों को 'ओलिम्पिक' खेल कहा जाता है। चतुर्वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय खेल-कूद समारोह।

(उदा : ओलंपिक खेल, क्रिकेट भारती, पृ. सं. 36, मई, '95)

3.3.2 संस्कृत + अंग्रेज़ी

1. सर्वोच्च स्कोर = सर्वोच्च (सं.) + स्कोर (अं.)

सर्वोच्च [40] : यह विशेषण है। इसका अर्थ है सर्वोपरि, अथवा सबसे बड़ा।

स्कोर [41] : यह संज्ञा है। इसका अर्थ है खरोंच, घसीट, चीट, प्रबंध लेख, उधार, कुल संख्या, गणना आदि है। किंतु खेल में अंक बनाना, रन या दौड़ बनाना, गोल करना आदि के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

2. पगबाधा आउट = पगबाधा (सं.) + आउट (अं.)

पगबाधा [42] = पग + बाधा

पग [42] = पुलिंग है। इसका अर्थ है पैर, पांव। एक पैर से दूसरे पैर तक की दूरी/अथवा पैर आगे बढ़ाने की क्रिया।

बाधा [43] = सीलिंग है। इसका अर्थ होगा रुकावट, विघ्न, कष्ट आदि।

रुकावट, विघ्न, कष्ट आदि।

क्रिकेट में इसे 'एल बी डब्ल्यू', लेग बिफोर विकेट कहा जाता है। खेल के संदर्भ में पगबाधा का अर्थ हुआ, रुकावटों को पार करने की दौड़।

आउट [44] : यह विशेषण है। इसका अर्थ होगा खाली, अलग, समाप्त, सीमा से परे, बाहर आदि।

किंतु खेल के संदर्भ में खेल में आऊट हुआ, आऊट कर देना, बल्लेबाज़ी करते समय कुछ रन बना कर आऊट होना।

(उदा : पगबाधा आउट, क्रिकेट भारती, 54, मई, '98)

3. विश्व रिकार्ड = विश्व (सं.) + रिकार्ड (अं.)

विश्व [45] : यह विशेषण है। हिंदी में इसका अर्थ हुआ समस्त, जगत्, संसार।

रिकार्ड [46] : यह क्रिया है। रिकार्ड का हिंदी में अर्थ है दर्ज करना, सूचित करना, इतिहास रचना, प्रमाण, कीर्तिमान आदि। विश्वस्तर के खिलाड़ियों या कलाकारों की बराबरी करना उस क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित करना या इतिहास रचने जैसा होता है।

विश्व रिकार्ड का अर्थ हुआ विश्व स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करना।

(उदा : विश्व रिकार्ड = क्रिकेट टुडे, (46), अक्तूबर, '98)

विश्व रिकॉर्ड का अर्थ हुआ विश्व स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करना।

(उदा : विश्व रिकॉर्ड = क्रिकेट टुडे, (46) अक्तूबर, '98)

विश्व कप [47] = विश्व (सं.) + कप (अं.)

2) विश्व = विश्व [47] यह विशेषण है। हिंदी में इसका अर्थ हुआ समस्त, जगत्, संसार।

कप = कप [48] यह संज्ञा है। इसका अर्थ है प्याला, गड्ढा, कप जीतने के लिए खेला जाने वाला खेल।

(उदा : क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 47, अक्तूबर, '98)

3.3.3 ग) उर्दू + देशज

1. बेहतरीन पारी = बेहतरीन (उर्दू) + पारी (देशज)

1) बेहतरीन = बेहतरीन [49] बेहतर + ईन = बेहतरीन

बेह + तर + ईन = बेहतरीन

'बह' = बेह का अर्थ है अच्छा, भला।

'तर' = 'तर' का अर्थ है अधिक अच्छा। यह विशेषण है।

'बेह' के साथ तर + ईन प्रत्यय के जुड़ने से बेहतरीन शब्द बना।

पारी = पारी [50] स्त्रीलिंग है। इसका अर्थ हुआ अवसर या बारी। यह हिंदी शब्द है।

(उदा : वार्ता, पृ. सं. 11, 31 अक्तूबर, 2002)

2) यादगार प्रदर्शन : यादगार (उर्दू) + प्रदर्शन (देशज)

याद + गार = यादगार

'याद' का अर्थ है स्मरण। यह स्त्री लिंग है।

'याद' से अर्थ है 'स्मारक', 'स्मृति चिह्न'।

यादगार [51] : जो कभी भुलाना नहीं जा सका।

प्रदर्शन [52] : यह संज्ञा (पुल्लिग) है। दिखलाने वाला। खेल में किसी भी क्षेत्र में अच्छा या उत्कृष्ट कार्य करके दिखलाने के लिये यादगार प्रदर्शन कहा जाएगा, जिसे हमेशा याद रखा जाएगा।

(उदा : यादगार प्रदर्शन, क्रिकेट भारती, 16 मई, '95)

3.3.4 संस्कृत + देशज

1. शतकीय साझेदारी = शतकीय (सं.) + साझेदारी (देशज)

शतकीय [53] = शतक + ईय = शतकीय (संज्ञा से विशेषण)

'शतक' [53] संज्ञा (पुल्लिग) है। संज्ञा के साथ 'ईय' प्रत्यय लगने से 'शतकीय' बना। 'शत' का अर्थ है 'सौ'।

2. साझेदारी [54] **=** साझा + दारी

हिंदी + फ़रसी = साझेदारी

खेल में, विशेषकर क्रिकेट में दो खिलाड़ी जब आपस में मिलकर सौ रनों की साझेदारी करते हैं तो उसे 'शतकीय साझेदारी' कहा जाता है।

(उदा : क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 66, अक्तूबर, '98)

3.3.5 देशज + संस्कृत

1. दोहरा शतक = दोहरा (देशज) + शतक (सं.)

दोहरा [55] **=** यह विशेषण है। इसका अर्थ है दो बार किया जाना, दोहराया जाना, दोहरा करना आदि।

शतक [56] **=** यह पुल्लिग है। शत का अर्थ है सौ। खेल में दोहरा शतक को 'अंग्रेज़ी' में 'डबल सेंचुरी' कहा जाता है।

(उदा : दोहरा शतक = क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 47, अक्तूबर, '98)

2. घरेलू परिस्थितियाँ

घरेलू (देशज) + परिस्थितियाँ (संस्कृत)

घरेलू : घरेलू [57] विशेषण है। इसका अर्थ हुआ घर-संबंधी।

परिस्थितियाँ = परि + स्थिति = परिस्थिति

परिस्थितियाँ [58] : यह स्त्रीलिंग है। व्यक्ति के चारों ओर वो बातें, जिनके परिणामस्वरूप कार्य करने को विवश होता है। या चारों तरफ से उत्पन्न होने वाली संकट की अवस्था। स्थिति [59] संज्ञा (पु.) के साथ 'परि' [60] उपसर्ग के लगने से परिस्थिति शब्द बना।

(उदा : घरेलू परिस्थितियाँ, क्रिकेट टुडे, 17 मई, 1995)

3.3.6 अंग्रेज़ी + संस्कृत

1. सीजन वर्ष = सीजन (अंग्रेज़ी + वर्ष (संस्कृत)

सीजन [61] = यह संज्ञा है। इसका हिंदी अर्थ है- ऋतु, मौसम, उचित काल, सुअवसर, सामयिक आदि।

वर्ष : वर्ष [62] = यह संज्ञा (पुल्लिग) है। बारह महीने का समय।

खेल के दौरान विभिन्न प्रतिस्पर्धाएँ होती हैं। लगातार एक के बाद एक प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन होता रहता है। जैसे- इस वर्ष अभी पिछले दो महीने तक क्रिकेट का वर्ल्ड कप (विश्व कप) चला, अभी आगे ढाका में टूर्नामेंट होगा। यह वर्ष क्रिकेट का सीजन वर्ष रहा।

(उदा : सीजन वर्ष, क्रिकेट भारती, पृ. सं. 7, मई, 1995)

2. क्रिकेट समीक्षक = क्रिकेट (अंग्रेज़ी) + समीक्षक (सं.)

क्रिकेट [63] = ईमानदारी का खेल। क्रिक का अर्थ है गर्दन का अकड़ाव, ऐंठन। यह संज्ञा है।

समीक्षक [64] = यह संज्ञा (पुल्लिग) है। इसका हिंदी अर्थ हुआ समालोचक, समीक्षा करनेवाला। इसका अंग्रेज़ी अर्थ हुआ कमेंटेटर [65]। खेल में कमेंटेटर, खेल समीक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दृश्य-श्रव्य (रेडियो, टेलिविजन) माध्यम से दर्शकों को खेल का विवरण सुनाने व उसकी आलोचना, समालोचना करने में सहायक होते हैं।

(उदा : क्रिकेट समीक्षक, क्रिकेट भारती, पृ. सं. (32), मई, '95)

3.3.7 उर्दू + संस्कृत

जबर्दस्त क्षेत्ररक्षण = जबर्दस्त (उर्दू) + क्षेत्ररक्षण (सं.)

जबर्दस्त = जबर + दस्त = जबरदस्त

जबर [66] = यह विशेषण है। इसका हिंदी अर्थ हुआ ऊपर का, अधिक प्रबल।

दस्त [67] = दस्त। यह भी विशेषण है, इसका हिंदी अर्थ हुआ, जो अत्यधिक शक्तिशाली एवं कठोर प्रकृति का हो। जो बहुत दृढ़, मज़बूत हो, जो अत्यधिक कठिन हो।

क्षेत्ररक्षण = क्षेत्र + रक्षण = क्षेत्ररक्षण

'क्षेत्र' [68] : संज्ञा (स्त्री) है। भूमि, ज़मीन, स्थान, सीमा-बद्ध जगह।

'रक्षण' [69] : यह भी संज्ञा (पुल्लिग) है। रक्षा करण, रक्षक या संरक्षक।

जो स्थान या क्षेत्र की रक्षा करे वह 'क्षेत्ररक्षण' कहलाता है। अंग्रेज़ी में इसे 'फील्डिंग' [70] कहा जाता है।

'क्रिकेट' में गेंद लपकने के लिए अपने स्थान पर तैनात होना या गेंद पकड़ने को 'क्षेत्ररक्षण' कहा जाता है।

(उदा : जबर्दस्त क्षेत्ररक्षण, क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 66, अक्तूबर, '98)

3.3.8 उर्दू + अंग्रेज़ी

1. खराब पिच = खराब (उर्दू) + पिच (अं.)

खराब [71] : अरबी शब्द है। यह विशेषण है। इसका अर्थ है बुरा, हीन, नष्ट, बरबाद, बिगड़ा हुआ।

पिच : पिच [72] क्रिया है। इसका अर्थ है गाड़ना, बैठाना, जमाना, लगाना, खड़ा करना, पड़ाव डालना, धावस्थली।

क्रिकेट में जहाँ विकेट गाड़े जाते हैं, उस स्थान को 'पिच' कहा जाता है। इसे धाव स्थली भी कहा जाता है।

(उदा : खराब पिच, क्रिकेट भारती, पृ. सं. 16, मई, '95)

2. टेस्ट श्रृंखला

टेस्ट (सं.) + श्रृंखला (सं.)

टेस्ट [73] = यह सकर्मक क्रिया है। इसका हिंदी अर्थ हुआ, जाँच करना, परखना, कसौटी, मापदंड, निदर्शक मामला आदि।

'टेस्ट मैच' : संज्ञा है। क्रिकेट में लगातार होने वाले 'टेस्ट मैचों' को ट्रेस्ट श्रृंखला कहा जाता है।

श्रृंखला : श्रृंखला [74] इसका अर्थ है सिलसिला, क्रम आदि। क्रिकेट में जो परीक्षण प्रतिस्पर्धा क्रमबद्ध रूप में होती है उसे 'टेस्ट श्रृंखला' कहा जाता है।

(उदा : टेस्ट श्रृंखला, क्रिकेट भारती, पृ. सं. 48, मई, '95)

3.3.9 **संस्कृत + उर्दू**

1. विस्फोटक बल्लेबाज़ = विस्फोटक (सं.) + बल्लेबाज़ (उर्दू)

विस्फोटक = विस्फोटक [75] विशेषण है। अर्थात् विस्फोट करने वाला। अर्थात् जोरदार या ज़ोर का शब्द।

बल्लेबाज़ = बल्ला + बाज़

हिंदी + फारसी

बल्लेबाज़ी [76] : बल्ले से खेलने वाला। (क्रिकेट के खेल में)

जो खेल में जोरदार बल्लेबाज़ी करे उसे विस्फोटक बल्लेबाज़ कहा जाता है।

(उदा : विस्फोटक बल्लेबाज़, क्रिकेट भारती, पृ. सं. 66, मई, '95)

2. संयुक्त मेजबानी = संयुक्त (अं.) + मेजबानी (उर्दू)

संयुक्त = संयुक्त [77] यह विशेषण है। जुड़ा, मिला हुआ। एक साथ काम करने वाला।

मेज़बानी = मेज़बानी [78] मेज + बानी।

मेज़बानी = यह स्त्री लिंग है। इसका अर्थ हुआ मेहमानदारी।

(उदा : संयुक्त मेज़बानी, क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 60, अक्तूबर, '98)

3.3.10 अंग्रेज़ी + उर्दू

ड्रामेबाजी = ड्रामास + बाज़ी (उर्दू)

ड्रामा [79] : यह पुल्लिग है। इसका अर्थ हुआ नाटक

ड्रामा, नाटक का पर्याय। हिंदी में यह शब्द अंग्रेज़ी 'ड्रामा' से आया है तथा अंग्रेज़ी में यह लैटिन से आया है। लैटिन का भी यह अपना शब्द नहीं है। वहाँ यूनानी भाषा से आया है। यूनानी में मूल शब्द है 'ड्रामा' जिसका अर्थ है 'क्रिया', 'व्यापार' या 'वह जो किया जाए'। इसका संबंध यूनानी धातु Draein से है, जिसका अर्थ है 'करना'। यों धीरे-धीरे यूनानी भाषा में ही Drama का अर्थ 'क्रिया' और 'व्यापार' के अतिरिक्त 'मंच पर की जाने वाली क्रिया' हो चुका था। नाटक की परंपरा यूनान में भारत से प्राचीन है। यह उल्लेख है कि यूनान के निवासी 'यवन' से ही संस्कृत 'यवनिका' है जिसका अर्थ 'परदा' से है। संस्कृत में 'यवनिका' शब्द यूनान के संपर्क की ही देन है। तो इस तरह 'क्रिया' या 'व्यापार' का समानार्थी Drama 'नाटक' का समानार्थी बन गया।

बाज़ी = यह स्त्री लिंग है। बाज़ी [80] अर्थ है- शर्त, दांव, बारी, करतब, तमाशा, खेल आदि। 'बाज' होने का भाव, शौकीन होने का भाव।

(उदा : ड्रामेबाज़ी, क्रिकेट भारती, पृ. सं. 55, मई, 1995)

3.3.11 देशज + अंग्रेज़ी

1. चुस्त फीलि्डग = चुस्त (देशज) + फीलि्डग (अं.)

चुस्त [81] **=** यह विशेषण है। चुस्त का अर्थ है खूब कसा हुआ, जो शिथिल, आलसी न तो, फुर्तीला, दृढ़, मज़बूत।

फीलि्डग [82] **=** यह क्रिया है। गेंद लपकने के लिए अपने स्थान पर तैनात होने को 'फिलि्डग' कहा जाता है।

क्रिकेट में क्षेत्ररक्षकों (फिल्डरों) की स्थिति को फिलि्डग कहा जाता है।

(उदा : चुस्त फीलि्डग, क्रिकेट भारती, पृ. सं. 43, मई, '95)

2. एक दिवसीय मैचों : एक दिवसीय (देशज) + मैचों (अं.)

1. एक दिवसीय : एक दिवसीय [83] 'एक' संज्ञा (पुल्लिग) विशेषण है। एक [83] का अर्थ पहले अंक से सूचित, इकाई से सूचित, दो का आधा, अकेला, बेजोड़।

'दिवसीय' [83ए] यह संस्कृत शब्द है और विशेषण है। 'दिन' का अर्थ 'दिवसीय' है।

खेल में 'एक दिन' के खेल को एक-दिवसीय मैच, अंग्रेज़ी में 'वन डे मैच' कहा जाता है।

(उदा : एक दिवसीय मैचों, क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 46, अक्तूबर, '98)

3.4 फिल्म पत्रकारिता के संदर्भ में संकर शब्दावली

इस वर्ग की शब्दावली को 10 उपवर्गों में दर्शाया जा सकता है।

3.4.1 संस्कृत + अंग्रेज़ी

1. प्रतिष्ठित बैनरों = प्रतिष्ठित (सं.) + बैनरों (अं.)

प्रतिष्ठित = प्रतिष्ठित [84] यह विशेषण है। इसका अर्थ है सम्मान प्राप्त या आदर प्राप्त।

बैनर [85] **=** यह पुल्लिग है। इसका अर्थ हुआ प्रतीक चिह्न।

जिन चर्चित प्रोड्यूसरों के प्रतीक तले फिल्मों का निर्माण होता है, उसे प्रतिष्ठित बैनर कहा जाता है।

(उदा : प्रतिष्ठित बैनरों, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 18, जून, '95)

मुहूर्त-शॉट = मुहूर्त (सं.) + शॉट (अं.)

मुहूर्त = मुहूर्त [86] पुल्लिग है। किसी कार्य हेतु निश्चित किया गया विशिष्ट समय अथवा काल, गणना के अनुसार कार्य हेतु निश्चित किया गया समय।

शॉट = शॉट [87] यह संज्ञा है। यद्यपि शॉट का अर्थ है आहत, धमाका, विस्फोट या पिलाई अथवा भराई। किंतु फिल्म-उत्पादन के दल को 'शॉट' कहा जाता है।

3.4.2 अंग्रेज़ी + देशज

1. सिनेमाघरों = सिनेमा (अं.) [88] + घर [89] (दे.)।

सिनेमा देखने का घर या सिनेमा देखने का भवन। सिनेमा शब्द पुल्लिग है। इसका अर्थ चलचित्र, छायाचित्र।

सिनेमा अंग्रेज़ी शब्द Cinema मूलत: Cinematograph का संक्षिप्त रूप है। Cinematograph में यूनानी भाषा के दो शब्द हैं Kinemagraph. इसमें Kinema का अर्थ है 'गति' तथा graph का अर्थ है 'चित्र'। इस तरह Cinematograph का अर्थ है 'गतिशील चित्र'। इस तकनीक का आविष्कार करने तथा यह शब्द बनाने का श्रेय फ्रांस के ल्यूमिये बंधुओं को है। इस शब्द का प्रथम प्रयोग 1890 के आस-पास हुआ।

(उदा : सिनेमाघरों, फिल्म दुनिया, पृ. सं. 3, जून, '95)

2. फिल्मी परदे = फिल्मी (अं.) + परदे (दे)

फिल्मी = यह [90] विशेषण है। फिल्म संबंधी, फिल्म का, सिनेमा संबंधी।

परदे : परदे [91] यह पुल्लिग है। इसका अर्थ है पट। रंगमच पर लगाया जाने वाला, आड़ करने का वह कपड़ा जो समयानुकूल उठाया और गिराया जाता है। अभिनय, खेल, तमाशों आदि का वह लंबा-चौड़ा कपड़ा जिस पर दृश्य अंकित होते रहते हैं।

(उदा : फिल्मी परदे, आउटलुक, पृ. सं. 51, 21 अक्तूबर, '02)

3. एक्शन भरी : एक्शन (अं.) + भरी (दे)

एक्शन : एक्शन [92] यह संज्ञा है। इसका अर्थ है अभिनय, क्रियाशीलता, कार्यवाही आदि।

भरी [93] **=** यह स्त्री लिंग है। भरी का अर्थ है दस माशे की तौल, एक तरह की घास। किंतु 'एक्शन भरी' में भरी, भरा विशेषण के संदर्भ में है। भरा का अर्थ है पूर्ण। यथेष्ट मात्रा से युक्त।

अभिनय से परिपूर्ण को एक्शन भरी फिल्म कहा जाता है।

(उदा : एक्शन भरी, रंगभूमि, पृ. सं. 59, मई, '95)

3.4.3 उर्दू + अंग्रेज़ी

1. गर्म हीरोइनों = गर्म (उ.) हीरोइनों (अं.)

'गर्म' [94] **=** यह विशेषण है। इसका अर्थ है उष्ण, गर्म, जोशपूर्ण, तेज, प्रबल आदि।

हीरोइनों = हीरोइन [95] वीरांगना, नायिका के संबंध में है। यह संज्ञा है। अर्थात् फिल्मों में नायिका की अदाकारी जोशपूर्ण हो तो उसे गर्म हीरोइन कहा जाता है।

(उदा : गर्म हीरोइनों, फिल्म दुनिया, पृ. सं. 7, जून, '95)

2. काफ़ी लेट (हो गई) : काफ़ी (उर्दू) + लेट (अं.)

काफ़ी = काफ़ी [96]। यह विशेषण है। इसका अर्थ है बहुत, पर्याप्त।

लेट [97] : लेट विशेषण है। इसका अर्थ है- मंद, शिथिल, काम में पीछे रहने वाला।

(उदा : काफ़ी लेट हो गई, रंगभूमि, पृ. सं. 9, मई, '95)

3.4.4 अंग्रेज़ी + संस्कृत

1. सेक्स पीड़ित = सेक्स (अं.) + पीड़ित (सं.)

सेक्स [98] **=** यह संज्ञा है। 'सेक्स' का अर्थ है कामभावना, कामुकता आदि।

पीड़ित [99] **=** जो पीड़ा से ग्रस्त हो या जो सताया गया हो, जो नष्ट कर दिया गया हो। यह स्त्रीलिंग है।

(उदा : सेक्स पीड़ित, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 7 जून, '95)

2. पॉप शैली = पॉप (अं.) + शैली (सं.)

पॉप [100] **=** यह विशेषण है। इसका अर्थ है लोकप्रिय।

शैली [101] **:** यह स्त्रीलिंग है। इसका अर्थ है ढंग, तरीका। विचार प्रकट करने का ढंग। वस्तु निर्माण का कलापूर्ण ढंग।

(उदा : पॉप शैली, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 25, जून '95)

3.4.5 **अंग्रेज़ी + उर्दू**

1. कोर्ट सम्मनों = कोर्ट (अं.) + सम्मनों

कोर्ट [102] **=** यह संज्ञा है। कोर्ट का अर्थ है प्रांगण, महल, न्यायालय, कचहरी, निर्णायक समिति।

सम्मनों : सम्मनों [103] सम्मन पुल्लिग है। न्यायालय में उपस्थित होने के लिए न्यायालय द्वारा प्रेषित पत्र।

2. एडवांस खाता = एडवांस (अं.) + खाता (उर्दू)।

एडवांस [104] : क्रिया है। 'एडवांस' का हिंदी अर्थ है पेश करना, प्रस्तुत करना, बढ़ावा देना, उधार देना, प्रगति, उन्नति, पेशगी आदि।

खाता = खाता [105] पुल्लिग है। आय-व्यय एवं लेन-देन आदि का लेखा, अथवा ऐसी बही जिसमें लेन-देन क्रमिक रूप में लिखा जाता है उसे खाता कहते हैं।

(उदा : एडवांस खाता, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 8, जून '95)

3.4.6 **देशज + अंग्रेज़ी**

घरेलू ट्रैजडीज़ = घरेलू (दे) + ट्रैजडीज़ (अं.)

घरेलू [106] : यह विशेषण है। 'घरेलू' का अर्थ हुआ घर संबंधी, निजी, घर का, पालतू आदि।

(उदा : घरेलू ट्रैजडीज़, आउटलुक, पृ. सं. 70, 21 अक्तूबर, 2002)

3.4.7 संस्कृत + उर्दू

1. निजी ज़िंदगी = निजी (सं.) + ज़िंदगी (उर्दू)

निजी [108] **=** निजी विशेषण है। इसका अर्थ है निज का, आपस का।

ज़िंदगी = ज़िंदगी [109] यह स्त्रीलिंग है। जीवित रहने की अवस्था।

(उदा : निजी ज़िंदगी, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 14, जून, 1995)

2. अतिरिक्त खूबी = अतिरिक्त (सं.) + खूबी (उ)

अतिरिक्त = अतिरिक्त [110] विशेषण है। इसका अर्थ है फालतू, भिन्न, अद्वितीय।

2) खूबी = खूबी [111] स्त्रीलिंग है। इसका अर्थ अच्छा है, विशेषता, भलाई है। खूब से खूबी।

(उदा : अतिरिक्त खूबी, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 22, जून '95)

3.4.8 उर्दू + संस्कृत

तरोताजा अभिनेत्री = तरोताजा (उ.) + अभिनेत्री (सं.)

तरोताजा :

तर+ताजा = तरोताजा [112] यह पुल्लिग है। इसका अर्थ है हरा भरा।

'तर' [113] का अर्थ है गीला, आर्द्र, नमीयुक्त, ठंडा, शीतल आदि।

'ताजा' [114] का अर्थ है हरा भरा, जो मुरझाया न हो। तुरंत का तैयार किया हुआ।

अभिनेत्री : अभिनेत्री [115] स्त्रीलिंग है। अभिनय करने वाली अभिनेत्री कहलाती है।

(उदा : तरोताजा अभिनेत्री, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 17, जून '95)

अभि+नेत्री = अभिनेत्री

'अभि' [116] : उपसर्ग है। इसका अर्थ है ओर, सामने, अभिमुख आदि।

'नेत्री' [117] का अर्थ है 'रहनुमाई' करने वाली। 'अभिनय' करने वाली अभिनेत्री होगी।

3.4.9 देशज + संस्कृत

पोंगा पंडित = पोंगा (दे.) + पंडित (सं.)

पोंगा = पोंगा [118] विशेषण है। अर्थात् नासमझ, निरा मूर्ख, बेवकूफ, निकम्मा, बेकाम आदि को पोंगा कहा जाता है।

पंडित = पंडित [119] विशेषण है। इसका अर्थ है विद्वान। निपुण, कुशल आदि।

(उदा : पोंगा पंडित, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 67, जून, 1995)

3.4.10 देशज + उर्दू

1. बनावटीपन = बनावटी (देशज) + पन (उर्दू) 'बनाना' से बनावट। 'बनावट' में ई= प्रत्यय लगने से बनावटी बना। बनावटी का अर्थ है दिखाऊ, नकली। 'बनावटी' [120] स्त्रीलिंग है। इसमें 'पन' [121] प्रत्यय व भाववाचक संज्ञा के लगने से 'बनावटीपन' शब्द बना।

(उदा : बनावटीपन, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 71, जून '95)

2. रस्म अदायगी

रस्म अदायगी = रस्म (दे.) + अदायगी (उर्दू)

रस्म = रस्म [122] स्त्रीलिंग है। 'रस्म' का अर्थ है परिपाटी, प्रथा।

अदायगी = [123] यह भी स्त्रीलिंग। अदायगी का अर्थ है चुकता करना। रस्म अदा करना। प्रथा को निभाना 'रस्म अदायगी' होगा।

(उदा : रस्म अदायगी, फिल्मी दुनिया, पृ. सं. 71, जून '95)

3.5 व्यावसायिक पत्रकारिता में संकर शब्दावली

व्यावसायिक पत्रकारिता में संकर शब्दावली को सात उप-वर्गों में रखा जा सकता है।

3.5.1 अंग्रेज़ी + देशज

नेटघाटा = नेट (अं.) + घाटा (दे.)

नेट = यद्यपि नेट [124] का अर्थ है मछली का जाल। यह पुल्लिंग है, किन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में 'नेट' का संबंध 'शुद्ध लाभ' कमाने से है।

घाटा = घाटा [125] यह पुल्लिंग है। इससे अर्थ है नुकसान, हानि, कमी। पूरी तरह से नुकसान होने पर उसे नेटघाटा कहा जाता है।

(उदा : नेटघाटा, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 15, 21 मई '95)

3.5.2 देशज + अंग्रेज़ी

1. दलाल स्ट्रीट = दलाल (दे.) + स्ट्रीट (सं.) दलाल [126] = यह पुल्लिंग है। इसका अर्थ है बिचौलिया, मध्यस्थ, पारसियों की एक जाति भी है।

स्ट्रीट [127] **=** यह पुल्लिंग है। इसका अर्थ है छोटी सड़क।

'दलाल स्ट्रीट' का अर्थ हुआ बिचौलियों की गली।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, दलाल स्ट्रीट, आवरण पृष्ठ, 21 मई '95)

2. घरेलू इंवेस्टर

घरेलू (दे.) + इंवेस्टर (अं.) = घरेलू [128] घर संबंधी। निजी, घर का, पालतू आदि। यह विशेषण है।

इंवेस्टर [129] = यह संज्ञा है। इसका अर्थ है पूँजी निवेशक।

(उदा : घरेलू इंवेस्टर, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 7, 21 मई, 1995)

3.5.3 संस्कृत + अंग्रेज़ी

1. बृहत टर्न ओवर = (बृहत टर्न ओवर बृहत (सं.) + टर्न ओवर (अं.)

बृहत = बृहत [130] विशेषण है। इसका अर्थ है विशाल, बहुत बड़ा, घना, ऊँचा, पर्याप्त, पक्का आदि।

टर्न ओवर = टर्न ओवर [131] क्रिया है। इसका अर्थ है व्यवसाय करना।

बृहत टर्न ओवर का व्यापार के संबंध में अर्थ है विशाल कारोबार।

2) पूर्ण बैलंस शीट = पूर्ण (सं.) + बैलंसशिट (अं.)

पूर्ण = पूर्ण [132] इसका अर्थ है पूर्णतः भरा हुआ, पूरी तरह से युक्त, हर प्रकार से तृप्त और संतुष्ट आदि। ये विशेषण है।

बैलंसशीट = बैलंस शीट [133] संज्ञा है। इससे अर्थ हुआ तुलन-पत्र, वित्तीय स्थिति-विवरण आदि।

(उदा : पूर्ण बैलंसशीट, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 3, 8-21 मई, '95)

3.5.4 देशज + संस्कृत

ब्याज दरों = ब्याज (देशज) + दरों (संस्कृत)

ब्याज = ब्याज [134] पुल्लिग है। मूलधन के अतिरिक्त दिया जाने वाला धन सूद या ब्याज कहलाता है।

दर : दर [135] स्त्रीलिंग है। इसका अर्थ हुआ सूद की दर)

(उदा : ब्याज दरों, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 8, 8-21 मई, '95)

3.5.5 संस्कृत + देशज + संस्कृत

सकल घरेलू उत्पाद

1. सकल (सं.) + घरेलू (दे) + उत्पाद (सं.)

सकल = सकल [136] यह विशेषण है। इसका अर्थ है समस्त या कुल। व्यावसायिक क्षेत्र में इसका संबंध 'कुल' से है। अंग्रेज़ी में यह Gross कहलाता है।

घरेलू = घरेलू [137] विशेषण है। घर संबंधी, निजी, घर आदि। अंग्रेज़ी में इसे Domestic कहा जाता है।

उत्पाद = उत्पाद [138] यह पुल्लिग है। इसका अर्थ है उत्पादित वस्तु, उपज या पैदावार। अंग्रेज़ी में यह Product कहलाता है।

सकल घरेलू उत्पाद का अंग्रेज़ी में अर्थ हुआ Gross Domestic Product.

(उदा : सकल घरेलू उत्पाद, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 8-9 मई, '95)

3.5.6 उर्दू + अंग्रेज़ी

बाज़ार तकनीक = बाज़ार (उ.) + तकनीक (अं.)

बाज़ार = बाज़ार [139] पुल्लिग है। इसका अर्थ है, हाट, मंडी या पैंठ।

तकनीक : तकनीक [140] स्त्री लिंग है।

'तकनीक'* शब्द निर्माण की उत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि यूनानी भाषा में बढ़ई के लिए पुराना शब्द है Tekon. आगे चलकर 'शिल्प' या उपयोगी कला के लिए इससे शब्द बना Tekne उदाहरण के लिए जहाज़ निर्माण तथा धातुशिल्प को यूनानी में Tekhne कहते रहे और आगे चलकर Tekhne से विशेषण बना

Tecknikos, जिसका अर्थ हुआ 'शिल्पीय' या 'तकनीकी'। Technikos से ही अंग्रेज़ी शब्द Technic तथा Technique बने। Technique ही 'तकनीक' है।

(उदा : बाज़ार तकनीक, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 10. 8-21 मई, '95)

3.5.7 **अंग्रेज़ी + उर्दू**

1. **डिपॉजिटरी कानून =** डिपॉजिटरी (अं.) + कानून (उ.)।

डिपॉजिटरी [142] संज्ञा है। इसका अर्थ हुआ जमा करने का स्थान।

कानून [143] **=** यह पुल्लिग है। इसका अर्थ है। राजनियम, विधि विधान, आदि।

(उदा : डिपॉजिटरी कानून, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 12, 8-21 मई, '95)

2) **साइकिल पुर्जे =** साइकिल (अं.) + पुर्जे (उ.)

साइकिल = साइकिल [144] पुल्लिग है। मूलत: साइकिल* अंग्रेज़ी शब्द Bicycle है। Bicycle. इसमें लैटिक 'बाई' (तुलनीय, बारह, बाइस, बावन, बासठ, बानवे में बां) तो 'दो' है, और साइकिल ग्रीक का Kyklos है, जिसका अर्थ 'वृत्त' या 'पहिया' है। इस तरह 'बाइसाइकिल' का अर्थ है 'दो पहिया' या 'तो पहियों वाली'। बाद में 'बाइ' के लोप हो जाने से 'साइकिल' बच रहा। यह ध्यान देने की बात है कि संस्कृत 'द्वि' में 'द' के लोप से बचा जो 'वि' या 'बि' है वही लैटिन का B है तथा दोनों के अर्थ 'दो' है।

(उदा : साइकिल पुर्जे, कैपिटल मार्केट, पृ. सं. 12, 8-21 मई, '95)

3.5.8 **अंग्रेज़ी + संस्कृत**

1. सीमेंट प्लांट योजना (अंग्रेज़ी+अंग्रेज़ी+योजना)

सीमेंट = सीमेंट [146] यह मूलत: यह शब्द लैटिन भाषा का Caementuns है, जिसका अर्थ है 'पत्थर के टुकड़े' जो मकान बनाने के काम आते हैं। यह शब्द मूलत: लैटिन Caedere से बना है, जिसका अर्थ होता है

'काटना' या 'टुकड़े करना'। बाद में पत्थर के इन्हीं टुकड़ों को पीसकर सीमेंट बनाया जाने लगा, अत: Caementuns के आधार प्राचीन फ्रांसीसी में Cement शब्द आज के अर्थ में प्रचलित हुआ। वहाँ से यह शब्द Cement रूप में अंग्रेज़ी में आया, और फिर वहाँ से कई भाषाओं में पहुँच गया।

प्लांट = प्लांट [147] यह पुल्लिग है। इसका हिंदी अर्थ है षड्यंत्र, कारखाना।

योजना = योजना [148] स्त्रीलिंग है। इसका अर्थ है कार्य करने की रूपरेखा, प्रबंध, प्रयोग व्यवहार आदि।

(उदा : सीमेंट प्लांट योजना, कैपिटल मार्केट, पृ. सं. 13, 8-21 मई, '95)

2) एयरकूल कंप्रेसिंग संयंत्र :

एयरकूल कंप्रेसिंग (अं.) + संयंत्र (सं.)

एयरकूल = एयरकूल [149] यह विशेषण है। इसका हिंदी अर्थ है वायुशीतित।

कंप्रेसिंग = कंप्रेसिंग [150] यह विशेषण है। इसका हिंदी अर्थ है संपीडन या संकुचन।

संयंत्र = संयंत्र [151] यह विशेष्य है। इसका अर्थ है यंत्रों का औजारों का समूह या कारखाना।

(उदा : एयरकूल कंप्रेसिंग संयंत्र, कैपिटल मार्केट, पृ. सं. 13, 8-21, '95)

3.5.9 संस्कृत + देशज

1. वित्तीय घाटे = वित्तीय (सं.) + घाटे (दे)

वित्तीय = वित्तीय [152] वित्त संबंधी, वित्त का अर्थ है धन संपत्ति। यह विशेषण है।

घाटे = घाटे [153] का हिंदी अर्थ नुकसान हानि, घटना, कमी आदि। यह पुल्लिग है।

(उदा : दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 16, 8-21 मई, '95)

2) उद्योग औसत = उद्योग (सं.) + औसत (उ.)

उद्योग = उद्योग [154] यह पुल्लिग है। इसका हिंदी अर्थ यत्न, श्रम, उद्यग है।

औसत = औसत [155] यह पुल्लिग है। इसका हिंदी अर्थ है बीच की संख्या, माध्यम, बीच का साधारण आदि।

(उदा : उद्योग औसत, दलाल स्ट्रीट, पृ. सं. 17, 8-21 मई, '95)

3.6 विज्ञान पत्रकारिता में संकर शब्दावली

3.6.1 अंग्रेज़ी + संस्कृत

इलेक्ट्रॉनिकी विनिर्माण

इलेक्ट्रॉनिकी (अं.) + विनिर्माण (सं.)

इलेक्ट्रॉनिकी [156] **=** यह संज्ञा है। इसका अर्थ है इलेक्ट्रॉनिक से संबद्ध।

विनिर्माण = विनिर्माण [157]

वि = 'वि' का अर्थ है विपरीतता, अलगाव।

निर्माण (पुल्लिग) में 'वि' उपसर्ग लगने से विनिर्माण बनता है।

(उदा : इलेक्ट्रॉनिकी विनिर्माण, योजना, पृ. सं. 28, 1-15 नवम्बर, 1990)

2) कोरोनरी धमनियों [159] : यह विशेषण है। इसका अर्थ है चक्रीयधमनी, धमनी आदि।

(उदा : कोरोनरी धमनियों, राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 3, 23 जनवरी, 2001)

3) एड्रीनल ग्रंथि = एड्रीनल ग्रंथि [160] यह संज्ञा है। इसका अर्थ है अधिवृक्क ग्रंथि।

(उदा : एड्रीनल ग्रंथि, राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 4, 23 जनवरी, 2001)

3.6.2 संस्कृत + उर्दू

संघटक पुर्जों = संघटक (सं.) + पुर्जों (उ.)

संघटक = संघटक [161] यह पुल्लिग है। इसका अर्थ है पूरी रचना के अवयव।

पुर्जा = पुर्जा [162] यह पुल्लिग है। इसका अर्थ है टुकड़ा, खंड, काटकर निकाला हुआ टुकड़ा, कतरन, यंत्र का कोई अंग, अंश।

(उदा : संघटक पुर्जा, योजना, पृ. सं. 28, 1-15, नवम्बर, 1990)

3.7 पारिवारिक पत्रकारिता में संकर शब्दावली

इसे 8 उप-वर्गों में पाया गया है।

3.7.1 संस्कृत + उर्दू

1. तुनक मिजाज

तुनक (सं.) + मिजाज (उ.)

तुनक = तुनक [163] यह विशेषण है। इसका अर्थ है पीड़न, कष्ट, पीड़ा, भेदन, चुभाना आदि।

मिजाज = मिजाज [164] विशेषण है। इसका अर्थ है जो बात-बात पर नाराज़ हो जाए, या चिड़चिड़ा।

(उदा : तुनक मिजाज, वनिता, पृ. सं. 26, जनवरी, 1998)

2) आधुनिक पोशाकें

आधुनिक (सं.) + पोशाकें (उ.)

आधुनिक = आधुनिक [165] विशेष है। इसका अर्थ है आजकल का, वर्तमान काल का।

पोशाकें = पोशाकें [166] स्त्रीलिंग है। पहनने का कपड़ा अथवा परिधान।

(उदा : आधुनिक पोशाक, वनिता, पृ. सं. 12, जनवरी, 2002)

3.7.2 देशज + उर्दू

बढ़िया (दे.) + नाश्ता (उ.)

1) बढ़िया नाश्ता = बढ़िया [167] यह विशेषण है। बढ़िया का अर्थ हुआ बहुत अच्छा।

नाश्ता = नाश्ता [168] विशेषण है। इसका अर्थ हुआ कलेवा।

(उदा : बढ़िया नाश्ता, गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 84, जनवरी, '98)

2) काले चिकट = काले (दे.) + चिकट (उ.)

काले = काले [169] विशेषण है। इसका अर्थ है श्याम, कलुषित।

चिकट = चिकट [170] यह विशषेण है। इसका हिंदी अर्थ है चिकनाहट या मैल से भरा हुआ। अत्याधिक गंदा, चिपचिपा, लसीला आदि।

(उदा : काले चिकट, वनिता, पृ. सं. 51, जनवरी, '98)

3.7.3 देशज + संस्कृत

1. तनाव ग्रस्त = तनाव (दे.) + ग्रस्त (सं.)

तनाव = तनाव [171] यह पुल्लिग है। तनने की अवस्था, खींचतान, द्वेष की स्थिति, टैंशन।

ग्रस्त = ग्रस्त [172] इसका अर्थ है पकड़ा हुआ, निकला हुआ, पीड़ित।

(उदा : तनावग्रस्त, गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 101, जनवरी, '98)

इसके अतिरिक्त उदाहरण जैसे :

2) साबुन - युक्त (वनिता, पृ. सं. 13, अक्तूबर, '99)

3) बेसन का मिश्रण (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 84, जनवरी, '98)

4) हक्के परिधान (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 132, जनवरी, '98)

3.7.4 संस्कृत + अंग्रेज़ी

सामान्य डिलीवरी = सामान्य (सं.) + डिलीवरी (अं.)

1. **सामान्य** = सामान्य [173] क्रिया विशेषण है। इसका अर्थ है आम, मामूली ढंग से।

2) **डिलीवरी** = डिलीवरी [174] स्त्रीलिंग है। बच्चे को जन्म देने की क्रिया। प्रसव आदि।

(उदा : सामान्य डिलीवरी, वनिता, पृ. सं. 90, अक्तूबर, '99)

इसके अतिरिक्त सुसज्जित + ड्राइंगरूम (वनिता, पृ. सं. 123, अक्तूबर, 2002)

3.7.5 अंग्रेज़ी + संस्कृत

1. **गैस त्रासदी** = गैस (अं.) + त्रासदी (सं.)

गैस = गैस* [175] स्त्रीलिंग है। ऐसा ज्वलनशील पदार्थ जो रोशनी उत्पन्न करता है।

* दुनिया की विभिन्न भाषाओं में शब्द या तो समाज की आवश्यकतानुसार बन जाते है या दूसरी भाषाओं से लिए जाते हैं।

किंतु कुछ ऐसे शब्द भी होते है जो बनाए जाते हैं। 'गैस' इसी प्रकार का एक शब्द है। कहा जाता है कि जे.बी. वान हेलमोंट (J.B. Van Helmont 1577-1644) ने यूनानी शब्द Chaos के आधार पर इस शब्द को बनाया। इस तरह मूलतः इसका अर्थ 'गड़बड़' था। आगे चलकर 'विशेष प्रकार की हवा' हुआ। हिंदी में तो

पेट्रोमैक्स, हँडिया आदि को भी 'गैस' कहते हैं, जिनमें मिट्टी का तेल जलकर रोशनी देता है।

2) त्रासदी = त्रासदी [176] स्त्रीलिंग है। इसका हिंदी अर्थ है दु:खांत रचना। अंग्रेज़ी में इसे 'ट्रैजेडी' कहा जाता है। ट्रैजेडी* का मूल अर्थ है 'बकरा-गीत'। ग्रीक भाषा में Trogos शब्द का अर्थ है 'बकरा' और Oide का अर्थ है 'गीत'। इस प्रकार पहेल 'ट्रैजेडी' एक प्रकार का गीत था। एक मतानुसार गाने वाला बकरे की खाल पहनकर गाता था, अत: यह गीत 'बकरा-गीत' कहलाया। अन्य लोगों के अनुसार, यह 'त्रास' और 'करुणा' का गीत बकरे के बलिदान के अवसर पर, पहले गाया जाता था, अत: 'बकरा-गीत' हुआ। एक तीसरे मत के अनुसार, गाने वाले को ईनाम में बकरा दिया जाता था, अत: बकरा-गीत कहा गया। इनमें से दूसरा मत अधिक मान्य है। वही करुणामय गीत धीरे-धीरे गीतिनाट्य का रूप लेता दुखांत नाटक बन गया।

(उदा : गैस त्रासदी, वनिदा, पृ. सं. 18, जनवरी, '98)

2) थ्रीलिंग अनुभव (वनिता, पृ. सं. 123, अक्तूबर, 2002)

3) लेटेस्ट पोशाक (वनिता, पृ. सं. 29, जनवरी, '98)

4) सिबेशियस ग्रंथियों (वनिता, पृ. सं. 18, जनवरी, '98)

3.7.6 देशज + अंग्रेज़ी

1. बढ़िया मेकअप = बढ़िया (दे.) + मेकअप (अं.)

बढ़िया = बढ़िया [177] विशेषण है। इसका अर्थ है बहुत अच्छा।

मेकअप = यह विषेषण है। मेकअप [178] का अर्थ है सजना, संवरना आदि।

(उदा : बढ़िया मेकअप, गृहशोभा, पृ. सं. 106, मार्च, '95)

इसके अतिरिक्त उदाहरण जैसे :-

2) बढ़िया क्वालिटी (गृहलक्ष्मी. पृ. सं. 132, जनवरी, '98)

3) जहरीली कौस (वनिता, पृ. सं. 49, जनवरी, '98)

3.7.7 अंग्रेज़ी + देशज

1. फैशन बाज़ार (आउटलुक, पृ. सं. 31, 21 अक्तूबर, 2002)

2. पेंटिंग हाशिये (आउटलुक, पृ. सं. 58, 21 अक्तूबर, 2002)

इन शब्दावलियों के अतिरिक्त हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न प्रकारों में कुछ सामान्य शब्दों (जो दैनंदिन व्यरहार में आ गये हैं) के प्रयोग भी दिखाई देते हैं। प्रमुख रूप से इस प्रकार के प्रयोग हमें महिला पत्रकारिता में मिलते हैं, जहाँ विभिन्न स्रोतों के शब्दों को प्रयोग में लाया गया है। इनमें से कुछ शब्दों को उनके विभिन्न स्रोतों के साथ उदाहरणवत देखा जा सकता है।

3.7.8 अंग्रेज़ी शब्द

क) सौंदर्य संबंधी

1. हेल्थ क्लब (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 105, जनवरी, '98)
2. ब्यूटीपार्लर (गृहशोभा, पृ. सं. 106, मार्च, 1995)
3. क्लीजिंग मिल्क (वनिता, 42, जनवरी, '98)
4. पेडीक्योर (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, '95)
5. वैक्सिग (वनिता, पृ. सं. 11, अक्तूबर, '99)
6. कंडीशनिंग (वनिता, पृ. सं. 98, अक्तूबर, '99)
7. हर्बल शैपू (गृहशोभा, पृ. सं. 106, मार्च, '95)
8. हेयर वीविंग (गृहशोभा, पृ. सं. 106, मार्च, '95)
9. लिपस्टिक (गृहशोभा, पृ. सं. 86, मार्च, '95)
10. लिपलाइनर (वनिता, पृ. सं. 45, जनवरी, '98)
11. कोल्डक्रीम (गृहशोभा, पृ. सं. 7, मार्च, '95)

12. नेलपॉलिश (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, '95)

13. परफ्यूम (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, '95)

14. रिमूवर (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, '95)

15. नेलफाइलर (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, '95)

16. नेलकटर (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, '95)

17. ग्लिसरीन (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, '95)

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित शब्द जो प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में देखखने को मिलते हैं। जैसे- बाबकट, स्टेपकटिंग, जींसटाप, टिपटाप, हेयरस्टाइल, मैनीक्योर, कोल्ड कंप्रेशन, नैपकित, आलपरपज़ क्रीम, प्लकर, थ्रेडिंग, सनबर्न, ब्लीच, पेस्ट, स्किन फैशनर, लिपग्लास, मास्चराइज़र, डिओडोरेंट, कोलोन, फिटिंग (उदा : गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, 1995) आदि।

ख) पाक-कला संबंधी

खाने-पीने की चीज़ें अथवा सामान्य वस्तुएँ (संज्ञा)

1. जायफल (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 145, जनवरी, 1998)

2. जावित्री (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 145, जनवरी, 1998)

3. मक्खन (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 145, जनवरी, 1998)

4. आइसिंग शूगर (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 145, जनवरी, 1998)

5. मैकरोनी (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

6. फ्रूटसाल्ट (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च, 1995)

7. नूडल (आउटलुक, पृ. सं. 53, अक्तूबर, 2002)

8. मिक्सी (आउटलुक, पृ. सं. 87, अक्तूबर, 2002)

9. लौंग (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 96, अक्तूबर, 2002)

10. इलायची (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 96, अक्तूबर, '98)

11. दालचीनी (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

12. पिस्ता (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 108, जनवरी, 1998)

13. बादाम (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 108, जनवरी, 1998)

14. बेकिंग (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

15. नमक (गृहशोभा, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

16. चीनी (गृहशोभा, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

17. हींग (गृहशोभा, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

18. गूदा (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 96, मार्च, 1995)

19. लोइयाँ (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

20. कुकर (गृहशोभा, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

21. विटामिन (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 78, जनवरी, 1998)

22. प्रोटीन (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 78, जनवरी, 1998)

23. आयरन (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 78, जनवरी, 1998)

24. चटनी (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 78, जनवरी, 1998)

25. डिटरजेंट (गृहशोभा, पृ. सं. 59, मार्च, 1995)

26. कार्बोहाइड्रेट (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 145, जनवरी, 1998)

27. रेस्तरां (आउटलुक, पृ. सं. 53, 21 अक्तूबर, 2002)

28. बेसन (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

29. सिरके (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

30. कच्चा आलू (गृहशोभा, पृ. सं. 95, मार्च, 1995)

31. प्याज (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

32. हरीधनिया (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

33. पनीर (गृहशोभा, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

34. अदरक

अदरक = अदरक [179]* पुल्लिग है। को जंजबील कहा जाता है। कुरान में जन्नत के वर्णन में वहाँ की अच्छी चीज़ों को गिनाने के प्रसंग में लिया गाय है। वस्तुत: 'अदरक' विश्व के काफी भागों में भारत से ही गया है। अत: इसके लिए नाम भी नहीं के शब्द से संबद्ध हैं। संस्कृति में इसके लिए एक शब्द है 'श्रृंगवेर' जो पालि में 'सिंगिवेर' रूप में मिलता हैं। यह वस्तु और इसके साथ यह नाम यहाँ से ईरान गया पहलवी सिंगबेर। वहाँ से यह शब्द आर्मेनियन, सीरियन आदि में भी गया। अरबी में जाकर यह 'जंजबील' हो गया जो कुरान में आया है। वहीं से यह शब्द यूरोप में गया। यूनानी Zingiberis, लैटिन Zingiber, फ्रांसीसी Gengibse, मध्यकालीन अंग्रेज़ी Gingivere, आधुनिक अंग्रेज़ी Ginger आदि। इस तरह मूलत: यह शब्द संस्कृत का है। कुछ लोग इसे द्रविड़ भाषा की उत्पत्ति मानते हैं। तुलना के लिए उन्होंने तमिल 'इंजि', मलयालम 'इंचि' शब्द दिए हैं, जिनका अर्थ 'जड़' है। यह शब्द मूलत: संस्कृत का ही है तथा यह दो शब्दों (से मिलकर बना है : श्रृंग+वेर 'श्रृंग' का अर्थ है 'सींग' तथा 'वेर' का अर्थ है 'शरीर', अर्थात् 'सींग से शरीरवाला'। कहना न होगा कि अदरक में सींग जैसे अंकुर उबरे रहते हैं। इस प्रसंग में यह उल्लेख्य है कि हिंदी में इसका प्रचलित नाम 'अदरक' है जिसे बहुत से लोग फ़ारसी का शब्द समझते हैं, किंतु वस्तुत: यह संस्कृत 'आर्द्रक' का तद्भव रूप है। अदरक काफी समय तक आर्द्र या नम या रसीला बना रहता है, अत: यह नाम पड़ा है।

(उदा : अदरक का टुकड़ा, गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 76, जनवरी, 1998)

मैदा = मैदा* [180] पुल्लिग है। इसका अर्थ है बहुत महीन आटा। भारत में आटे का प्रचार प्राचीन काल से है, किंतु मैदा का मूल शब्द यूनानी भाषा का Semidalis है, जो संस्कृत में आकर 'समिदा' हो गया। यही 'समिदा' हिंदी में आते-आते 'मैदा' हो गया।

(उदा : गृहलक्ष्मी, पृ. सं. जनवरी, 1998)

अजवायन = अजवायन [181] यह स्त्रीलिंग है। एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं। बकरे को बहुत पसंद होने के कारण ही इस पौधे का यह नाम पड़ा।

(उदा : अजवायन, गृहलक्ष्मी, पृ. सं. जनवरी, 1998)

सैंडविच : सैंडविच [182] एक खाद्य, जिसमें दो रोटियों या स्लाइसों के बीच में टमाटर, गोश्त, पनीर आदि कोई चीज़ दबी होती है। जॉन मौंटेगु नाम के एक अंग्रेज़ सज्जन 'सैंडविच' नामक स्थान के सामंत या अर्ल थे। इनका समय 1718-92 है। 'सैंडविच' के ये सामंत बहुत ही अनैतिकतापूर्ण जीवन बिताते थे। जुआ खेलने का इन्हें इतना अधिक शौक था, कि उसे छोड़कर खाना खाना भी इन्हें पसंद न था। एक बार खेलते-खेलते ही खाने की दृष्टि से इन्होंने अपने रसोइये से दो स्लाइसों के बीच तला गोमांस रखकर लाने की आज्ञा दी। एक हाथ में उसे लेकर खाते रहे और दूसरे हाथ से जुआ खेलते रहे। इस प्रकार यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ। तब से जब भी आवश्यकता हो, ये इसका प्रयोग करने लगे। ये सैंडविच के अर्थ थे, इसी कारण यह खाद्य उनके स्थान के नाम पर 'सैंडविच' कहलाया। जुआ खेलना चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, यह मानना पड़ेगा कि 'जुआ खेलने' ने ही विश्व को इतना बढ़िया और सुविधापूर्ण खाद्य 'सैंडविच' दिया।

पोस्तदाना (गृहशोभा, पृ. सं. 76, मार्च, 1995)

अमचूर (गृहशोभा, पृ. सं. 76, मार्च 1995)

गुलाब जल (गृहशोभा, पृ. सं. 95, मार्च, 1995)

राई (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च, 1995)

झावे (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च 1995)

विशेषण

1. तली भुनी (कादंबिनी, पृ. सं. 29, जनवरी '96)
2. कुनकुने (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, 1995)
3. हल्की भाप (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, 1995)
4. मवाद (गृहशोभा, पृ. सं. 76, मार्च, 1995)

ग) वस्तुएँ

1. बनियान (गृहशोभा, पृ. सं. 76, मार्च, 1995)
2. चारपाई (गृहशोभा, पृ. सं. 76, मार्च, 1995)
3. रुई (गृहशोभा, पृ. सं. 75, मार्च, 1995)
4. चौकी (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
5. बराती (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
6. मंडप (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
7. नेग (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
8. जूड़े (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
9. ठोड़ी (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
10. देहात (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
11. मायके (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
12. मंगेतर (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)
13. पटका (वनिता, पृ. सं. 23, अक्तूबर, 2002)

2) विशेषण + संज्ञा

1. ताजा दही (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च, 1995)
2. ब्रेड का चूरा (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च, 1995)
3. उबले हुए अंडे (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च, 1995)
4. भूनी सूजी (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च, 1995)
5. पीसी हींग (गृहशोभा, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)
6. अदरक लहसुन (गृहशोभा, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

7. सोयाबीन (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च, 1995)

8. गरम मसाला (गृहशोभा, पृ. सं. 77, मार्च 1995)

9. मूँग की दाल (गृहशोभा, पृ. सं. 78, मार्च, 1995)

10. हवा बंद डिब्बे (गृहशोभा, पृ. सं. 82, मार्च, 1995)

11. तलने के लिए तेल (गृहशोभा, पृ. सं. 76, मार्च, 1995)

घ) स्वास्थ्य-संबंधी

1. एलर्जी (कादंबिनी, पृ. सं. 182, जनवरी, 1996)

2. हार्मोन (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 144, जनवरी, 1998)

3. इंफेक्शन (वनिता, पृ. सं. 14, अक्तूबर, 2001)

4. प्लास्टिक सर्जरी (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 145, जनवरी, 1998)

ङ) सामान्य

1. कटआउट (माया, पृ. सं. 52, 15 जनवरी, 1998)

2. पार्टी (गृहलक्ष्मी, पृ. सं. 108, जनवरी, 1998)

3. एम्ब्राइडरी (आउटलुक, पृ. सं. 32, अक्तूबर 2002)

4. पोस्टर (माया, पृ. सं. 53, जनवरी, 1998)

इस वर्ग में संस्कृत-हिंदी के योग से बने संकर शब्दों की संख्या संस्कृत के साथ अन्य भाषाओं के तत्वों के योग से बने शब्दों की संख्या से कहीं अधिक है। इसी कारण हिंदी में इनका अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

3.4 निष्कर्ष

जब हमारे सामने कोई नई वस्तु आती है और उसके नामकरण की समस्या होती है, तो इस समस्या के हल के लिए संकर शब्द निर्माण होता है। इस प्रकार वस्तु के नामकरण के समय दो प्रचलित शब्द अथवा उनके अवयव

को प्रयोग में लाते हैं, जिससे नाम सब दृष्टियों से ठीक बैठें।

हिंदी शब्द समूह में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी आदि विभिन्न प्रकार के शब्द हैं, किन्तु कभी-कभी एक वर्ग के शब्दों से भाव बेकार नहीं हो पाता। इस अभाव की पूर्ति के लिए शब्द समूह के दो या दो से अधिक भाषा वर्गों के अवयवों को मिलाकर संकर शब्द निर्माण किया जाता है। यह बहुभाषी समाज और संदर्भ में सहज और स्वाभाविक है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि संकर शब्द निर्माण का कोई भी कारण हो, किन्तु मूल उद्देश्य और लक्ष्य भाव अभिव्यक्ति के लिए शब्द अभाव की पूर्ति है।

इस अध्याय में विवेचित शब्दों की रचना और उदाहरण से परिलक्षित होता है कि जिन भाषा समूहों से हिंदी का संपर्क रहा है उन सबसे विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा निर्माण प्रक्रिया को संपन्न किया गया है। शब्द में संज्ञा एवं क्रिया, विशेषण, उपसर्ग और प्रत्यय इस प्रक्रिया में हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा अन्य क्षेत्रों की शब्दावली के निर्माण की संभावनाएँ भी खुलती हैं।

संदर्भिका

तृतीय अध्याय में लिये गये उद्धरणों के स्त्रोतों की विवरणिका

रन	(1)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	
कैप्टन	(2)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 176
स्पिनर	(3)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 304
क्रिकेटर	(4)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 279
टेस्ट मैच	(5)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055	पृ. सं. 729
अम्पायर	(6)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055.	पृ. सं. 778
एक्टिंग	(7)	फादर कामिल बुल्के एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055	पृ. सं. 12
आस्ट्रेलियाई	(8)	चैम्बर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लि.	पृ. सं. 74
*		शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।	पृ. सं. 19
एंट्री	(9)	चैम्बर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लि.	पृ. सं. 406
फिल्म	(10)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद एंड कंपनी लि. रामनगर, नई दिल्ली-110 055	पृ. सं. 242
नंबर	(11)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद एंड कंपनी लि. रामनगर, नई दिल्ली-110 055	पृ. सं. 434
डुप्लीकेट	(12)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद एंड कंपनी लि. रामनगर, नई दिल्ली-110 055	पृ. सं. 198
सिने	(13)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लि.	पृ. सं. 211
सेक्सी	(14)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लि.	पृ . सं. 1226

फिल्माने	(15)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली, 110 055.	पृ. सं. 485
सलाद	(16)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1167
पार्टी	(17)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 940
ड्रेस	(18)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055.	पृ. सं. 194
डिज़ाइनरों	(19)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055.	पृ. सं. 170
स्टेशन	(20)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055.	पृ. सं. 672
बैंकों	(21)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055.	पृ. सं. 55
*		शब्दों की कहानी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	पृ. सं. 78
बीमा	(22)	शब्दों की कहानी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	पृ. सं. 76
*		बैंकिंग शब्दावली, किताब घर, नई दिल्ली-110 002	पृ. सं. 110
प्रमोटर	(23)	बैंकिंग शब्दावली, किताब घर, नई दिल्ली-110 002	पृ. सं. 347
शेयर होल्डर	(24)	फादर कामिल बुल्के, एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055.	पृ. सं. 620
प्रॉडक्ट	(25)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1036
फंड	(26)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 506
इश्यु	(27)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 677
इंवेस्टर	(28)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 670
इंस्टिट्यूशनों	(29)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 658
प्लॉटों	(30)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 989
इलेक्ट्रॉनिकी	(31)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 389

कैपिसटरों	(32)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 175
फेराइटों	(33)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 460
सर्किटों	(34)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 212
रिसीवरों	(35)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1093
वाइड	(36)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1586
स्विंग	(37)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1369
शॉर्ट	(38)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1240
ओलंपिक	(39)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 893
सर्वोच्च	(40)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।	पृ. सं. 813
स्कोर	(41)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1190
पग	(42)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।	पृ. सं. 465
बाधा	(43)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।	पृ. सं. 589
आउट	(44)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 908+909
विश्व	(45)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।	पृ. सं. 755+756
रिकार्ड	(46)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 1096
विश्व	(47)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।	पृ. सं. 755+756
कप	(48)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड	पृ. सं. 288
बेहतरीन	(49)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।	पृ. सं. 604
पारी	(50)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली।	पृ. सं. 499

यादगार	(51)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 681
प्रदर्शन	(52)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 681
शतक	(53)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 767
शतकीय	(53 ए)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 927
साझेदारी	(54)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 819
दोहरा	(55)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 409
शतक	(56)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 927
घरेलू	(57)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 233
परिस्थितियाँ	(58)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 486
स्थिति	(59)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 855
परि	(60)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 921
सीज़न	(61)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लि. संपादक डॉ. सुरेश अवस्थी, डॉ. इंदुजा अवस्थी	पृ. सं. 1203
वर्ष	(62)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 735

क्रिकेट	(63)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स लि.	पृ. सं. 279
समीक्षक	(64)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 807
कमेंटेटर	(65)	———————-	———
जबर	(66)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 289
दस्त	(67)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 289
क्षेत्र	(68)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 187
रक्षण	(69)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 689
फील्डिग	(70)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स, संपादक : डॉ. सुरेश अवस्थी, डॉ. इंदुजा अवस्थी	पृ. सं. 463
खराब	(71)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 191
पिच	(72)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 981
टेस्ट	(73)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 1404
श्रृंखला	(74)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 782
विस्फोटक	(75)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 758
बल्लेबाज़	(76)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 583
संयुक्त	(77)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 791

मेज़बानी	(78)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 671
ड्रामा	(79)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 342
*	(79 ए)	शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी	पृ. सं. 51
बाज़ी	(80)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 588
चुस्त	(81)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 264
		राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी,	
फील्डिंग	(82)	राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 463
एक	(83)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 126
दिवसीय	(83 ए)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 394
प्रतिष्ठित	(84)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 535
बैनर	(85)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 605
मुहूर्त	(86)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली	पृ. सं. 667
शॉट	(87)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 1241
सिनेमा	(88)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 828
*	(89)	शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	पृ. सं. 94
फिल्मी	(90)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 564
परदे	(91)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 476

एक्शन	(92)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 11
भरा	(93)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 613
गर्म	(94)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 208
हीरोइन	(95)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 585
काफी	(96)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 159
लेट	(97)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 718
सेक्स	(98)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 1226
पीड़ित	(99)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 506
पॉप	(100)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 1003
शैली	(101)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 780
कोर्ट	(102)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 271
सम्मनों	(103)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 808
एडवांस	(104)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 15
खाता	(105)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 193
घरेलू	(106)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 233
ट्रैजडीज़	(107)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 1443
निजी	(108)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 442
ज़िंदगी	(109)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 302
अतिरिक्त	(110)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 17
खूबी	(111)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 199
तरोताजा	(112)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 354
तर	(113)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 353
ताजा	(114)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 358
अभिनेत्री	(115)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 45
अभि	(116)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 44

नेत्री	(117)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ सं. 458
पोंगा	(118)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 521
पंडित	(119)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 463
बनावटी	(120)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 578
पन	(121)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 930
रस्म	(122)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 695
अदायगी	(123)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 19
नेट	(124)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 457
घाटा	(125)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 234
दलाल	(126)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 386
स्ट्रीट	(127)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 854
घरेलू	(128)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 233
इंवेस्टर	(129)	चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 670
बृहत	(130)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 601
टर्न ओवर	(131)	चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 1469
पूर्व	(132)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 514
बैलेंस शीट	(133)	चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 84
ब्याज	(134)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 607
दर	(135)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 607
सकल	(136)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 795
घरेलू	(137)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 233
उत्पाद	(138)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 110
बाज़ार	(139)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 588
तकनीक	(140)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 347
*	(141)	शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी	पृ. सं. 52

डिपॉज़िटरी	(142)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 318
कानून	(143)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 159
साइकिल	(144)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 818
*	(145)	शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी	पृ. सं. 94
सीमेंट	(146)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 834
*		शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी	पृ. सं. 94
प्लांट	(147)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 554
योजना	(148)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 685
एयरकूल	(149)	चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 24
कंप्रेसिंग	(150)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 241
संयंत्र	(151)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 791
वित्तीय	(152)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 746
घाटे	(153)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 234
उद्योग	(154)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 113
औसत	(155)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 134
इलेक्ट्रानिकी	(156)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 101
विनिर्माण	(157)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 922
निर्माण	(158)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 449
कोरोनरी धमनी	(159)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 264
एड्रीनल ग्रंथि	(160)	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, एलाइड पब्लिशर्स	पृ. सं. 15
संघटक	(161)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 786
पुर्जा	(162)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 510
तुनक	(163)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 366
मिजाज	(164)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 366

आधुनिक	(165)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 84
पोशाक	(166)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 522
बढ़िया	(167)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 575
नाश्ता	(168)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 438
काले	(169)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 164
चिक्कट	(170)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 257
तनाव	(171)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 350
ग्रस्त	(172)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 229
सामान्य	(173)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 822
डिलीवरी	(174)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 340
गैस	(175)	राजपाल हिंदी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 224
*	(175ए)	शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी	पृ. सं. 37
त्रासदी	(176)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 374
ट्रैजेडी *	(176)	शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी	पृ. सं. 48
बढ़िया	(177)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 670
मेकअप	(178)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 560
अदरक *	(179)	शब्दों की कहानी, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 137
मैदा	(180)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 673
*	(180ए)	शब्दों की कहानी, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 84
अजवायन *	(181)	राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 13
सैंडविच *	(182)	शब्दों की कहानी, डॉ. हरदेव बाहरी	पृ. सं. 96

संदर्भिका

तृतीय अध्याय में उपयोग की गई पत्रिकाओं की सूची

क्र.सं.	समाचार पत्र व पत्रिका का नाम	प्रकाशक का पता
1.	क्रिकेट भारती	ए-7, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110 009
2.	क्रिकेट वर्ल्ड	7, डीडीए, कमर्शियल, सेंटर नं. 5, सेक्टर-1, रोहिणी, नई दिल्ली-110 085
3.	क्रिकेट टुडे	एक्स-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-20
4.	गृहलक्ष्मी	डायमंड मैगज़ीस, एचओ, एक्स-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110 020
5.	जी स्टार	62, वजु कोटक मार्ग, मुम्बई-400 001.
6.	गृहशोभा	दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110 055.
7.	रंगभूमि	रंगभूमि भवन, 5ए/15, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
8.	वनिता	ए-146, पहली मंजिल, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-110 024
9.	फिल्मी दुनिया	'रतन शिखा', 16 दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
10.	कादंबिनी	आंचलिक कार्यालय, जीवन भारती, 13वीं मंजिल, टावर-2, 124, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110 001.
11.	आउटलुक	ए-बी-10, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-110 029
12.	योजना	प्रकाशन, विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110 001.
13.	दलाल स्ट्रीट जनरल	105, श्रेयस बिल्डिग, न्यूलिंक रोड, मोन्जिनिस फैक्टरी के पीछे, अंधेरी (पश्चिम), मुम्बई-400 058

14.	कैपिटल मार्केट	401, स्वास्तिक चैंबर्स, सायन ट्राम्बे रोड, चेंबूर, मुंबई-400 071
15.	इंडिया टुडे	लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110 001.
16.	जनसत्ता	संपादकीय सलाहकार, प्रभाष जोशी, 9-10, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली

पुस्तकें व शब्दकोश

17.	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश	एलाइड पब्लिशर्स लि., डॉ. सुरेश अवस्थी, डॉ. इंदुजा अवस्थी
18.	फादर कामिल बुल्के	एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055
19.	शब्दों की कहानी	डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
20.	बैंकिंग शब्दावली	किताब घर, नई दिल्ली-110 002
21.	राजपाल हिंदी शब्दकोश	डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली
22.	हिंदी शब्द समूह का विकास	नरेश मिश्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

चतुर्थ अध्याय

हिंदी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की भूमिका

चतुर्थ अध्याय

हिंदी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की भूमिका

4.0 प्रस्तावना

4.1 हिंदी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियाँ : परिचय

4.1.1 मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.1.2 गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.1.3 क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ

4.1.4 सुझावात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.1.5 कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियाँ

4.2 हिंदी पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचन

4.2.1 साहित्यिक क्षेत्र में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.2 विज्ञान के क्षेत्र में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.3 फिल्म पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.4 व्यावसायिक पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.5 खेलपत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.2.6 पारिवारिक पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

4.3 हिंदी पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचन :

4.3.1 साहित्यिक क्षेत्र में गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.3.2 फिल्म पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.3.3 खेलकूद पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

4.4 हिंदी पत्रकारिता में क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचन :

4.4.1 व्यावसायिक पत्रकारिता में क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ

4.4.2 हिंदी पत्रकारिता में सुझावात्मक अभिव्यक्तियों का स्रोतगत विवेचना

4.4.3 हिंदी पत्रकारिता में कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियाँ

4.5 निष्कर्ष :

4.0 प्रस्तावना :

अभिव्यक्तियाँ किसी भाव को व्यक्त करने के विशेष ढंग से संबद्ध होती हैं। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों या भावों की अभिव्यक्ति के लिए हर भाषा में अनेक प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता है। भाषा में मुहावरे, अभिव्यक्तियों का अच्छा उदाहरण है। मुहावरों द्वारा किसी स्थिति, घटना या विवरण को बड़े ही व्यंजनात्मक ढंग से प्रकट किया जाता है।

हिंदी में पत्रकारिता के विकास के साथ-साथ हिंदी की नई अभिव्यक्तियों का विकास हुआ। कई विषय क्षेत्र ऐसे हैं, जो हिंदी पत्रकारिता में पाश्चात्य देशों के माध्यम से आये। खेलकूद, फिल्म आदि प्रयुक्तियाँ अंग्रेज़ी के माध्यम से ही हिंदी में विकसित हुई। इसीलिए फिल्म और खेलकूद से संबंधित संकल्पनाएँ पहले हिंदी में नहीं थी। अनुवाद के माध्यम से इनका विकास किया गया। अंग्रेज़ी संकल्पनाओं के लिए हिंदी में शब्द निर्मित किये गये और इन विषयों की अनेक अभिव्यक्तियाँ हिंदी ने स्वत: स्वीकार की। आज क्रिकेट आदि क्षेत्रों में हिंदी की अनेक अभिव्यक्तियाँ खूब प्रचलित हैं और पत्र-पत्रिकाओं का पाठक इन अभिव्यक्तियों के प्रयोग से अपने को पूरी तरह जोड़ चुका है।

पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियाँ किसी एक प्रयुक्ति क्षेत्र में नहीं, बल्कि सभी विषयों में प्रयुक्त मिलती है।

अभिव्यक्ति के प्रयोग से पत्रकारिता की भाषा में प्रवाह आता है। उसकी प्रभावशीलता बढ़ती है और हिंदी भाषा की अभिव्यंजना शक्ति को इससे विकास मिलता है। किसी भी सहज और सामान्य भाषा के लिए अभिव्यक्तियों से युक्त वाक्यों का प्रयोग बहुत आवश्यक होता है। सामान्य जीवन में भी हम अपनी बात को विशेष ढंग से कहने के लिए इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं।

हिंदी पत्रकारिता ने विभिन्न विषय क्षेत्रों में सामान्य जीवन में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों को अपनाया है और विषय क्षेत्र को आवश्यकताओं के अनुसार हिंदी में नई-नई अभिव्यक्तियों का निर्माण किया है। इनके प्रयोग से पत्रकारिता की भाषा में सहजता और प्रवाहता के साथ-साथ हिंदी भाषा के विकास को भी सहायता मिली है।

प्रस्तुत अध्ययन में इन अभिव्यक्तियों को विभिन्न प्रकारों में बाँटकर पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों की प्रयुक्तियों के संदर्भ में देखा गया है। पत्रकारिता की इन अभिव्यक्तियों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया गया।

क) मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

ख) गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ

ग) क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ

घ) सुझावात्मक अभिव्यक्तियाँ

ङ) कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियाँ

4.1 हिंदी पत्रकारिता में प्रयुक्त अभिव्यक्तियाँ : परिचय

4.1.1 मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ :-

मुहावरे किसी भी भाषा की अभिव्यक्ति -क्षमता और शक्ति का प्रमाण देते हैं। मुहावरेदार भाषा का प्रभाव जनमानस पर सबसे अधिक पड़ता है, क्योंकि इनका संबंध हमारे जीवन और अनुभवों से रहता है। साहित्य में भी मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करने वाले लेखकों की कृतियाँ सम्मानित हुई हैं और लोकप्रिय भी, जैसे- प्रेमचंद, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर आदि।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करने वाला पत्रकार अपनी बात को सशक्त ढंग से और संप्रेषणीय बनाने में प्रयुक्त कर पाता है। आज हिंदी पत्रकारिता में इंडिया टुडे, माया, आउटलुक और पारिवारिक पत्रिकाएँ हैं, जैसे- गृहशोभा, गृहलक्ष्मी, रंगभूमि, माधुरी, मेरी सहेली, मनोरमा, वनिता, सेवन हिल्स आदि।

खेल पत्रिकाएँ :- क्रिकेट भारती, क्रिकेट टुडे, क्रिकेट वर्ल्ड।

फिल्मी पत्रिकाएँ :- फिल्मी कलियाँ, फिल्मी दुनिया, चित्रलेखा आदि पत्रिकाओं को जो सफलता मिली है, इसमें मुहावरेदार अभिव्यक्ति का प्रयोग खुल कर किया जाता है, जिससे पाठक पर उसका अपेक्षित प्रभाव पड़ता है और पाठक उसके कहने का ढंग या अभिव्यक्तीकरण पद्धति पर मुग्ध हो जाता है।

हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में मुहावेदार अभिव्यक्ति का प्रयोग समान रूप से मिलता है। वे चाहे साहित्यिक या खेलकूद संबंधी, फिल्म संबंधी या विज्ञान, व्यवसाय संबंधी सूचनाएँ हो या महिला संबंधी, सभी में मुहावरों का प्रयोग करके हिंदी भाषा के उद्गम्य और संप्रेषणीय बनाने का प्रयोग।

हिंदी पत्रकारिता में मुहावरेदार भाषा का व्यापक प्रयोग ही इसके महत्व और क्षमता पर हमारा विश्वास स्थापित करता है।

4.1.2 गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ :

इन अभिव्यक्तियों का संबंध किसी विषय और संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। इनमें से अनेक अभिव्यक्तियाँ हिंदी में निर्मित हैं, क्योंकि पहले इनका प्रयोग कम दिखाई देता है। हिंदी पत्रकारिता धीरे-धीरे इन्हें विकसित कर लेती है और फिर इनका प्रयोग करते हुए इन विषय क्षेत्रों में इन अभिव्यक्तियों को स्थापित कर लेती है।

मूलरूप से गुणात्मक अभिव्यक्तियाँ साहित्यिक पत्रकारिता, खेलकूद, फिल्म पत्रकारिता के क्षेत्र में अधिक मिलती हैं।

साहित्यिक क्षेत्र में विचारों या तर्कों को प्रस्तुत करने के लिए निबंधों या समीक्षा में इनका प्रयोग किया जाता है, जिससे साहित्यिक क्षेत्र की स्थितियों पर प्रकाश पड़ता है। इसी प्रकार फिल्म और खेल के क्षेत्र में जो क्रियाकलाप होते हैं उन्हें बताने के लिए ही गुणात्मक अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। ये धीरे-धीरे इन क्षेत्रों की स्थिर अभिव्यक्तियाँ बन गयी हैं।

4.1.3 क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ

विशेष रूप से क्रियात्मक अभिव्यक्तियों का प्रयोग व्यावसायिक पत्रकारिता में मिलता है। साथ ही परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियों का भी प्रयोग होता है।

4.1.4 सुझावात्मक अभिव्यक्तियाँ

सुझावात्मक अभिव्यक्तियों का विशेष प्रयोग महिला पत्रकारिता में मिलता है। जहाँ सौंदर्य-संबंधी, पाक कला संबंधी, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई निर्देश देने के लिए इस प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता है।

ये प्रयोग - क्या करने चाहिए क्या नहीं, कब व कैसे करने चाहिए - ऐसी स्थितियों पर सुझाव देते हैं, चूँकि विषय क्षेत्र की दृष्टि से पारिवारिक पत्रकारिता में पाक-कला आदि पर काफी सामग्री दी जाती है।

4.1.5 कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियाँ

किसी भी अभिव्यक्ति को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए लोकोक्तियों, कहावतों, मुहावरों का सहारा लिया जाता है। कथनपरक अभिव्यक्तियाँ सामान्य रूप से पारिवारिक पत्रकारिता में दिखाई देती हैं। वैसे इस प्रकार की अभिव्यक्ति राजनैतिक समाचारों, समीक्षापरक लेखों में भी प्रयुक्त होती हैं।

साहित्यिक क्षेत्र में उपमाओं का बढ़-चढ़कर प्रयोग किया जाता है। किसी भी अभिव्यक्ति को दर्शाने के लिए उसमें तरह-तरह की उपमाएँ देकर उसमें चार चांद लगा दिया जाता है। उपमा के साथ निर्मित अभिव्यक्ति का प्रयोग भी पारिवारिक पत्रकारिता में मिलता है।

4.2 हिंदी पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों का स्त्रोतगत विवेचन

4.2.1 हिंदी पत्रिकारिता के साहित्यिक क्षेत्र में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

1. नौकरानी ढूँढ़ने के लिए सौ पापड़ बेलने पढ़ते हैं। — वनिता, (78), अक्तूबर '99.
   (सौ पापड़ बेलना)
2. वह कीचड़ में कमल जैसी थीं। — गृहलक्ष्मी, (35), जनवरी '98.
   (कीचड़ में कमल)
3. मेघना तो आग-बबूला हो गई। — गृहलक्ष्मी, (60), जनवरी '98.
   (आग-बबूला)
4. जो रोटी का जुगाड़ ढूँढ़ती पता नहीं कहाँ चली गई। — माधुरी, (44) फरवरी '97.
   (रोटी का जुगाड़ करना)
5. अलाय-बलाय कल्पनाएँ करती रहती है। — माधुरी, (47), फरवरी '97.
   (अलाय-बलाय)
6. अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे! — माधुरी, (50), फरवरी '97.
7. कल से बाई आँख फड़क रही है। — गृहशोभा, (26), मार्च, '95.
   (आँख फड़कना)
8. पैर कब्र में जाने को है। — गृहशोभा (26), मार्च, '95.
   (पैर कब्र में जाना)
9. मन की भूख घर की चारदीवारी में ही पूरी हो। — मेरी सहेली, (46), अगस्त '97.
   (घर की चारदीवारी)
10. प्रेम की धज्जियाँ उड़ा कर रख दें। — मेरी सहेली, (60), अगस्त '97.
    (धज्जियाँ उड़ाना)

4.2.2 हिंदी पत्रकारिता में विज्ञान के क्षेत्र में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

1. चवालीस साल बाद भी आसमान में तैर रहा है। कुरुक्षेत्र, (6), नवम्बर '91.
   (आसमान में तैरना)
2. वे अपना स्वर ऊँचा उठाते रहे। कुरुक्षेत्र, (6), नवम्बर '91.
   (स्वर ऊँचा उठाना)
3. रोजगार के दूसरे साधन भी मुहैया करने है। कुरुक्षेत्र, (7), नवम्बर '91.
   (साधन मुहैया करना)
4. धीरे-धीरे अपने पांवों पर खड़ा हो सकेगा। कुरुक्षेत्र, (7), नवम्बर '91.
   (पांवों पर खड़ा होना)
5. सपनों को साकार करने में सफलता प्राप्त हो सकेगी। कुरुक्षेत्र, (14), नवम्बर '91.
   (सपनों को साकार करना)
6. अनावश्यक नियंत्रण के शिकंजों से मुक्त करके। कुरुक्षेत्र, (15), नवम्बर '91.
   (शिकंजों से मुक्त करना)
7. विश्व की घटनाओं ने करवट ली है। कुरुक्षेत्र, (6), नवम्बर '91.
   (करवट लेना)
8. ज्यादा अंधेरे में गुम न हो जाए। कुरुक्षेत्र, (15), नवम्बर '91.
   (अंधेरे में गुम हो जाना)
9. अर्थव्यवस्था रूपी महल की नींव ईंट है। कुरुक्षेत्र, (15).
   (नींव की ईंट)
10. पैरों पर ही खड़े रहना सीखना होगा। कुरुक्षेत्र, (19), नवम्बर '91.
   (पैरों पर ही खड़े रहना)
11. रेशमी वस्त्रों पर कहर टूटा। कुरुक्षेत्र, (27), नवम्बर '91.
   (कहर टूटना)
12. उद्योगों की हालत खस्ता होने लगी। कुरुक्षेत्र, (27), नवम्बर '91.
   (हालत खस्ता)

13. तालाब पट गए। कुरुक्षेत्र, (28), नवम्बर '91.
(पट जाना)
14. शहरी विकास ने उसे निगल लिया। कुरुक्षेत्र, (28), नवम्बर '91.
(निगल लेना)
15. बिक्री का सूरज उगता है। कुरुक्षेत्र, (29), नवम्बर '91.
(सूरज उगना)
16. स्वप्न अधूरा ही रह गया। कुरुक्षेत्र, (33), नवम्बर '91.
(स्वप्न अधूरा ही रहना)
17. राजनैतिक परिवर्तनों के भंवर में फंस गया। कुरुक्षेत्र, (33), नवम्बर '91.
(भंवर में फंसना)
18. लालफीताशाही के कागजी घोड़ों के भंवर जाल से मुक्त कराने में सक्षम। कुरुक्षेत्र, (36), नवम्बर '91.
(भंवर जाल से मुक्त कराना)
19. चुनौती का मुकाबला कर सकता है। कुरुक्षेत्र, (36), नवम्बर '91.
(चुनौती का मुकाबला करना)
20. व्यवस्था की तलवार के लटकने से। कुरुक्षेत्र, (36), नवम्बर '91.
(तलवार लटकना)

4.4.3. हिंदी फिल्म पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

1. ताना-बाना अच्छा बुना। रंगभूमि, (77), मई '95 गया है।
(ताना-बाना बुनना)
2. जाकर अटक गई। फिल्मी दुनिया, (3), जून '95.
(अटक जाना)
3. हलचल पैदा करने में बड़ा लुत्फ़ आता है। फिल्मी दुनिया, (7), जून '95
(लुत्फ़ उठाना)
4. चिल्ल-पों मचायी थी। फिल्मी दुनिया, (7), जून '95.
(चिल्ला-पों मचना)

5. हल्ला बोला जाने लगा था। — फिल्मी दुनिया, (7), जून '95.
(हल्ला बोलना)

6. चरमरा गयी। — फिल्मी दुनिया, (7), जून '95.
(चरमरा जाना)

7. औक़ात पता चल गयी। — फिल्मी दुनिया, (7), जून '95.
(औक़ात पता चलना)

8. अपने कैरियर में मील का एक और पत्थर स्थापित करने जा रहे। — रंगभूमि, (4), मई, '95.
(मील का पत्थर)

9. जले पर नमक छिड़कने के लिए। — फिल्मी दूनिया, (67), मई '97.
(नमक छिड़कना)

10. निर्माता उससे दूर भागने लगे। — फिल्मी दुनिया, (7), जून '95.
(दूर भागना)

11. धमाका करो। — फिल्मी दुनिया, (7), जून '95.
(धमका करना)

12. पूरी फिल्म में छांट रहे। — फिल्मी दुनिया, (7), जून '95.
(छांटना)

13. फेरों से पहले गांठ खुल गई। — फिल्मी दुनिया, (14), जून ' 95.
(गांठ खुलना)

4.4.4 हिंदी व्यावसायिक पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ :-

1. पक्के इरादे मज़बूत हैं। — द. स्ट्रीट (5), 21 मई '95.
(इरादे मज़बूत होना)

2. वास्तविक सुधारों का स्वाद चखने में। — द. स्ट्रीट (6), 21 मई '95.
(स्वाद चखना)

3. लोगों को उठाना है। — द. स्ट्रीट (8), 21 मई, 1995.
(उठाना)

4. आगे की कतार में आ गया हैं। — द. स्ट्रीट (8), मई '95.
(आगे की कतार में आना)

5. निवेशक एक खेल-खेल रहे हैं। — द. स्ट्रीट (11), 21 मई '95.
(खेल खेलना)

6. यह कोई राम बाण नहीं हैं। — द. स्ट्रीट (11), '95.
(रामबाण)

7. दर को नहीं पचा पाएगा। — द. स्ट्रीट (12), '95.
(न पचा पाना)

8. भावों पर नज़र रखी जाए। — द. स्ट्रीट (13), '95.
(नज़र रखना)

9. बाढ़-सी आ गई है। — द. स्ट्रीट (13), '95.
(बाढ़ आना)

10. भारत का पलड़ा भारी है। — द. स्ट्रीट (17), मई, '95.
(पलड़ा भारी होना)

4.4.5 हिंदी खेल पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ :

1. लस्त-पस्त कर दिया। — क्रि.भा. (14), मई, '95.
(लस्त-पस्त कर देना)

2. प्रहार झेल नहीं पाया। — क्रि.भा. (18), मई, 95'.
(झेल न पाना)

3. सचिन के फैन उनके पीछे हाथ धोकर पड़ गए। — क्रि. वर्ल्ड, (8), मई, '95.
(हाथ धोकर पड़ना)

4. साये की तरह पीछा न छोड़ते हुए। — क्रि. वर्ल्ड, (8), अक्तूबर '98.
(पीछा न छोड़ना)

5. अपनी रोजी रोटी का जुगाड़ कर रहे। — क्रि.भा. (54), मई, '95.
(रोजी रोटी का जुगाड़ करना)

6. आपा खो दिया। क्रि.भा. (19), मई, '95.
(आपा खोना)

7. फूट-फूट कर रोने लगा। क्रि.भा. (21), मई, '95.
(फूट-फूट कर रोना)

8. कोई बल्लेबाज़ छू नहीं पाया। क्रिकेट भारती, (4), मई, '95.
(न छू पाना)

9. हावी ही रहा जाए। क्रिकेट भारती, (4), मई, 1994.
(हावी होना)

10. चमक फीकी पड़ गई। क्रिकेट भारती, (4), मई, '95.
(चमक फीकी पड़ना)

11. घुड़सवार फिसड्डी साबित हुए। इंडिया टुडे, (47), मई, 1996.
(फिसड्डी होना)

12. मंजी हुई। इंडिया टुडे, (47), मई, 1996.
(मंजा होगा)

13. फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। क्रिकेट भारती, (6), मई, 1995.
(पीछे मुड़ कर देखना)

14. बल्लेबाज़ी पूरे निखार पर थी। क्रिकेट भारती, (6), मई, 1995.
(निखार पर होना)

15. अपनी धाक जमा ली। क्रिकेट भारती, (6), मई, 1995.
(धाक जमाना)

16. पलड़ा भारी कर सकता है। क्रिकेट भारती, (6), मई, 1995.
(पलड़ा भारी होना)

17. आक्रमण को तहस-नहस कर डाला। क्रिकेट भारती, (18), मई, 1995.
(तहस-नहस करना)

18. ढेर कर दिया। क्रिकेट भारती, (22), मई, '95.
(ढेर करना)

19. ढेर हो गई। क्रिकेट भारती, (22), मई, '95.

(ढेर होना)

20. बौखलाहट के कारण। क्रिकेट भारती, (22), मई, '95.

(बौखलाना)

21. बंटाधार मत कीजिए। क्रिकेट भारती, (48), मई, '95.

(बंटाधार करना)

22. सुर्खियों में आए। क्रिकेट भारती, (18), मई, 1995.

(सुर्खियों में आना)

23. नया इतिहास रच डाला। क्रिकेट भारती, (18), मई, 1995.

(इतिहास रचना)

24. आयोजक का ठप्पा लगने के कारण। क्रि.भा. (25), मई, '95.

(ठप्पा लगना)

25. इम्तेहान में फेल हो गये। क्रिकेट भारती, (31), मई, '95.

(फेल हो जाना)

26. मुस्तैद कदम रख चुके। क्रिकेट भारती, (32), मई, '95.

(क़दम रखना)

27. तगड़ा सट्टा खेला जाता है। क्रिकेट भारती, (87), मई, '95.

(सट्टा खेलना)

28. धक्के छुड़ा दिए थे। क्रिकेट भारती, (51), मई, '95.

(छक्के छुड़ाना)

29. तगड़ा झटका दिया। क्रिकेट भारती, (53), मई, '95.

(झटका देना)

30. एकाएक रसातल में धंस गया क्रिकेट भारती, (53), मई, '95.

(रसातल में जाना)

31. बावेल मच गया। क्रिकेट भारती, (64), मई, '95.

(बावेल मचना)

32. आपस में खींचातानी और बद इंतजामी। क्रिकेट भारती, (80), मई, '95.
(खींचातानी करना)

33. ठंडे बस्ते में डाले रखे। क्रिकेट भारती, (83), मई, '95.
(ठंडे बस्ते में ढालना)

34. रनों पर ढेर हो गयी। क्रिकेट भारती, (87), मई, '95.
(ढेर होना)

35. क्षेत्ररक्षण व आक्रमण दोनों चरमरा गए। क्रिकेट भारती, (93), मई, '95.
(चरमरा जाना)

36. सिक्का महिला जगत में जगा दिया। क्रिकेट भारती, (80), मई, '95.
(सिक्का जमाना)

4.4.6 हिंदी पारिवारिक पत्रकारिता में मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ :-

1. गहरी चोट पहुँची। गृहशोभा (34), मार्च, '95.
(चोट पहुँचना)

2. विवाह योग्य उम्र निकल गई। गृहशोभा (34), मार्च, '95.
(उम्र निकलना)

3. बिस्तर पर करवटें बदलते, छत की ओर निहारते। गृहशोभा (35), मार्च, '95.
(करवटें बदलना)

4. गृहस्थी की चक्की में पिसते हुए। गृहशोभा, (52), मार्च, '95.
(चक्की पिसना)

5. दिल की थाह पाने की कोशिश कीजिए। गृहशोभा (56), मार्च, '95.
(थाह पाना)

6. दोस्तों के पास चंद घूंट पीकर राहत न पाएँ। गृहशोभा (58), मार्च, '95.
(घूंट पीना)

7. उनके चक्षु खुल गए। गृहशोभा (58), मार्च, '95.
(चक्षु खुलना)

8. सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। गृहशोभा (58), मार्च, '95.

9. दिल टूटने की ही बात है। गृहलक्ष्मी (12), जनवरी, '98.
(दिल टूटना)

10. पति की बात सुन कर विभा का चेहरा उतर गया। गृहशोभा, (62), मार्च, '95.
(चेहरा उतरना)

11. दहलीज पर कदम रखते ही मनोभाव बदलने लगते हैं। गृहशोभा, (4), मार्च, '98.
(दहलीज पर कदम रखना)

12. कल्पनाओं का ताना-बाना है। गृहशोभा, (4), मार्च, '98.
(ताना-बाना बुनना)

13. आपके हृदय को छू जाएंगे। गृहशोभा, (4), मार्च, '98.
(हृदय को छूना)

14. नौजवानों के दिलों की धड़कन है। गृहशोभा, (6), मार्च, '98.
(दिल की धड़कन)

15. योगदान पर प्रकाश डाला गया। गृहशोभा, (7), मार्च, '98.
(प्रकाश डालना)

16. टांय-टांय फ़िस्स। गृहशोभा, (11), जनवरी, '98.

17. एक-दूसरे को पाने की तमन्ना उन्हें बादला-सा बना देती है। गृहशोभा, (11), जनवरी, '98.
(बावला बनाना)

18. अपना दिल निकाल कर रख दिया हो। गृहशोभा, (12), जनवरी, '98.
(दिल निकाल कर रखना)

19. वफ़ा और बेवफ़ा होना भी पल्ले पड़ा है। गृहशोभा, (12), जनवरी, '98.
(पल्ले पड़ना)

20. बात जो दिल को छू गई। गृहशोभा, (48), जनवरी, '98.
(दिल को छूना)

21. तेवर बदल डाले। गृहशोभा, (61), जनवरी, '98.
(तेवर बदलना)

22. युवावस्था तक पैर जमा लेता है। गृहशोभा, (12), जनवरी, '98.
(पैर जमाना)
23. दिमाग तो बेचारा मूक दर्शक बना रहता है। गृहशोभा, (12), जनवरी, '98.
(मूक दर्शक बना रहना)
24. भावुकता का पटाक्षेप होता है। गृहशोभा, (12), जनवरी, '98.
(पटाक्षेप होना)
25. पत्थर दिल कह भी दें तो अन्याय न होगा। गृहशोभा, (12), जनवरी, '98.
(पत्थर दिल)
26. एक-दूसरे की नब्ज देखकर इसको नाप लेते हैं। गृहशोभा, (12), जनवरी, '98.
(नब्ज देखना)
27. काम ठीक करोगे तो हम मालामाल हो जाएंगे। रंगभूमि (70), मई, '95.
(मालामाल होना)
28. कच्छ से लेकर कनाड़ा तक सिक्का जमाना। गृहशोभा, (148), मई, '95.
(सिक्का जमाना)
29. पैर कब्र में जाने को है। गृहशोभा, (26), मई, '95.
(कब्र में जाना)
30. आधुनिकता का लबादा ओढ़े। गृहशोभा, (26), मई, 95.
(लबादा ओढ़ना)

4.3 हिंदी पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियों का विवेचन :

4.3.1 साहित्यिक क्षेत्र में गुणात्मक अभिव्यक्ति

1. औरतें भी कम **अत्याचारी** नहीं। गृहशोभा, (24), मार्च, 1995.
2. **नशा** तात्कालिक आत्महत्या है। मेरी सहेली, (15), अगस्त, '97.
3. ताल ठोंक देने वाले **महामल्लप** के रूप में पेश किया जा रहा है। गृहशोभा, (8) मार्च, '95.
4. **महाबली** शेषन? गृहशोभा, (9), मार्च, '95.

5. सुंदरियाँ भी **बिकाऊ** वस्तु बन गई हैं। गृहशोभा, (21), मार्च, '95.

6. एक खास **चमक** है धड़कते जीवन की। आउटलुक (67), 21 अक्तूबर, 2002.

7. इश्क की इबादत में कभी **मजहब** आड़े नहीं आता। मेरी सहेली, (43), अगस्त '97.

8. **कंटीला** चारागाह। इंडिया टुडे, (27), जून '97.

9. हमारी नज़र एक **हट्टी-कट्टी** महिला पर पड़ी। गृहलक्ष्मी, (11), जनवरी '98.

10. **मन की सुंदरता** ही सबसे बड़ी सुंदरता है। गृहलक्ष्मी, (23), जनवरी '98.

11. **खुसफुसाहटों** के तार जोड़कर कहानी तैयार हुई। गृहलक्ष्मी, (50), जनवरी '98.

12. **घूमर-घूमकर घूमें** लहराए मेरा घाघरा। गृहलक्ष्मी, (28), जनवरी '98.

13. वक्त बेवक्त उसके **कालेपन** पर फिकरे कसती। गृहलक्ष्मी, (60), जनवरी'98.

14. वह और **फनफनाते** हुए कहते लगी। गृहशोभा, (60), जनवरी, '98.

15. सैनिक ने **गुर्राकर** उसे अपना चेहरा ढकने का आदेश दिया। गृहशोभा, (13), फरवरी, '97.

4.3.2 फिल्म पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियों का विवेचन :

1. जो **मार्केट** में चल रहा है। फिल्मी दुनिया, (5), जून, 1995.

2. वह **लेट** पहुँचेगी। फिल्मी दुनिया, (9), जून, 1995.

3. दौर तो बिल्कुल ही **खत्म** हो चुका था। फिल्मी दुनिया, (10), जून, 1995.

4. रातोंरात **स्टार** बना दिया। फिल्मी दुनिया, (13), जून, 1995.

5. **जस्टीफाई** करता है। फिल्मी दुनिया, (14), जून, 1995.

6. निर्माता **साइन** करने को तैयार है। फिल्मी दुनिया, (15), जून, 1995.

7. उनका टोन फिर **बदल गया।** फिल्मी दुनिया, (13), जून, 1995.

8. फिल्म बीच में **अटक गई।** फिल्मी दुनिया, (17), जून, 1995.

9. चमक **धूमिल** नहीं हुई। फिल्मी दुनिया, (22), जून, 1995.

10. जितनी **प्रतिष्ठा** अर्जित की है। फिल्मी दुनिया, (25), जून, 1995.

4.3.3 खेलकूद पत्रकारिता में गुणात्मक अभिव्यक्तियों का विवेचन :

1.	लोगों से खचाखच भरा हुआ था।	क्रिकेट भारती, (15), मई, 1995.
2.	आतिशी अंदाज।	क्रिकेट भारती, (4), मई, 1995.
3.	बिजली सी तेज़।	क्रिकेट भारती, (4), मई, 1995.
4.	धक-धकाता बयान।	क्रिकेट भारती, (3), मई, 1995.
5.	शफल करके।	क्रिकेट भारती, (4), मई, 1995.
6.	शानदार प्रदर्शन।	क्रिकेट भारती, (4), मई, 1995.
7.	विकेट गंवाने लगे।	क्रिकेट भारती, (6), मई, 1995.
8.	जिसमें 16 शतक शामिल थे।	क्रिकेट भारती, (5), मई, 1995.
9.	37 चौकों में 8 छक्कों की सहायता से अविजित 266 रन बनाये।	क्रिकेट भारती, (5), मई, 1995.
10.	विश्व रिकॉर्ड भंग कर दिया।	क्रिकेट भारती, (5), मई, 1995.
11.	323 रन जोड़े थे।	क्रिकेट भारती, (5), मई, 1995.
12.	शुरुआत निराशा जनक रही।	क्रिकेट भारती, (6), मई, 1995.
13.	ज़ोरदार 100 रन बनाए।	क्रिकेट भारती, (6), मई, 1995.
14.	साझेदारियाँ निभाई।	क्रिकेट भारती, (7), मई, 1995.
15.	रन जोड़े।	क्रिकेट भारती, (7), मई, 1995.
16.	शीर्ष स्थान प्राप्त किया।	क्रिकेट भारती, (7), मई, 1995.
17.	शतक जमाए।	क्रिकेट भारती, (8), मई, 1995.
18.	सबसे लम्बी पारी खेली थी।	क्रिकेट भारती, (8), मई, 1995.
19.	मैरिट के अनुरूप।	क्रिकेट भारती, (8), मई, 1995.
20.	डिफेंस।	क्रिकेट भारती, (8), मई, 1995.
21.	शतकीय पारी।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
22.	टर्न लेती हुई पिच।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
23.	स्पिनरों का सामना करते हुए।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.

24. पाँच कप भी लपके।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
25. यादगार श्रृंखला।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
26. छठे विकेट की साझेदारी में।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
27. 556 गेंदों का साना करते हुए।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
28. सम्पूर्ण बल्लेबाज़।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
29. जो पारी को जमाने में विश्वास रखते थे।	क्रिकेट भारती, (9), मई, 1995.
30. वापसी काफ़ी जोरदार रही।	क्रिकेट भारती, (10), मई, 1995.
31. विश्व रिकॉर्ड को भंग किया।	क्रिकेट भारती, (10), मई, 1995.
32. अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेना पड़ा।	क्रिकेट भारती, (10), मई, 1995.
33. क्षेत्ररक्षकों को भेदती हुई।	क्रिकेट भारती, (11), मई, 1995.
34. 356 रन की पारी खेली।	क्रिकेट भारती, (12), मई, 1995.
35. इस दौरान उन्होंने 48 चौके व एक छक्का लगाया।	क्रिकेट भारती, (12), मई, 1995.
36. शतक भी जमाया।	क्रिकेट भारती, (12), मई, 1995.
37. वह ऑफ साइड के मास्टर थे।	क्रिकेट भारती, (12), मई, 1995.
38. अन्त तक अविजित रहने का सौभाग्य दो बार प्राप्त हुआ।	क्रिकेट भारती, (13), मई, 1995.
39. 100 वाँ शतक बड़ी धूमधाम से बनाया।	क्रिकेट भारती, (13), मई, 1995.
40. संन्यास लिया।	क्रिकेट भारती, (14), मई, 1995.
41. जैसे रिकॉर्ड गावस्कर के नाम जुड़े हैं।	क्रिकेट भारती, (14), मई, 1995.
42. कुछ विशेष नहीं कर सके।	क्रिकेट भारती, (14), मई, 1995.
43. ऐतिहासिक जीत।	क्रिकेट भारती, (14), मई, 1995.
44. स्ट्रोक किताबी ढंग से खेलते थे।	क्रिकेट भारती, (15), मई, 1995.
45. सलामी बल्लेबाज़ों।	क्रिकेट भारती, (15), मई, 1995.
46. श्रेय: प्राप्त किया है।	क्रिकेट भारती, (15), मई, 1995.
47. गेंद कभी नीचे रह जाती थी व कभी अचानक ऊपर जाती थी।	क्रिकेट भारती, (16), मई, 1995.

48. बल्लेबाज़ी अपनी चरम सीमा पर थी।	क्रिकेट भारती, (16), मई, 1995.
49. आशा के अनुरूप प्रदर्शन किया।	क्रिकेट भारती, (16), मई, 1995.
50. 10 विकेट से हरा दिया।	क्रिकेट भारती, (22), मई, 1995.
51. कैरियर की शुरूआत कर सकता है।	क्रिकेट भारती, (31), मई, 1995.
52. मैचों में शतक जमाए।	क्रिकेट भारती, (40), मई, 1995.
53. मैचों में पारी की शुरुआत की।	क्रिकेट भारती, (40), मई, 1995.
54. स्कोर ही बना पाया।	क्रिकेट भारती, (53), मई, 1995.
55. अजीबोग़रीब ढंग से आउट हुआ।	क्रिकेट भारती, (53), मई, 1995.
56. तेज़ और उछाल डाली पिचों पर।	क्रिकेट भारती, (60), मई, 1995.
57. बाउंड्री के पार पहुँचा।	क्रिकेट भारती, (63), मई, 1995.
58. बल्ले से दनादन रन।	क्रिकेट भारती, (65), मई, 1995.
59. सनसनी खेज शुरुआत।	क्रिकेट भारती, (22), मई, 1995.
60. खिलाड़ियों को जीवनयापन के लिए खासी शक्कत करनी पड़ी।	क्रिकेट भारती, (15), मई, 1995.
61. परमार के बाद।	क्रिकेट भारती, (67), मई, 1995.
62. मुकाबला रोचक हो सकता था।	क्रिकेट भारती, (74), मई, 1995.
63. रन ठोके।	क्रिकेट भारती, (66), मई, 1995.
64. धुआंधार रन बनाये।	क्रिकेट भारती, (67), मई, 1995.
65. पिट कर बाहर हो गई।	क्रिकेट भारती, (67), मई, 1995.
66. खेलने को बाध्य किया था, छकाया।	क्रिकेट भारती, (95), मई, 1995.
67. सिक्का महिला क्रिकेट जगत में जमा लिया।	क्रिकेट भारती, (86), मई, 1995.
68. अधूरे मन से पुल किया।	क्रिकेट भारती, (86), मई, 1995.
69. शहीद को साइडऑन भी करते हैं।	क्रिकेट भारती, (89), मई, 1995.
70. तेजतर्रार पारी।	क्रिकेट भारती, (73), मई, 1995.

4.4. हिंदी पत्रकारिता में क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियों का विवेचन :

4.4.1 व्यावसायिक क्षेत्र में क्रियात्मक अभिव्यक्ति

1. करघों पर बुनाई करना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
2. रेशम के कीड़े पालना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
3. टोकरियाँ बनाना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
4. गाय भैंस पालना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
5. आटा पीसना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
6. घानी से तेल निकालना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
7. मिट्टी के बर्तन बनाना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
8. गाड़ियाँ और नावें बनाना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
9. कागज के फूल बनाना।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
10. लुहार तथा सुनार का काम।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
11. धान की कुटाई।	कुरुक्षेत्र, (37), नवंबर, 1991.
12. आटे की पिसाई।	क्रिकेट भारती, (47), मई, 1995.
13. कीड़े से रेशम निकालना।	क्रिकेट भारती, (57), मई, 1995.
14. मशीनों से भूसी निकालना।	कुरुक्षेत्र, (49), नवंबर, 1991.
15. अखाद्य तेलों से साबुन बनाना।	कुरुक्षेत्र, (50), नवंबर, 1991.

व्यावसायिक पत्रकारिता परिस्थितिजन्य अभिव्यक्तियाँ :

1. भारत दक्षिण पूर्व एशिया का टायगर बन सके।	द. स्ट्रीट, (11), मई, 1995.
2. खोलना (रिलीज़) चाहिए।	द. स्ट्रीट, (13), मई, 1995.
3. रुक सी गई हैं।	द. स्ट्रीट, (13), मई, 1995.
4. इन्हें एक झटके में नहीं सुलझाया जा सकता है।	द. स्ट्रीट, (14), मई, 1995.
5. निपटने के लिए।	द. स्ट्रीट, (15), मई, 1995.
6. एक मुख्य खिलाड़ी के रूप में ऊभरी है।	द. स्ट्रीट, (15), मई, 1995.
7. प्लाट्स का प्रावधान रखा गया।	कैपिटल मार्केट, (5), 8 मई, 1995.

8. ब्याज में छूट। कैपिटल मार्केट, (10), 8-21 मई, 1995.

9. बिक्री कर में छूट। कैपिटल मार्केट, (10), 8-21 मई, 1995.

4.4.2 हिंदी पत्रकारिता में सुझावात्मक अभिव्यक्तियों का विवेचन :

पारिवारिक पत्रकारिता में सुझावात्मक अभिव्यक्तियाँ :

1. अल्हड़ बच्चियों को अकेला न छोड़े। गृहलक्ष्मी, (50), जनवरी, 1998.
2. मेल खाता फाउंडेशन लेकर चेहरे और गर्दन पर लगाएँ। गृहलक्ष्मी, (53), जनवरी, 1998.
3. दाग़ धब्बे छिपाने के लिए कंसीलर लगाएँ। गृहलक्ष्मी, (53), जनवरी, 1998.
4. ब्रश की सहायता से उसे एक सार कर ले। गृहलक्ष्मी, (62), जनवरी, 1998.
5. रुई या फाहा लेकर उसे गीला करें। गृहलक्ष्मी, (53), जनवरी, 1998.
6. हेअरड्रायर से सुखा लें। गृहलक्ष्मी, (53), जनवरी, 1998.
7. पेंसिल की सहायता से। गृहलक्ष्मी, (54), जनवरी, 1998.
8. गर्मपानी लेइन कपड़ों को न धोएँ। मेरी सहेली, (66), अगस्त, 1997.
9. ठंडे पानी वाला ही कलफ लगाएँ। मेरी सहेली, (66), अगस्त, 1997.
10. कसकर न निचोड़ें। मेरी सहेली, (66), अगस्त, 1997.
11. छांव में सुखाएँ। मेरी सहेली, (66), अगस्त, 1997.
12. थोड़ा-सा मिश्रण पानी में डालें। मेरी सहेली, (66), अगस्त, 1997.
13. दही साँस के साथ सर्व करें। मेरी सहेली, (37), अगस्त, 1997.
14. एक-दूसरे की भावनाओं की क़द्र करें। मेरी सहेली, (47), अगस्त, 1997.
15. अलग गलमों में लगाकर नए पौधे तैयार किए जा सकते हैं। माधुरी, (76), फरवरी, 1997.
16. सिर की मालिश लयबद्ध तरीके से ही करनी चाहिए। माधुरी, (76), फरवरी, 1997.
17. ध्यान रखें कि हथेली का प्रयोग न हों। माधुरी, (77), फरवरी, 1997.
18. पानी की भाप की मदद ली जा सकती है। माधुरी, (77), फरवरी, 1997.
19. 10-12 बार तक लगातार पलकें झपकने से आँखों का भीतरी भाग तरल व चुस्त रहता है। माधुरी, (98), फरवरी, 1997.

20. मोइस्चरयुक्त क्रीम लगाने से भी झुर्रियां नहीं पड़ती। माधुरी, (98), फरवरी, 1997.
21. चित्र के अनुसार ट्रेस करें। वनिता, (86), अक्तूबर, 1999.
22. थोड़े से पानी में केसर भी घोल कर डाल दें। वनिता, (63), अक्तूबर, 1999.
23. हल्के हाथ से एकसाथ रोल कर लें। वनिता, (65), अक्तूबर, 1999.
24. दो पंक्तियाँ 8 बार दोहराएँ। गृहलक्ष्मी, (133), जनवरी, 1998.
25. सिर्फ प्लग लगाइए। गृहशोभा, (41), मार्च, 1995.
26. सति को स्वयं अपने हाथों से संवारिए। गृहशोभा, (53), मार्च, 1995.
27. कोलोन और परफ्यूम इस्तेमाल करने से पसीने की दुर्गंध दूर होगी। गृहशोभा, (53), मार्च, 1995.
28. उनके सुंदर व्यक्तित्व की राजदार बन जाएँ। गृहशोभा, (52), मार्च, 1995.
29. होली पर शिष्टाचार ज़रूरी। गृहशोभा, (60), मार्च, 1995.
30. अपने ओवन को जानें। गृहशोभा, (65), मार्च, 1995.

4.4.3 हिंदी पत्रकारिता में कथन परक व उपमापरक अभिव्यक्तियों का विवेचन :

हिंदी पत्रकारिता में कथन परक अभिव्यक्तियों का विवेचन :

1. गहने भी फैशन का एक हिस्सा बन गए। वनिता, (8), अक्तूबर, 1999.
2. 'सारी चुनौतियाँ मटियामेट'। इंडिया टुडे, (39), 5 जून, 1997.
3. 'हादसे पर हाथापाई'। इंडिया टुडे, (39), 5 जून, 1997.
4. 'हवा बदल चुकी है'। इंडिया टुडे, (27), 5 जून, 1997.
5. 'आपको हटाया तो दुनिया ही खत्म हो जाएगी'। इंडिया टुडे, (27), 5 जून, 1997.
6. 'शरीर कमज़ोर हो तो कई बीमारियाँ लग जाती है'। इंडिया टुडे, (27), 5 जून, 1997.
7. खादी अपने रास्ते से भटक गई है। आउटलुक, (29), 21 अक्तूबर, 2002.
8. खादी को फांसी। आउटलुक, (30), 21 अक्तूबर, 2002.
9. उत्सव का माहौल फीका। आउटलुक, (40), 21 अक्तूबर, 2002.
10. मस्ती पर खौफ़ की बंदिशें। आउटलुक, (40), 21 अक्तूबर, 2002.
11. गरबे पर इस बार दोहरा कहर टूटा। आउटलुक, (40), 21 अक्तूबर, 2002.

12. कार्ड में सिमटता बटुआ। आउटलुक, (56), 21 अक्तूबर, 2002.
13. शिराजा बिखर गया। इंडिया टुडे, (26), 5 जून, 1997.
14. दूरसंचार में बहेगा रुपय्या। आउटलुक, (57), 21 अक्तूबर, 2002.
15. अक्षम को सक्षम बनाने का अभियान। आउटलुक, (61), 21 अक्तूबर, 2002.

हिंदी पत्रकारिता में उपमापरक अभिव्यक्तियों का विवेचन

1. सूख गई उम्मीदों की फसल। इंडिया टुडे, (44), जून, 1997.
2. आममिला न गुठली। इंडिया टुडे, (31), जून, 1997.
3. शिराजा बिखर गया। इंडिया टुडे, (26), जून, 1997.
4. वो इन पे, ये उन पे फिदा। इंडिया टुडे, (22), जून, 1997.
5. वक्त के साथ विनम्रता का बाना। इंडिया टुडे, (16), जून, 1997.
6. कुनबे के बोझ से दबे रक्षक। इंडिया टुडे, (14), जून, 1997.
7. अटल की अटल सरकार। माया आवरण पृष्ठ 15 जनवरी, 1998.
8. चैंपियनों की पसंद। माया, (13), 15 जनवरी, 1998.
9. 'गच्चा' देने की राजनीति। माया, (18), 15 जनवरी, 1998.
10. पुराने लोग पुरानी यादें। माया, (26), 15 जनवरी, 1998.
11. चुनावी चंदे का बदलता अर्थशास्त्र। माया, (62) 15 जनवरी, 1998.
12. मुलायम सिंह का चुनावी शगुफा। माया, (76), 15 जनवरी, 1998.
13. जायके की पिच पर सचिन। आउटलुक, (53), 21 अक्तूबर, 2002.
14. बंदर के हाथ उस्तरां। इंडिया टुडे, (61), जून, 1997.
15. परदे के नए देश-प्रेमी। इंडिया टुडे, (59), जून, 1997.
16. टूटते तिलिस्म की कसम। इंडिया टुडे, (53), जून, 1997.
17. उस्ताद बनाने की दुकानदारी। इंडिया टुडे, (50), जून, 1997.
18. मुरली की जय, सूर्या का भय और अंग्रेज़ गये। क्रिकेट टुडे, (79), अक्तूबर, 1998.
19. जलवे के साथ जेल से बाहर। इंडिया टुडे , (48), जून, 1997.
20. आखिर विदेशी ही रास आए। इंडिया टुडे, (46), 21 जून, 1997.

4.5 निष्कर्ष :

इन अभिव्यक्तियों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी पत्रकारिता ने विभिन्न विषय क्षेत्रों में हिंदी की अभिव्यक्ति का विकास किया है। ये अभिव्यक्तियाँ विषय क्षेत्रों के अनुरूप विशिष्ट बन गयी हैं, जैसे- खेल, फिल्म महिला पत्रकारिता की अभिव्यक्तियाँ पूरी तरह उन्हीं क्षेत्रों में प्रयुक्त होती हैं। यह भी कहा जा सकता है कि हिंदी की ये अभिव्यक्तियाँ प्रयुक्तिपरक होती हैं, जिसका प्रयोग क्षेत्र-विशेष में होता है। हिंदी पत्रकारिता ने सार्थक अभिव्यक्तियों को निर्मित किया है और हिंदी की स्थापित अभिव्यक्ति को विस्तार दिया जा रहा है। संभवत: इसीलिए हम यह कह पाते हैं कि हिंदी पत्रकारिता के द्वारा हिंदी भाषा के विकास और विस्तार को बल मिल रहा है। भाषा को प्रवाहमय बनाने, उसे नये-नये विषय संदर्भों में प्रयुक्त करने और विषय के अनुरूप शब्दों, अभिव्यक्तियों और वाक्यों का निर्माण करने में हिंदी पत्रकारिता का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। हिंदी पत्रकारिता की विषयगत शब्दावलियों और उनके अभिव्यक्तिपरक बहु आयामी स्वरूप को देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी भाषा के समूह विस्तार और विभिन्न विषयों को अभिव्यक्त कर पाने की उसकी क्षमता को हिंदी पत्रकारिता ने सजग और सचेत रह कर अपनी भूमिका निभाई है।

संदर्भिका

1.	वनिता	संपादकीय कार्यालय, दिल्ली, ए-146, पहली मंजिल, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली - 110 024.
2.	गृहलक्ष्मी	डायमंड मैगजींस, H.O, X-30, ओखला, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली - 110 020.
3.	माधुरी	चंद्रप्रभा पब्लिकेशंस प्रा.लि., ए-2, रिंग रोड, साउथ एक्सटेंशन, नई दिल्ली, 110 049.
4.	गृहशोभा	दिल्ली प्रेसभवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली, 110 055.
5.	मेरी सहेली	पायोनियर बुक कं. प्रा. लि., सी-1, रॉयल इंडस्ट्रीयल एस्टेट, 5/बी, नायगांव क्रॉस रोड, वडाला, मुंबई, 400 031.
6.	कुरुक्षेत्र	कृषि मंत्रालय, ग्रामीण विकास विभाग, 467, कृषि भवन, नई दिल्ली-110 001.
7.	रंगभूमि	रंगभूमि भवन, 5 ए/15, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002.
8.	फिल्मी दुनिया	'रतन शिखा', 16 दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002.
9.	दलाल स्ट्रीट जर्नल	105, श्रेयस बिल्डिंग, न्यू लिंक रोड, मोन्जिनिस फैक्टरी के पीछे, अंधेरी (पश्चिम), मुंबई - 400 058.
10.	क्रिकेट भारती	ए-7, कमर्शियल काम्पलेक्स, मुखर्जीनगर, दिल्ली - 110 009.
11.	क्रिकेट वर्ल्ड	7, डी.डी.ए., कमर्शियल सेंटर, नं. 5, सेक्टर-1, रोहिणी, दिल्ली-110 085.
12.	इंडिया टुडे	लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110 001.
13.	क्रिकेट टुडे	X-30, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-II, नई दिल्ली - 110 020.
14.	आउटलुक	ए.बी-6, सदा एंक्लेव, नई दिल्ली, - 100 029.
15.	कैपिटल मार्केट	401, स्वस्तिक चैंबर्स, सायन ट्रांबे रोड, चेंबूर, मुंबई - 400 071.
16.	माया	281, मुट्ठीगंज इलाहाबाद - 211 003.

पंचम अध्याय

हिंदी पत्रकारिता का हिंदी शब्द-समूह एवं नव-सृजन

पंचम अध्याय

हिंदी पत्रकारिता का हिंदी शब्द-समूह एवं नव-सृजन

5.0 प्रस्तावना

5.1 आगत शब्द : एक विवेचन

5.2 हिंदी पत्रकारिता में आगत शब्द

5.3 शब्द-निर्माण-प्रक्रिया में संक्षिप्तीकरण

5.3.1 हिंदी पत्रकारिता में संक्षिप्तियों का प्रयोग

5.4 हिंदी पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन

5.5 व्यावसायिक पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का स्रोतगत विवेचन

5.6 फिल्म पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन

5.7 विज्ञान पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन

5.8 पारिवारिक पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन

5.9 जन प्रचलित शब्दावली

5.10 हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में नये प्रयोग

5.11 निष्कर्ष

5.0 प्रस्तावना

भाषा की समृद्धि में अन्य स्त्रोतों के साथ आगत शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। समय-समय पर यह देख लेना भी आवश्यक होता है कि भाषा के प्रवाह के साथ कितने विदेशी शब्द गृहीत हुए हैं। आगत शब्द 'बारोड' या उधार लिये हुए शब्द समूह के अर्थ में अंग्रेज़ी के 'लोन' तथा 'बारोड' शब्दों का पर्यायवाची मात्र है। ये वे शब्द हैं, जो किसी अन्य भाषा से लिये गये हैं। उनके रूप में परिवर्तन भी हो सकता है। ये शब्द सीधे एक भाषा के वक्ता के भाषण के माध्यम से दूसरी भाषा में चले जाते हैं। इन्हें जान बूझ कर कोई उधार नहीं लेता और लेता है तो फिर 'लोन' की भाँति ब्याज सहित अथवा ब्याज रहित लौटाता नहीं है। वस्तुत: वे शब्द किसी न किसी रूप में एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवेश पा लेते हैं, अतएव इन्हें 'उधार' उद्धृत 'विदेशी' आयात शब्द न कह कर 'आगत' कहना उचित होगा। हिंदी पत्रकारिता के संदर्भ में इस प्रकार की शब्दावली का विवेचन इस अध्याय में अभिप्रेत है।

5.1 आगत शब्द : एक विवेचन

आगत शब्दों को भी कई कोटियों में विभाजित किया जा सकता है। याचित आगत शब्द (ऐरिसमिलिटेड लोन्स) वस्तुत: वे शब्द हैं, जो सम्पूर्ण रीति से ग्राहक भाषा से प्राप्त ध्वनि प्रक्रिया के अनुकूल बनकर व्यवहृत होता

है। हिंदी भाषा-भाषी गत अनेक शताब्दियों से विदेशी भाषा-भाषियों के सम्पर्क में होने के कारण दूसरी भाषाओं के सहस्त्रों शब्दों को पचा गये हैं। भाषा के विकास में इस शब्दावली का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

एक देश की संस्कृति का अपने पड़ोसी देश की संस्कृति पर प्रभाव पड़ता है। दो देशों के परस्पर सम्पर्क में अनेक अर्थ हैं, एक देश का व्यापार, धर्म, साहित्य आदि दूसरे देश के निवासियों को प्रभावित करे। दो देशों के निवासियों में सम्बन्ध एवं सम्पर्क स्थापित होने के कारण कुछ न कुछ शब्द अवश्य एक भाषा से दूसरी भाषा के बोलने वाले ग्रहण करते हैं। विदेशी भाषा को सीखे बिना भी उसकी शब्दावली से कुछ शब्द स्वत: आ जाते हैं। अंग्रेज़ी आगत शब्दों का इतिहास हिंदी प्रवेश पर अंग्रेज़ों के आधिपत्य के साथ जुड़ा हुआ है। हिंदी प्रदेश से पूर्व ही पूर्वी तथा दक्षिण भारत पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो चुका था। बांग्ला के माध्यम से हिंदी में अंग्रेज़ी शब्द आ रहे थे। प्लासी के युद्ध के बाद हिंदी प्रदेश पर अंग्रेज़ों का आधिपत्य प्रारंभ हुआ।

इस संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अंग्रेज़ी के शब्द हिंदी भाषा में उन्नीसवीं शताब्दी से आने लगे।

कुछ शब्द अपनी विशेष उपयोगिता के कारण विश्व भ्रमण कर लेते हैं। चाय, काफी, चाकलेट आदि ऐसे ही शब्द हैं, जो किसी एक देश की सीमाओं में बद्ध न होकर समस्त विश्व के हो गये हैं। इनका अपने देश मात्र से अब कोई सम्बन्ध नहीं रहा। चाय 1, चाकलेट 2 आदि शब्दों के मूल स्थान को जानना भी चाहे तो उसे विशेष श्रम करना पड़ेगा।

चाय = एक प्रसिद्ध पेय है। इसका प्राचीनतम उल्लेख 350 ई. के लगभग का मिलता है। यह शब्द चीन की मदारिन भाषा का है। मूल शब्द चा (cha)। इसके प्रचार में वहाँ के बौद्धों का हाथ रहा है। वे शराब आदि अधिक नशीली चीजों से लोगों को बचाने के लिए इसके प्रचार में रुचि लेते थे। चा, चहा, चाइ, चाई, टी आदि अनेक रूपों में यही शब्द मिलता है। चीन में 'चाय' के जन्म के संबंध में एक लोककथा प्रचलित है। कोई बौद्ध भिक्षु आसन लगाकर साधना कर रहा था। उसे बार-बार नींद आ जाती थी तथा उसकी पलकें बंद हो जाती थीं। आखिर उसने अपनी पलकें काटकर जमीन पर फेंक दी जो चाय के पौधे के रूप में उग आई। इसी कारण चाय पीने से नींद नहीं आती।

(**उदा** : चाय 1, शब्दों की कहानी, पृ. सं. 38, डॉ. भोलानाथ तिवारी)

चाकलेट = एक प्रकार की मिठाई का नाम है। हिंदी में यह शब्द अंग्रेज़ी से आया है। मूल शब्द अमेरिका के मूल निवासियों की भाषा नहुअत्ल (यूरोअज़ेटकन भाषा-परिवार की) का Choclate है, जिसका अर्थ है 'कड़वा पानी'। मूलत: जो चाकलेट बनता था वह आज जैसा न होकर कोकोआ को पीसकर सूखा या गीला बनाया था, जो काफी कड़वा होता था। अमेरिका से इस शब्द और वस्तु को स्पेन के लोग यूरोप में लाए। बाद में चीनी तथा दूध आदि डालकर उसे काफी सुस्वादु बनाने लगे।

(**उदा** : चाकलेट 2, शब्दों की कहानी, पृ. सं. 38, भोलानाथ तिवारी)

इस प्रकार जो शब्दावली अधिक तेजी से हिंदी में बढ़ने लगी अनेक कई कारण रहे :

1) शिक्षा, उच्च शिक्षा, अंग्रेज़ी माध्यम

2) समाचार-पत्र

3) ईसाइयों का प्रभाव

4) राजकाज की भाषा

5) रेडियो, सिनेमा, थियेटर आदि मनोरंजन के बढ़ते हुए साधन

6) अंग्रेज़ी का बढ़ता हुआ अन्तर्राष्ट्रीय महत्व

7) व्यावहारिक भाषा

8) नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों का ज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान

यातायात के साधनों में साइकिल, मोटर, रेल से लेकर एइरोप्लेन तक का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। समाचार भेजने के लिए डाक टेलीग्राफ, टेलीफोन, वायरलेस आदि से साधन बढ़ते जा रहे हैं। डॉक्टरी तथा इंजीनियरिंग की शिक्षा का विकास होता जा रहा है। दिन-प्रतिदिन फैक्ट्रियाँ तथा मिलें खुलती जा रही हैं, जिसके फलस्वरूप आज इंजीनियर, इलेक्ट्रिक, इंस्पेक्टर, कंट्रोल, क्रेन, ट्यूबवेल, डायनमो, इंजन, बल्ब, फ्यूज, बायलर, मशीन, मॉडल, मीटर, मोटर, मिल, मेकैनिक, हार्सपार्वर, स्प्रिंग डीजल, पेट्रोल आदि सामान्य शब्द होते जा रहे हैं।

(**उदा** : राजपाल, हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी से साभार)

युद्ध के समय संचार साधनों, रेडियो, टेलीफोन, टेलीविजन, टेलिग्राफ, माइक्रोफोन, वायरलेस, रेडार की आवश्यकता का अनुभव होता है। इस प्रकार की तमाम शब्दावली विभिन्न क्षेत्रों से जुटायी जा सकती है।

1. प्रतिदिन व्यवहार की आने वाली वस्तुएँ, कपड़े, वस्त्र, बर्तन, आभूषण, श्रृंगार-प्रसाधन, भोजन सामग्री, फर्नीचर, बिजली का सामान।

2. व्यापार तथा पेशों के अन्तर्गत, विभिन्न प्रकार के व्यवसाय, स्टेशनरी, होटल, डेरी, मकान, मशीन, बैंक, नौकरी, पत्रकारिता आदि।

3. विज्ञान और कला : डॉक्टरी, फोटोग्राफी, संगीत, प्रेस, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र आदि।

4. प्रशासन : कलक्टरी, लोकल बोर्ड, पार्टी चुनाव, राशनिंग, पुलिस, मिलिटरी आदि।

5. शिक्षा : गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नापतोल, आकृति, स्काउटिंग आदि।

6. यातायात : रेलवे, बस, मोटर, साइकिल आदि से सम्बन्धित शब्दावली।

7. मनोरंजन : ड्रामा, सिनेमा, सर्कस, खेल, हॉकी फुटबाल आदि। इसमें और भी अनेक वर्ग बढ़ाये जा सकते हैं। इस प्रकार प्रतिदिन व्यवहार में आने वाले, अलबम, कॉलम, कॅलेण्डर, महीनों के नाम, टाई, कोट, क्रीम, आइसक्रीम, गिलास, चाकलेट, टार्च, दर्जन, टिन, पिन, पेंसिल, कॉपी, फाउण्टेन, पेन, ब्रश (बुरुश) बैग, बिस्कुट, सिगरेट, सूट, सेपटीपिन, सोडा, स्टोव, स्लीपर आदि शब्दों की एक लम्बी सूची बन सकती है, जिसमें लगभग 1000-1500 शब्द आसानी से लिये जा सकते हैं।

अंग्रेज़ी शब्दावली के माध्यम से तो उन नई वस्तुओं, भावों, कार्यालयों तथा घटनाओं का लेखा-जोखा, प्रस्तुत होता है, जो भारत में इधर पिछली डेढ़ शताब्दी से प्रचलित हुए हैं।

एक भाषा से दूसरी भाषा में लिये जाने वाले शब्दों को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं-

(अ) संज्ञा व विशेषण - ये शब्द अधिकांशतः ज्यों के त्यों कुछ ध्वनि-परिवर्तन के साथ प्रमुख होते हैं और उनका ही प्रयोग अधिक होता है। आज सर्वनाम अधिकरणवाचक, समुच्चय बोधक, सहायक क्रियाएँ, इनका प्रयोग बहुत कम होता है। संख्या एक भाषा से दूसरी में बहुत कम उधार लिये जाते हैं। कुछ प्रसिद्ध खेलों के साथ इनका प्रसार अवश्य हो जाता है।

आगत शब्दों में विदेशी ध्वनियों के स्थान पर अपनी भाषा की ध्वनियों का प्रयोग विभिन्न स्थलों पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा भिन्न-भिन्न तरह से होता है। इस प्रकार अधिकांशत: आगत शब्द अपनी विदेशी ध्वनियों को त्याग कर ही भाषा में प्रवेश करते हैं। फिर भी बहु-प्रयुक्त शब्दों की विदेशी ध्वनि भी आ जाती है। फारसी तथा अंग्रेज़ी के कारण 'फ़' की वृद्धि हुई है। उच्चारण में ऐसे शब्दों के स्पष्ट दो प्रकार के उच्चारण मुक्त रूप से मिलते हैं। विदेशी ध्वनियाँ विशेष परिस्थितियों में ही ग्रहण की जाती हैं। अंग्रेज़ी संध्यक्षर स्वरों का हिंदी में नितान्त अभाव है। अतएव हम 'ए, इ, ओ' को क्रमश: दीर्घ मूलस्वर 'ए' तथा 'ओ' रूप में ही उच्चरित करते हैं। फलस्वरूप mail (meil, vote (vout) हिंदी में क्रमश: 'मेल तथा वोट' बन गए।

सामान्यत: अंग्रेज़ी शब्दावली हिंदी में दो माध्यमों से आयी है :

1. लिखित साहित्य के आधार पर

2. बोलचाल के माध्यम से

यह सत्य है कि बहुत बड़ी संख्या में शब्दावली लिखित साहित्य से आयी है और शब्दों का रूप स्थिर करने में भी स्पेंलिग का विशेष प्रभाव पड़ा है। जैसे मोटर, आडर, वायलट आदि शब्द।

बिगुल, बिस्कुट आदि शब्द इस प्रवृत्ति के द्योतक हैं। इसके साथ ही कुछ महत्वपूर्ण शब्द भाषण (बोलचाल) के माध्यम से हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र में आये हैं। जैसे गाडर (Gerder), गंजी (Vernsey), दराज (Darwers), अर्दली (Orderly), प्लास (Pliers), गेटिस (Gaiters), बैरा (Bearer), सपरेटा (Separatar) आदि।

संकर शब्दावली में ऐसे मिश्र शब्द आते हैं जिनमें किसी शब्द का केवल एक भाग ही आगत होता है और शेष भाग अपनी भाषा का होता है। उदाहरण रूप में अग्निवोट शब्द ले सकते हैं, जिसका प्रयोग स्टीमर के अर्थ में किया जाता है। मुम्बई में मल्लाहों में इसका उच्चारण आग-वोट (Agbot) किया जाता है। हडसन, जानसन के अनुसार इसका प्रयोग 1953 में हो चुका है।

कुछ शब्द जैसे सभा-सोसायटी, गुदड़ी-पलीट, खण्डपीस आदि भिन्न प्रकृति के हैं। इस प्रकार के अनेक शब्द देशी-विदेशी प्रत्ययों के साथ भी व्यवहृत होते हैं।

अंग्रेज़ी शब्द - प्रत्यय - शब्द

जेल + खाना - जेल खाना

हण्टर + वाला - हण्टर वाला

लाट + गिरी - लाटगिरी

स्प्रिग + दार - स्प्रिगदार

वेटिकट मार्के का कांग्रेसीपन, गुरुडम, डबलरोटी, हाफकमीज़, कांग्रेसिया, पलटनिया, गिलसिया, कोनपान, मिडिलची, बटननुमा नम्बरवार, पार्टीबाज आदि अनेक शब्द अधिक आवृत्ति पर चल रहे हैं।

आगत शब्द अधिकांशत: नवीन वस्तुओं और विचारों के साथ एक देश की भाषा और संस्कृति से दूसरे देश की भाषा और संस्कृति में प्रवेश कर लेते हैं इस का विशद विवेचन हो चुका है, कभी इन शब्दों का तत्सम रूप सुरक्षित रहता है, जैसे Kup (Kup) और कभी विकृत रूप Lantern (लालटेन)। कभी पूर्व प्रचलित शब्द इतना अधिक व्यापक होता है कि नवीन नाम प्रभाव शून्य रहता है।

यहाँ यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि अंग्रेज़ी शब्दों के रूप में वस्तुत: अनेक ग्रीक (थरमस, थीसिस, टेलिफोन) लैटिन (किण्डर गार्डन, होमियोपेथ) आदि शब्द दूसरी भाषाओं के हैं।

अंग्रेज़ी के अनेक शब्द अर्थों की दृष्टि से हिंदी में आकर सीमित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, जैसे स्टेशन, कांग्रेस, लोक, मोटर। मशीन शब्द विभिन्न क्षेत्रों में पृथक्-पृथक् अर्थ का द्योतक हो गया है। 'गिलास' मूल ग्लास से भिन्न अर्थ में किसी भी धातु का बन सकता है। हिंदी में प्रयुक्त मिसकॉट भी गुप्त परामर्श या षड्यंत्र के अर्थ में प्रचलित हो गया है। 'बैरंग' बटन चोप्स आदि के अर्थ में भी परिवर्तन हुआ है। 'बैरा' पालकियाँ उठाया करते थे। आज इनका काम साहबों की चपरासगिरी करना है। लैस शब्द हिंदी में कटिबद्ध तैयार जैसे भिन्न अर्थों में धड़ल्ले के साथ चल रहा है।

कभी-कभी अपने देश का शब्द भी विदेशियों द्वारा प्रचारित होने पर अपना रूप बदल लेता है, जैसे तमिल शब्द गुरूट्टू ही अंग्रेज़ों द्वारा Cheroot हुआ और अब चुरूट रूप में प्रचलित है। दूसरी ओर आज की नागरिक सभ्यता में बहु प्रचलित शब्द शैम्पू (Shampoo) अपने ही देश का है। पर 1762 के आस-पास विदेशी यात्रा पर

गया था और अब विदेशी लगता है। अंग्रेज़ी उच्चारण की प्रगति तथा रोमन के प्रचार के कारण अनेक भारतीय शब्द आज अपने ही देश में बदल गये हैं। उड़िया का हीराकन्द हिंदी में हीराकुड और हीराकुण्ड तक हो गया। चंद्र साहब चन्द्रा हो गये हैं।

यह अवश्य है कि कुछ अप्रचलित तथा नये (कठिन) शब्द हिंदी पर्यायवाची शब्दों के उपयोग के साथ-साथ स्वत: ही कम हो जाएंगे। जैसे कल्टिवेटेड और मीडियाकर के स्थान पर क्रमश: संस्कृत और अधकचरे चल निकलेंगे। कुछ लम्बे पर अप्रचलित शब्द बिलकुल समाप्त हो गए। पर कुछ लम्बे पर प्रचलित शब्दों के अनेक रूप रहेंगे, जैसे कांस्टेबल और म्यूनिसपैलिटी। कालांत में सिपाही तथा नगरपालिका इनके प्रयोग को भले ही बिल्कुल समाप्त कर दे। पिन, पेन, फोटो, रेल-स्टेशन आदि सैकड़ों शब्द यों ही चलते रहेंगे। कुछ गलत हैं जिनका एक रूप मिरिपत्र हो जाना चाहिए, जैसे- टेबिल-टेबुल, मिडिल-मिडल, इंजिन-इंजन, सिनेमा-सनेमा/ सनीमा, कालिज-कालेज आदि। लालटेन बैरा आदि रूप तो नहीं बदले जा सकते पर यह अवश्य विचारणीय है कि रिपोर्ट के स्थान पर रपट और इंजन के स्थान पर दर्पन, जो लोग प्रचलित रूप हैं। उनमें ही मान्यता दी जाए। जैसे कांस्टेबिल और म्यूनिसपैलिटी कालान्तर में सिपाही तथा नगरपालिका इनके प्रयोग को भले ही बिल्कुल समाप्त कर दें। पिन, पेन, फोटो, रेल-स्टेशन आदि सैकड़ों शब्द यों ही चलते रहेंगे। कुछ शब्द हैं, जिनका एक रूप निश्चित हो जाना चाहिए। जैसे टेबिल-टेबुल, मिडिल-मिडल, इंजिन-इंजन, सिनेमा/सनेमा, सनीमा कालिज-कॉलेज आदि। लालटेन, बैग आदि रूप तो नहीं बदले जा सकते पर यह अवश्य विचारणीय है कि रिपोर्ट के स्थान पर रपट और डजन के स्थान पर दर्जन जो लोक प्रचलित रूप हैं उनको ही क्या मान्यता दी जाए। अंग्रेज़ी शब्दों के बहुवचन रूप विश्लेषण, क्रिया रूप को निरुत्साहित करना ही उचित है। कोई भी भाषा व्यावहारिक रूपों को ग्रहण नहीं करती है।

अंग्रेज़ी के आगत शब्दों का अर्थ परिवर्तन -

एक भाषा से दूसरी भाषा में सामान्यत: शब्द बिना अर्थ परिवर्तन के गृहीत होते हैं, किंतु कभी-कभी उनमें अन्तर भी हो जाता है। एक ही शब्द विभिन्न वातावरण एवं स्थानों पर भिन्न-भिन्न अर्थ लेकर प्रयुक्त होता है। उदाहरणार्थ ग्लास अपने तत्सम रूप में काँच का ही द्योतक है पर उसका तद्भव रूप 'गिलास' पानी पीने के पात्र के अर्थ में प्रयुक्त होता है। आगत शब्द गृहीत रूप में स्थानीय संस्कृति से प्रभावित होकर नवीन अर्थ ग्रहण कर लेता है। अर्थ का बहुत अधिक सीमित हो जाना - इस कोटि में वे शब्द आते हैं, जो अपने किसी विस्तृत भाव को छोड़कर किसी निश्चित तथा सीमित अर्थ में रूढ़िगत हो जाते हैं। उदाहरणार्थ स्टेशन लिया जा सकता है। इसका यह

अर्थ है कि कोई चीज़ कहीं आकर ठहरे जो ग्रहीत न होकर केवल रेलवे स्टेशन के रूप में अर्थ सीमित कर लिया गया है।

कांग्रेस - अलग-थलग पड़ी कांग्रेस (स्वतंत्र वार्ता 1, 18 अप्रैल, 01) अंग्रेज़ी में इसका अर्थ है सम्मिलित होना, मिलन विचार-विमर्श की औपचारिक बैठक।

सन् 1885 में सर्वप्रथम राजनीतिक ध्येय से कुछ व्यक्तियों की बैठक हुई। व्यक्तियों का यही सम्मेलन संस्था के रूप में प्रचलित हो गया, इस प्रकार आज कांग्रेस राष्ट्रीय महासभा के लिए रूढ़ हो गया। जिसका देश का बच्चा-बच्चा जानता है।

लीग - सामान्यहित की सहायता और रक्षा के लिए आपसी संगठन। हिंदी शब्द सागर में इसके दो अर्थ दिए हैं -

1. विशिष्ट दलों का किसी उद्देश्य से सम्मिलन।

2. बहुत बड़ी संस्था।

जिस प्रकार कांग्रेस का प्रयोग सामान्य से विशेष के अर्थ में बदलकर एक संस्था विशेष का द्योतक हो गया, उसी प्रकार लोग भी एक संस्था विशेष के अर्थ में सीमित हो गई। लीग से तात्पर्य मुस्लिम लीग से लिया जाता है तथा इस संस्था से संबंधित व्यक्तियों को लीगी कहा जाने लगा।

मोटर - वह जो गति प्रदान करे। गाड़ी के लिए शक्ति देने वाली

मशीन - अब सामान्यत: मोटर कहने से मोटर चालित कार अथवा 'लारी' का ज्ञान होता है।

साइकिल - अंग्रेज़ी में इसका अर्थ है आवर्तनीय समय। किसी भी चक्र के अर्थ में प्रयुक्त यह शब्द आज भी बाइसिकील के लिए प्रयुक्त होने लगा।

5.2 हिंदी पत्रकारिता में आगत शब्द

1. धड़ल्ले से जारी है पटना में **किडनी** दलाली का धंधा जनसत्ता (11), 14 मई, 1995
(अंग्रेज़ी से आगत)

2. नदीम भारत नहीं लौटा, तो उसकी संपत्ति **कुर्क** होगी जनसत्ता (1), 1 सितम्बर, 1997

(संस्कृत)

3. **डबल्स** जीतने की भारतीय उम्मीदें मजबूत — जनसत्ता (8), 2 सितम्बर, 1997
(अंग्रेज़ी का प्रभाव)

4. परिवहन **महकमे** में अफरा-तफरी का आलम — दैनिक भास्कर (3), 18 मार्च, 1995
(उर्दू का प्रभाव)

5. मंत्रिमंडल को लेकर **कवायद** — दैनिक भास्कर (1), 18 मार्च, 1998
(उर्दू का प्रभाव)

6. परिवहन महकमे में **अफरा-तफरी** का आलम — दैनिक भास्कर (13), 18 मार्च, 1998
(उर्दू का प्रभाव)

7. परिवहन निगम में नई बसों की **आमद** शुरू — नवभारत (14), 22 मार्च, 1998
(उर्दू का प्रभाव)

8. ग्वालियर के लिए एक और **अपरक्लेक्टर** — दैनिक भास्कर (1), 20 मार्च, 1998
(हिंदी + अंग्रेज़ी से आगत)

9. **होल सर्जरी** (लेप्रोस्कोपिक) से बड़े-बड़े ऑपरेशन सहज — नवभारत (3), 17 मार्च, 1998
(अंग्रज़ी से आगत)

10. **अनिवासी** भारतीयों को दोहरी नागरिकता — जागरण उदय (11), 22 जनवरी, 2002
(देशज, एन.आर.आई. के लिए)

11. कुर्क की जा सकती है **बीमा पालिसी** — जागरण उदय (37), 20 नवम्बर, 2001
(संस्कृत + अंग्रेज़ी से आगत)

12. **शिराजा** बिखर गया — इंडिया टुडे (26), 21 मई, 1997
(उर्दू से आगत)

13. जून-जुलाई से **डिजीटल** सिगनेचर पद्धति लागू होगी — स्वतंत्र वार्ता (8), 10 अप्रैल
(अंग्रेज़ी से आगत)

14. **मंदडियों** की **बिकवाली** ने शेयरों में चौतरफा गिरावट (बोली का प्रभाव) — आज (8), 1 मई, 1995

15. **आवक** के दबाव में गेहूँ चीनी और खाद्य तेल गिरे (देशज) — आज (8), 1 मई, 1995

16. न्यास में बनेगी **क्वालिटी** कंट्रोल लैब (अंग्रेज़ी आगत) — दैनिक भास्कर (5), 24 अप्रैल, 2002

17. अंक तालिकाओं का **डिजाइन** बदला जाएगा (अंग्रेज़ी से आगत) — राजस्थान पत्रिका (7), 8 अक्तूबर, 2001

18. खफा अंगरक्षकों ने **हो हल्ला** किया (बोली का प्रभाव) — स्वतंत्र वार्ता (12), 28 फरवरी, 2001

5.3 शब्द-निर्माण प्रक्रिया में संक्षिप्तीकरण

आज के इस भाग-दौड़ के युग में मानव मात्र की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि कम से कम समय में तथा कम से कम शब्दों में अपने अधिकतम भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति करे। अंग्रेज़ी में यही प्रवृत्ति एक्रेनिम कहलाती है जो एको + (ग्रीक) ओनुम (नाम) से बना है। ग्रीक एक्रोस का अर्थ है - सबसे पहले का।

प्रत्येक काल में ऐसे शब्द बनते रहे हैं। कालांतर में जब ये शब्द बहुप्रयुक्त होकर कोश के अंतर्गत अपना समुचित स्थान बना लेते हैं तो हम प्राय: भूल जाते हैं कि अमुक शब्द का निर्माण इस विधि से हुआ होगा। इस प्रवृत्ति के द्वारा हम बोलने-लिखने में समय व स्थान की बचत करते हैं। इस बचत की 'प्रवृत्ति' के फलस्वरूप ही हमारे दैनिक जीवन के बहुप्रचलित लंबे-लंबे शब्द छोटे बन जाते हैं।

हिंदी पत्रकारिता ने इस प्रवृत्ति को बहुखूबी अपनाया है। इसका उद्देश्य ही है कि कम से कम पंक्तियों में, समय में, पाठकों को ज्यादा से ज्यादा समाचार दे सकें। संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति से कॉलम में अधिक से अधिक समाचार दिया जा सकता है, चूँकि शब्द छोटे-छोटे बन जाते हैं, जिससे स्थान की बचत होती है।

यहाँ पर हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में प्रयुक्त संक्षिप्तियों को दर्शाया जा रहा है :

5.3.1 हिंदी पत्रकारिता में संक्षिप्तियों का प्रयोग

1. **म.प्र.** में भी मुख्यमंत्री प्रॉजेक्ट कर सकती है भाजपा — दैनिक भास्कर (1), 13 सितम्बर, 1998
   (मध्य-प्रदेश)
2. **नीरु-मीरु** में जनता की भागीदारी ज़रूरी — स्वतंत्र वार्ता (12), 15 अप्रैल, 2001
   (जल और आप कार्यक्रम)
3. **यूटीआई** से विलय नहीं करेगा जीटीबी — स्वतंत्र वार्ता (1) 5 अप्रैल, 2001
   (यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया)
4. राष्ट्रमंडल **टेटे** में पहले दिन मेजबान को दोहरी सफलता — स्वतंत्र वार्ता (12), 15 अप्रैल, 2001
   (टेबल टेनिस)
5. बालम तू काहे न हुआ **एन आर आई** — जागरण सखी (98), अप्रैल, 2002
   (नाम रेसिडेंशियल इंडियन)
6. **'कुडा'** पर सड़क-निर्माण मामले में घोटाले का आरोप — स्वतंत्र वार्ता (2), 26 फरवरी, 2001
   (कुली कुतुबशाह शहरी विकास प्राधिकरण)
   (जब यही शब्द तेलुगु में आता है, तो कूड़े, कचरे के लिए प्रयोग होता है।)
7. नौ **वामदल** एकजुट होकर निकाय चुनाव लड़ेंगे — स्वतंत्र वार्ता (4), 3 अप्रैल, 2001
   (वामपंथी दल)
8. **अजा-अजजा** पदों की भर्ती किये जाने की माँग — स्वतंत्र वार्ता (3), 26 फरवरी, 2001
   (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति)
9. **आई एन एस** कुरसुरा का अप्रवृर्त्तीकरण संपन्न — स्वतंत्र वार्ता (12), 28 फरवरी, 2001
   (इंडिया नेवल सर्विस)
10. **दक्षेस** देशों में नयी व्यापार व्यवस्था 8 दिसम्बर से — 'आज' (1), 1 मई, 1995
    (दक्षिण क्षेत्रीय सम्मेलन)

11. **टाडा** का विरोध क्यों? (टेररिस्ट एंड डिसरपटिव एक्टिविटीज़) — सेवनहिल्स (8), म, 1995

13. **बहु एजेंसी केन्द्र** (एमएसी) — इंडिया टुडे (24), 9 अक्तूबर, 2002

14. **गुप्तचर ब्यूरो** (आईबी) — इंडिया टुडे (24), 9 अक्तूबर, 2002

15. **बसपा** (बहुजन समाज पार्टी) — इंडिया टुडे (28), 9 अक्तूबर, 2002

16. **सपा** (समाजवादी पार्टी) — इंडिया टुडे (28), 9 अक्तूबर, 2002

17. **ओबीसी** (अन्य पिछड़ा वर्ग) — इंडिया टुडे (30), 9 अक्तूबर, 2002

18. **एफ सी आई** (भारतीय खाद्य निगम) — इंडिया टुडे, 1 अक्तूबर, (40)

19. **आई बी** की निगाहों में थी शिवानी (इंटिलेजेंस ब्यूरो) — आउटलुक (साप्ताहिक) 21 अक्तूबर, 2002, (9)

20. **फेडरल ब्यूरो ऑफ़ इंवेस्टीगेशन** (एफ बी आई) — इंडिया टुडे, 1 अक्तूबर, 2002, (40)

21. **एल. बी. डब्ल्यू.** (लेग बिफोर विकेट), — क्रिकेट टुडे, अक्तबूर, 1998, (49)

22. **पी. डब्ल्यू. जी.** (पीपुल्स वार ग्रुप), (नक्सलपंथी संगठन) — आउटलुक, 21 अक्तूबर, (47)

23. **एम सी जी** (माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर) — आउटलुक, 21 अक्तूबर, 2002 (46)

24. **एफ बी आई** (अमेरिकी जाँच एजेंसी) — आउटलुक, 21 अक्तूबर, 2002, (20)

25. क्यों नाकाम हो जाता है **रॉ** (रॉ - खुफिया एजेंसी) (RAW - Research and Analysis Wing), — आउटलुक, 21 अक्तूबर, 2002, (12)

26. **आई पी एस** (इंडियन पुलिस सर्विस) — आउटलुक, 21 अक्तूबर, 2002, (12)

27. **सीक्रेसी** (सिक्रेट सर्विस फंड) — आउटलुक, 21 अक्तूबर, 2002, (13)

28. **ओजीसी** (खुला सामान्य लाइसेंस) — कुरुक्षेत्र, नवम्बर, 1991 (38)

29. **हविपा** (हरियाणा विकास पार्टी) — माया, 15 जनवरी, 1998 (7)

30. **नेकां** (नेशनल कांफ्रेंस) — माया, 15 जनवरी, 1998 (11)

31. **अनेकां** (अवामी नेशनल कांफ्रेंस) — माया, 15 जनवरी, 1998, (11)

32.	सोनिया को भी काले झंडे दिखाने की **राजग** की चेतावनी (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन)	स्वतंत्र वार्ता, 10 अप्रैल, 2002, (1)
33.	सात **तृमूकां** सांसदों ने ममता में दिखाए जताया (तृणमूल कांग्रेस)	राष्ट्रीय सहारा, 14 जुलाई, 2001, (3)
34.	पार्टी की मजबूती के लिए **तेदेपा** में युद्धस्तरीय कार्रवाई (तेलुगु देशम पार्टी)	स्वतंत्र वार्ता (3) 13 जुलाई, 2002
35.	**एफ सी आई** (भारतीय खाद्य निगम)	इंडिया टुडे, पृ. सं. 40, 9 अक्तूबर, 2002
36.	**एल बी डब्ल्यू** कर दिया (लेगबिफोर विकेट)	क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 49, अक्तूबर, 1998
37.	**एम सी जी** (माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर)	आउटलुक, पृ. सं. 46, 21 अक्तूबर, 2002
38.	**सी बी आई** (सेंट्रल ब्यूरो ऑफ़ इंवेस्टीगेशन) (केन्द्रीय जाँच ब्यूरो)	आउटलुक, पृ. सं. 20, 21 अक्तूबर, 2002
39.	**एफ बी आई** (अमेरिकी जाँच एजेंसी) (फेडरल ब्यूरो ऑफ इंवेस्टीगेशन)	आउटलुक, पृ. सं. 20, 21 अक्तूबर, 2002
40.	**आर ए डब्ल्यू** (रिचर्स एण्ड एनालिसिस विंग), (खुफिया एजेंसी)	आउटलुक, पृ. सं. 12, 21 अक्तूबर, 2002
41.	रावा (Revolutionary Association of Afghan women)	जनसत्ता, आवरणपृष्ठ, 21 मार्च, 2003
42.	**पाक** की अपराधियों की सूची में आडवाणी का नाम भी शामिल है	स्वतंत्र वार्ता, आवरण पृष्ठ, 31 जनवरी, 2003
43.	**पोटो** (प्रिवेंशन ऑफ़ टेरस्टि एक्टिविटी)	स्वतंत्र वार्ता, 30 दिसम्बर, 2001, पृ. सं. आवरण पृष्ठ
44.	चीन में **सार्स** से आठ और मरे (सीवियर एक्यूटरेस्पिरेटरी सिंड्रोम)	जनसत्ता पृ. 10, 7 मई, 2003

45. **'ओइएफ'** (ऑपरेशन इराकी फ्रीडम) — दैनिक जागरण, आवरण पृष्ठ, 21 मार्च, 2003

46. **यूनीसेफ** (संयुक्त राष्ट्र बाल कोष) — दैनिक जागरण, पृ. 2, 21 मार्च, 2003

47. **वैट** (मूल्य वर्धित कर) — जनसत्ता, आवरण पृष्ठ, 31 मार्च, 2003

48. **ट्राई** (टेलीकाम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया) — नवभारत टाइम्स, मुख पृष्ठ, 7 मई, 2003

कुछ अप्रचलित संक्षिप्तियाँ नीचे दी जा रही हैं

अंकटाड	UNCTAD	United Nations Conference on Trade Development.
व्यंग्य में		United Nations Confusion on Trade Until Next Conference Try and Delay
		अजगर अहीर, जाट, गुजर आदि का संयुक्त रूप
अटीरा	ATIRA	Ahmedabad Textile Industry Research Association
अनराइस्ड	UNRISED	United Nations Research Institute in Social Education Development
अनोवा	ANOVA	Analysis of Variance (Psychology)
आंसुका		आंतरिक सुरक्षा कानून
आस्ट्रा	ASTRA	Astra Application of Science & Technology to Rural Areas
आइसनेक	AESNES	All India Small Newspaper Editors Conference.
आर्वी	ARVI	Overseas Communication Service Farth Station
विमान	AWAES	Airborne Narning & Control System
आसू	AASCO	All Assam Students Union
इंकोर	INCOR	Institute of Coastal & Offshare Research
इंडीपेक्स	IIPE	India International Philatelle Exhibition
इन्टलसेट	INTELSATE	International Telecommunication Satellite Consortium
इंताक	INTACH	Indian National Trust for Art & Cultural Heritage.
इंपेक	IMPEC	Indian Motion Pictures Export Corporation
इंपैक्ट	IMPACT	Intensive Matched Probation and After Care Trestment.
इंसा	INSA	Indian National Service Academy

इंसैट	INSAT	Indian Communication Satellite Programme
इन्कोस्पर	INCOSPAR	Indian National Committee for Space and Research
इन्स्पेक्ट	INSPECT	Infrared System for Printed Circuit Testing.
इंस्ट्रा	INSTRAW	International Institute for Research & Training Women
इकाफे	ECAFE	Economic Commission for Asia & Far East
इकोसोक	ECOSOC	The Economic & Social Council
इक्रीसैट	ICRISAT	International Corps Research Institute for the Semi Arid Tropics
इक्वेट	EQUATE	Electronic Quality Assurance Test Equipment
इडा	IDA	International Development Association
इनिस	INIS	Infant Nutrition Information Service
इन्फा	INFA	Indian News Feature Alliance
इफूना	IFUNA	Indian Federation of United Nations Association
इफ्को	IFCO	Indian Farmers Fertilizer Co-operative Ltd.
इरा	ERA	Equal Rights Amendment Irish Revolutionary Army
इरेज़र	ERASER	Elevated Radiation Seeker Rocket
इलना	ILNA	Indian Language Newspaper Association
इसरो	ISRO	Indian Space Research Organisation
इस्कान	ISKON	International Shri Krishna Order of Nations
इस्तर	ISTAR	International Society for Traditional Arts & Research
ईट्स	EATS	Ex-servicemen's Airlink Transport service
उनर्वा	UNRWA	United Nations Relief & Works Agency
उपासी	UPASI	United Planters Association of Southern India
उर्मूल	URMUL	उत्तरी राजस्थान मिल्क यूनियन लिमिटेड
एक्ट	ACT	Associated Cine Technicians

एक्टर	ACTOR	Askamia Cine Theodelite Optical Trading Range.
एक्सेज़	ACCESS	Architects Central Constructional Engineering Survey by Service (USA)
एग्री	AGREE	Advisory Group on Reliability of Electronic Equipment
एजीनेक्स	AGINEX	Agriculture Industrial Educational Exhibition
एटलस	ATLAS	Advanced Tactical Lightweight Air Superiority Radar
एडोप्ट	ADPT	Approach to Distributed Processing Transaction
एन्जुस	ANZUS	Alliance of Australia, Newzealand & USA
एपिल	APPLE	Ariance Passenger Payload Experiment
एपेड	APETD	Asian Programme of Educational Innovation for Development UNESCO.
एरा	ERA	Equal Right Amendment (USA)
एरिसा	ERISA	Emphyee Retirement Income - Security Act - 1974
एलिमको	ALMCO	Artificial Limbs Manufacturing Corporation of India
एलर्ट	ALERT	एलकोहल लेवल एवेलुएटर रोड साइड टेस्टर
एल्सेड	ALSED	Anthropology and Language Science in Educational Development
एवार्ड	AVARD	Association of Voluntary Agencies for Rural Development
एसियन	ASEAN	Association of South East Asian Nations
एसोक	ESOC	European Space Operations Centre
एस्कैप	ESCAP	United Nations Economic & Social Commission for Asia Pacific
एहेड	AHEAD	Army Help for Education & Development (USA)
ऐम	AIM	Accuracy in Media

ओम्पू	OGPU	ओवेजेदिने नोनोई गोसुदस्तीन्योइ पोलितीचेस्कोई उप्रब्लेनी
ओटेक	OTEC	Ocean Thermal Energy Commission
ओट्री	OTRI	Oil Technological Research Institute
ओट्स	OATS	Older Adults Transportation Service
ओपेक	OPEC	Organisation of Petroleum Export Countries
ओरोविल	AROVILLE	Aurobindo Ville ('नूतन उषा नगर' भी)
ओशा	OSHA	Occupational Safty Health Administration (USA)
कन्फेड	KANFED	Kerala Association for Nonformal Education
कन्फेड	CONFED	Congress for Democracy
कन्सेप्प	CONCEP	Computation Online of Networks of Chemical Engineering Processes
करनस्विस	KARASNWISS	करनाल तथा स्विट्ज़रलैंड के संयुक्त प्रयस सेक्रीड
कर्म	KARMA	Karjet Agriculture Rural Management Assistance
कवल	KAVAL	Kanpur, Agra, Varanasi, Allahabad & Lucknow
काउडेप	COWDEP	Comprehensive Watershed Development Programme
कार्ट	CART	Councial for Advancement of Rural Technique
कार्ड	CARD	Compaign Again Racial Diserimination
कास्मे	CASME	Commonwealth Association of Science & Maths Educations.
किमलोप	KIMLOP	किसान मज़दूर लोकपक्ष
कुवेंपु		कुप्पल्लि वेंकटप्प गौड़ पुट्टप्पा
कूपिड़	COPID	Conversational Utility Programme for Information Display
कृषको	KRIBHCO	कृषक भारती को-आपरेटिव लि.
केडेट	CADET	City Air Defense Evaluation Tool (USA)

केप	CAPE	Comprehensive Access to Primary Education
केपेबिल	CAPABLE	Controls & Panels Arrangement Bylogical Evaluation
केबिल	CABLE	Collaborative Atmosphieric Boundary Layer Experiment
केयर	CARE	Computer Aided Rural Education Committee for American Relief in Europe Everywhere
केस	CASE	Counselling Assistance to Small Enterprises
कैट	CAT	Computerised Ab. Tomography
कैप	CAP	Childrens Anticipated Policy
कैश	CASH	Computer Aided Stock Holdings
कैस	CAS	Current Awareness Service
कोप	COPE	Coma Operator Position Exercise
कोपू	COPU	Commitee On Public Undertaking
कोपा	KOAPA	Karnataka Ownership Apartment Promoters Association
कोफेपोसा	COFEPUSA	Conservation of Foreign Exchange & Prevention of Smuggling Activities Act.
कोमोकोन	COMECOL	Council for Mutual Economic Assistance East Europian Countries
कोर	CORE	Congress Of Racial Equality
कोस्टेड	COSTED	Committee on Science & Technology in Developing Countries
कोस्पार	COSPAR	Committee of Space Research
क्राइ	CRY	Child Relief and You
क्रीप	CREP	Committee for the Re-Election of President
क्लास	CLASS	Canberra Lab - Automation Software System
क्विस	KWIS	Key Word In Context

खाम	KHAM	Kshatriya, Harijan, Adivasi & Muslims
गर्ल	GIRL	Generalised Information Retrieval Language
गार्प	GARP	Global Atmosphere Research Project Goon Gorilla Baboon
गैट	GATT	General Agreement on Tariff & Trade
गोरा	GORA	Goparaju Ramchandra Rao
ग्रातविप		ग्रामीण तकनीक विकास परिषद
ग्रोमा	GROMA	Grain, Rice Oil Merchant Association.
चिप्स	CHIPS	Calculator Help In Processing Signals
ज़रलीना	ZERLINA	Zero Energy Reactor for Lattice Investigation Nuclear
जाल्मा	JALMA	Japanese Laper Mission for India
जिकतर	JECTAR	Joint Industry Committee for Television Advertising Research
ज़िस्ता	JISTA	Journal of the Indian Scientific Translation Association.
जीप	JEEP	General Purposes (Vehicle)
टर्ल्स	TERLS	Thumba Equatorial Rocket Launching Station
टेइरोस	TEIROS	Television & Infra Raid Orbiting Satellite
टासो	TASO	Television Allocation Study Organisation
टी	TEA	Transversely Excited Atmosphere Pressure
टेलेरन	TELERAN	Television Radar Air Navigation
ट्राइसम	TRYSEM	Training of Rural Youth for Self Employed
ट्रैक्ट	TRACT	Transportable Remote Area Communication Terminal
डेनिडा	DANIDA	Danish International Development Authority
तास	TASS	Telegraph Agency of Soviet Union

द्रमुक	DMK	द्रविड़ मुनेत्र कषगम
नट्स	NUTS	Nuclear Target Selection
नफेड	NAFED	National Agricultural Cooperative Marketing Federation of India. (भारतीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ)
नाइपोट	NAIPOT	National Institute of Prosthetic & Orthotic Training
नाइफ	NYEF	New York Futures Exchange
नाउ	NOW	National Organisation for Women (USA)
नाटो	NATO	North Atlantic Treaty Organisation
नानी	NANI	National Association for Nutrition of Infants
नार्मल	NORMAL	Nova Realtime Macro Languge
नासा	NASA	National Aeronautics & Space Administration
नस्ट्रन	NASTRAN	Nasa Structural Analysis
निड	NID	National Institute of Designs
निम्मत	NIMMAT	Nagaland, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Assam, Arunachal & Tripura.
निम्हंस	NIMHANS	National Institute of Mental Health & Neuro Sciences (Banglore)
निहाए	NIHAE	National Institute of Health Administration & Education
नेपा	NEPA	National Environmental Policy Act.
नेर्दा	NERDA	North Eastern Region Defence Army
नेहल	NIHL	Noise Included Hearing Loss.
नैमिस	NAMIS	Nonalignment Movement International Sports Seminar
नोआ	NOAA	National Oceanic & Atmospheric Administration
नोमर	NOMOR	Nuclear Overkill Moratorium

नोरद	NORAD	Norvegian Agency for International Development
नोइडा	NOIDA	New Okhla Industrial Development Authority
पंडित	PANDIT	Pruduce an Adjusted Nuclear Data Input Tape
पर्ट	PERT	Program Evaluation & Review Technique
पसूका	PIB	Press Information Bureau पत्र सूचना कार्यालय
पाइलट	PILOT	Patient Initiated Light Operated Telecontrol
पिकअप	PICUP	Pradeshiya Industrial Investment Corporation U.P.
पिन	PIN	Postal Index Number (Code)
पिन्स	PINS	Persons in Need of Supervision (New York)
पिरप	PIREP	Pilot Intensive Rural Employment Project
पुश	PUSH	Public Use Sample Helper
पोल्प	POLP	Popular Front for the Liberation of Palestine
पैट	PAT	Peoples Automatic Teller
पोस्टकोर्ब	POSDCORB	Planning Organisation Staffing, Directing, Coordinating Reporting Budgeting
प्रीपाक	PREPAK	Peoples Revolutionarey Party of Kangleipak
प्लान	PLAN	Peoples Liberation Army of Namibia
फारसी	FARSI	Federation of Amateur Radio Societies of India
फास्ट	FAST	File Analysis and Selection Technique
फिक्की	FICCI	Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry
फीसी	FISI	Federation of Indian Small Industries (भारतीय लघु उद्योग महासंघ)
फेडो	FEDO	Fact Engineering & Design Organisation
फेमस	FAMOUS	French American Mid Ocean Undersea Study

फेरा	FERA	Foreign Exchange Regulation Act
फेस	FACE	Field Alterable Control Element
फैक्ट	FACT	Fertilisers Chemicals Travancore Ltd.
फ्लो	FLO	FICCI Lady Organisation (फिक्की महिला संगठन)
बाट्र	BATR	Bombay Textile Research Association
बार्क	BARK	Bhabha Atomic Research Centre Bay Area Reference Centre (USA)
बाल्को	BALCO	Bharat Aluminium Company
बिट	BIT	Binary Digit
बिस्कोमान	BISCOMAUN	Bihar State Cooperative Marketing Association Union
बीवर	BEAVER	Better End All Vicious Erotic Repressions
बेस	BASE	Business Assessment Study & Evaluation
बैट	BAT	Bihar Art Theatre
बैफ	BAEF	Bhartiya Agro Industries Foundation (Poona)
भाकपा	CPI	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
भाजपा	BJP	भारतीय जनता पार्टी
भापविनि	ITDC	भारतीय पर्यटन विकास निगम
भालोद		भारतीय लोकदल
भेल	BHEL	Bharat Heavy Electrical Ltd.
माकपा	CPM	मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी
मार्व	MARV	Manoeuverable Re-entry Vehicles.
माविम	MAVIM	महिला आर्थिक विकास महामण्डल
मिर्व	MIRV	Multiple Independently Targetted Re-entry Vehicles
मिग	MIG	Mikoyan Gurevich

मीटो	METO	Middle East Treaty Organisation
मीसा	MISA	Maintenance of Internal Security Act.
मेकान	MECON	Metallurgical Engineering Consultants (India)
मोट	MET	Microlytic Electronic Therapy
मेजिक	MAGIC	Machine for Automatic Graphics Interface to a Computer
मेड	MAD	Mutually Assured Destruction
मेडलर्स	MEDLARS	Medical Literature Analysis & Retrieval System
मैन	MAN	Maschnen Fabrik Augsburg Nirnberg (German)
मैक्को	MAFCO	Maharashtra Agriculture Development & Fertilizer Prop. Corporation
मेस	MAS	महिला अभ्युदय संस्था (हैदराबाद)
मोनेक्स	MONEX	International Monsoon Experiment
यूनिडो	UNIDO	United Nations Industrial Development Organisation
यूनिसिस्ट	UNISIST	United Nations Information Service in Science & Technology
यूनितार	UNITAR	United Nations Training Research Institute
यूनीसेफ	UNISEF	United Nations International Children Emergency Fund.
यूसएड	USAID	United States Agency for International Development
राडा	RADA	Royal Academy of Dramatic Arts
रावा	RAAW	Revolutionary Association of Afghan Women
रासुका		राष्ट्रीय सुरक्षा कानून
रिम्पा	RIMPA	Research Institute for Music & Performing Arts

रीको	RHCO	Rajasthan State Industrial Development & Investment Corporation
लेडीज़	LADIES	Los Alamos (USA) Digital Image Enhancement Software
लैम्प	LAMPS	Large Area Multipurposes Society
लैसी	LACIE	Large Area Crop Inventory Experiment
लोरन	LORAN	Long Range Aid to Navigation
वाइस	VOICE	Voluntary Organisation in Interest of Consumer Education
वामेरेटी	WAMERTI	Water & Mineral Exploration Research & Training Institute
वार्क	WARC	World Administrative Radio Conference
वासी	VASI	Visual Angle Slope Indicator
वास्विक	VASVIK	विविधलक्षी औद्योगिक संशोधन विकास केन्द्र
वेवज	WAVES	Women Accepted for Voluntary Emergency Serivce
वोर	WOAR	Women Organised Against Rape
संपो		(विषाणु) सं. (संधिपाद) + पो (पोषित)
सजरी	CAZRI	Central Arid Zone Research Institute
सत्य	SATYA	Save A Tree Your Area
सत्व	SATW	Society for American Travel Writers
समीर	SAMIR	Satellite Microwave Radiometer
सस्मीरा	SASMIRA	Silk & Art Silk Mill's Research Association
साइट	SITE	Sattellite Instructional Television Experiments
साइरस	CIRUS	Canada India Reactor
साल्ट	SALT	Strategic Arms Limitation Talks

सिकोम	SICOM	State Industrial Investment Corporation
सिटक	CETAC	Communications External Tactical
सिया	CIA	Central Intelligence Service
सिट्रा	SITRA	South Indian Textile Research Association
सिडको	CIDCO	City & Industrial Development Corporation
सिन्कोम	SYNCOM	Synchronous Communication Satellite
सिफ्टी	SIPTI	Stockholm International Peace Treaty Institute
सिफेरी	CEPHERI	Central Public Health Engineering Research of India
सीटो	SEATO	South East Asiatic Treaty Organisation
सीडो	SEADO	Sea Defence Organisation
सीता	SITA	Suppression of Immoral Traffic in Women Girls Act (1956)
सीरी	CEERI	Central Electronics Engineering Research Institute
सेती	SETI	Search for Extra-Terrestrial Intelligence
सेन्टो	CENTO	Central Treaty Organisation
सेमी-बस्मोला	SEMIBMBEA	Scheme of the Economists for Monitoring Immobilisation Through Issue of Bond Medallions & Blocked Assets
सेल	SAIL	Steel Authority of India
सेवा	SEWA	Self Employed Women's Association
सेड	SAID	Speech Auto Instructional Device
सेम	SAM	Surface to Air Missile
सोग्रेह	SOGREAH	Society Grenobloise d'Etudes said - d' Applications Hydrauliques
सोस्लीन	SOCLEEN	Society for Clean Environment

स्क्विड्	SQUID	Superconducting Quantum Interference Device
स्कोट	SCOT	Satellite Communication System (bysteam)
स्कोप	SCOPE	Standing Committee of Public Enterprises
स्कोर	SCORE	Service Corps of Retired Executives
स्टार्ट	START	Strategic Arms Reduction Talks
स्टेप	STEP	Satellite Telecommunications Experiment Project
स्टोप	STOPP	Society of Teachers Opposed to Physical Punishment
स्टोल	STOL	Short Take Off and Landing (Aircraft)
स्नैप्स	SNAIPS	Society of National Institute of Physical Education & Sports
स्पड	SPUD	A Society for the Prevention of Unwholesome Diet
स्पिसमेकी	SPICSMACY	Society for Promotion of Indian Classical Music and Culture Among the Youth
स्पूसा	SPUSA	Socialist Party of USA
स्मार्ट	SMART	Supersonic Missile and Rocket Tracks
स्लिप	SLIP	A Set of Routines for List Processing
स्वापो	SWAPO	South Western African Public Organisation
शर	SHAR	Shri Harikota Range
शेप	SHAPE	Supreme Headquarters of Allied Powers in Europe
हफेड	HAFED	Haryana State Cooperative Supply & Marketing Federation
हार्म	HARM	High Speed Anti Radiation Missile
हाल	HAL	Hindustan Aeronautics Ltd
हीप	HEEP	Heavy Electrical Engineering Plant
हेल्प	HELP	Health Evaluation through Logical Processing
होप	HOPE	Health and Optimum Physical Education

(उदा : शब्दश्री, भोलानाथ तिवारी से साभार)

5.4 हिंदी पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन :

प्राय: देखा गया है कि अंग्रेज़ी के कुछ शब्द जो कालक्रम में हिंदी की भी संपत्ति बन चुके हैं, उन्हें हिंदी पत्रकारिता ने उसी रूप में अपने क्षेत्र में बड़े जोरशोर से आत्मसात कर लिया है, ताकि, पाठकों में उसका संप्रेषण सरल हो। ऐसे शब्द अंग्रेज़ी के होते हुए भी जनसाधारण के लिए सामान्य बन गये हैं। उदाहरण के रूप में कुछ शब्द नीचे दिये जा रहे हैं :

खेलकूद पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का विवेचन :

1. **फेडरेशन =** संघ (संज्ञा), (चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, पृ. सं. 456)

    (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10, 30 दिसम्बर, 2001)

2. **कोच =** व्यायाम शिक्षक (सर्वनाम, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 222)

    (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10, 30 दिसम्बर, 2001)

3. **स्कोर =** अंक बनाना, रन या दौड़ बनाना (क्रिया, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 1190)

    (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10, 30 दिसम्बर, 2001)

4. **गोलकीपर =** गोल रक्षक (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 536)

    (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10, 30 दिसम्बर, 2001)

5. **ओवर =** बॉल द्वारा फेंकी गई गेंदें (विभक्ति, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 1022)

    (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10, 29 दिसम्बर, 2001)

6. **मैच रेफरी =** निर्णय देने वाला (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 1100)

    (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10, 29 दिसम्बर, 2001)

7. **प्ले ऑफ =** निर्णायक खेल (विशेषण, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 987)

    (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 11, 29 दिसम्बर, 2001)

8. **फार्म ट्रैक =** (उदा : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10-15 दिसम्बर, 2001)

9. **रिकार्ड =** कीर्तिमान (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 1096)

(उदा : हिंदुस्तान, 7 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 1)

10. **फाइनल =** अंतिम (विशेषण, चैं.अं.हिं.को. पृ.सं. 466)

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 11, 7 जुलाई, 2002)

11. **जिम्नास्टिक एवं एथलेटिक्स के पदक विजेता =** व्यायाम संबंधी (विशेषण, चैं.अं.हिं.को., पृ.सं. 5666)

(उदा : डेली हिंदी मिलाप, पृ. सं. 6, 25 मार्च, 2001)

12. **जूनियर वर्ग =** कनिष्ठ (विशेषण, चैं.अं.हिं.को., पृ.सं. 691)

(उदा : पंजाब केसरी, पृ. 8, 14 जनवरी, 2001)

13. **बल्लेबाज़ी में फेल =** असफल होना, अनुत्तीर्ण होना (क्रिया, पृ. सं. 445, चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी शब्दकोश)

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, 13 अप्रैल, 2001, पृ. सं. 7)

14. **डेविस कप =** कप, प्याला (संज्ञा, चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी शब्द कोश, पृ. सं. 288)

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, 13 अप्रैल, 2001, पृ. सं. 7)

15. **रन =** दौड़ना (क्रिया, पृ. सं. 1158, चैबर्स अंग्रेज़ी हिंदी शब्दकोश)

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, 20 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 11)

16. **वनडे टीम =** दल (संज्ञा, चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी शब्दकोश, पृ. सं. 1392)

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 11, 20 अक्तूबर, 2001)

17. **टेस्ट =** जाँच करना, परीक्षण करना (अकर्मक क्रिया, चैंबर्स अंग्रेज़ी हिंदी कोश, पृ. सं. 1404)

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 11, 20 अक्तूबर, 2001)

18. **फिटनेस =** अनुरूपता, उपयुक्तता (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 471)

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 11, 20 अक्तूबर, 2001)

5.5 व्यावसायिक पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का विवेचन :

प्राय: अंग्रेज़ी से आगत ऐसे शब्द बहुत प्रचलित हैं। ये अर्थ और अवधारणा को साथ लेकर भाषा में आगे हैं।

1. **ट्रेड =** व्यापार (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1443)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 5, 30 दिसम्बर, 2001)

2. **स्कीम =** योजना (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1185)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 4, 29 दिसम्बर, 2001)

3. **रीटेल =** खुदरा, फुटकर (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1122)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 4, 29 दिसम्बर, 2001)

4. **मिल =** कारखाना (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 803)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 4, 28 दिसम्बर, 2001)

5. **ओवरसीज़ =** समुद्रपार (विशेषण, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 919)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 4, 28 दिसम्बर, 2001)

6. **बफरस्टॉक =** प्रतिरोधक, बफर (संक्षा, पृ. 153, चैं.अं.हिं.को.) स्टॉक = माल भंडार (संज्ञा, पृ. सं. 1332)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 7, 27 दिसम्बर, 2001)

7. **फुटवियर =** जूता (विशेषण, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 485)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 4, 18 दिसम्बर, 2001)

8. **फार्म =** पट्टा, ठेका (संज्ञा,चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 451)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 10, 15 दिसम्बर, 2001)

9. **सबवे =** सुरंगपथ (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1392)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 6, 31 दिसम्बर, 2001)

10. **डिफाल्टर्स =** बकीदार, गबनकार (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 308)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 6, 31 दिसम्बर, 2001)

11. **ऑनलाइन =** लाइन पर

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 9. 31 दिसम्बर, 2001)

12. **फास्ट ट्रैंक योजना =** (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 7, 30 दिसम्बर, 2001)

13. **स्पीड पोस्ट =** द्रुत डाकसेवा (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1301)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 3, 29 दिसम्बर, 2001)

14. **कैरियर एडवांसमेंट योजना =**

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 3, 28 दिसम्बर, 2001)

15. **काउंसलिंग =** सलाह, योजना (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 269)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 3, 29 दिसम्बर, 2001)

16. **ब्रॉडगेज =** छोटी लाइन, कुछ चौड़ा (विशेषण, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 148)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 7, 27 दिसम्बर, 2001)

17. **डीलरों =** वितरक, व्यापारी (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 301)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 7, 27 दिसम्बर, 2001)

18. **होटल =** सराय (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 608)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 5, 25 दिसम्बर, 2001)

19. **साइबर हमला =** (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 14, 25 दिसम्बर, 2001)

20. **रेवेन्यु टिकटों =** राजस्व टिकट, आय, मालगुजारी (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1126)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 3, 20 दिसम्बर, 01)

21. **बम्पर =** उछलने वाली वस्तु, भीड़भड़क्का (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 156)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 8, 26 दिसम्बर, 2001))

22. **डेयरी =** दुग्धशाला (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 296)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 5, 22 दिसम्बर, 2001)

23. **रोडवेज =** सड़क मार्ग (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1141)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 5, 11 सितम्बर, 2001)

24. **फैक्ट्रियों =** कारखाना (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 444)

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, मुखपृष्ठ, 7 दिसम्बर, 2001)

25. **ओपन ऑफर =** खुला प्रस्ताव (विशेषण + क्रिया)

(ओपन = खुला, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 896, ऑफर = प्रस्ताव, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 890)

(**उदा** : दैनिक जागरण, पृ. सं. 10, 14 जुलाई, 2001)

26. **स्टॉक मार्किट में उतार =** शेयर बाज़ार (संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1332)

(**उदा** : दलाल स्ट्रीट जर्नल, पृ. सं. 10, 21 मई, 1995)

27. **मार्बल =** (संगमरमर, संज्ञा, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 775)

(**उदा** : दैनिक भास्कर, पृ. सं. 12, 13 अक्तूबर, 1998)

28. **पब्लिक इश्यु =** सार्वजनिक, (मुद्दा), (विशेषण, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 1052)

(इश्यु = संज्ञा, प्रकाशन, चैं.अं.हिं.को. पृ. सं. 677)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, 20 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 19)

5.6 फिल्म पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन :

इस वर्ग की शब्दावली का भी स्रोत अंग्रेज़ी ही अधिक रही है। उदाहरण देखिए -

1. **बोरिंग =** बोरिंग क्रिया है। यद्यपि बोरिंग का अर्थ सूराख करने से होता है, किंतु 'फिल्म' के संदर्भ में इसका अर्थ 'उबा देना' या 'ऊबना' से होता है। (क्रिया, चैं. सं. हिं. शब्दकोश, पृ. सं. 133)

   (**उदा** : पंजाब केसरी, मुखपृष्ठ, 9 दिसम्बर, 2001)

2. **मल्टीप्लेक्स =** मल्टीप्लेक्स = बहुविध (विशेषण, चैं. अंस हिं, श, पृ. सं. 839)

   सिनेमा = चलचित्र (संज्ञा, चैं. अं. हिं, श. पृ. सं. 211)

   (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 5, 6 दिसंबर, 2001)

3. **अंडरवर्ल्ड =** गुप्त, गुप्त जीवन या अपराध लोक को अंडरवर्ल्ड कहा जाता है। विधि विरोधी गतिविधियाँ, जिसे भू-माफिया गैंग कहा जाता है, इसी के अंतर्गत कार्य करते हैं।
   (संज्ञा, चं. अं. हिं. श. पृ. सं. 1490)

   (**उदा** : पंजाब केसरी, मुख पृष्ठ, 5 दिसम्बर, 2001)

4. **फिक्शन =** रोमांस, कल्पना (संज्ञा, चैं, अं. हिं. श. पृ. सं. 462)

   (**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 5, दिसम्बर, 2001)

5. **फिल्मसिटी = फिल्म =** (संज्ञा, सिनेमा, चैं, अं. हिं, श. पृ. सं. 466)

   सिटी = शहर (संज्ञा, चैं. अं. हिं. श, पृ. सं. 214)

   (फिल्मसिटी, मुंबई को कहा जाता है।)

   (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 9, 29 दिसम्बर 2001)

6. **थियेटर** * रंगशाला, सिनेमा घर (संज्ञा, चैं. अं. हिं, श. पृ. सं. 1409)

   (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 9, 26 दिसम्बर, 2001)

(* **थियेटर =** ग्रीक भाषा में Thea का अर्थ होता है 'देखना' या 'दृष्टि'। इसी से ग्रीक Theatron तथा लैटिन

Theatrum शब्द बने, जिनका अर्थ है ऐसी जगह जहाँ से कुछ देखा जा सके। मध्यकालीन अंग्रेज़ी में यह Theatre हो गया। हिंदी की भोजपुरी बोली में यह शब्द 'ठेटर' हो गया है, जिसका सामान्य अर्थ मात्र 'तमाशा' है।

(* शब्दों की कहानी, पृ. सं. 54, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन)

5.7 विज्ञान पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली का प्रचलन :

विज्ञान के क्षेत्र में तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अधिक रहता है। इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग अधिक रहता है। इस प्रकार की शब्दावली का निर्माण और उसका प्रयोग विषय से संबद्ध होकर चलता है। किन्तु विज्ञान के जन सामान्य के साथ संपर्क स्थापन में कुछ ऐसी शब्दावली आम जनता तक भी पहुँच गयी है, जिसका संबंध सामान्य जीवन और सामान्य जन व्यवहार के लिए आवश्यक हो गया है। कुछ ऐसे प्रयुक्त शब्द -

1. **टेकनीकल शिक्षा =** तकनीकी* (विशेषण)

(चैं. अं. हिं. श., पृ. सं. 1393)

(**उदा** : पंजाब केसरी, पृ. सं. 9, 29 दिसम्बर 2001)

(* तकनीक = यूनानी भाषा में बढ़ई के लिए पुराना शब्द है Tekon. आगे चलकर 'शिल्प' या 'उपयोगी कला' के लिए इससे शब्द बना Tekhne. उदाहरण के लिए जहाज निर्माण तथा धातुशिल्प को यूनानी में Tekhne कहते रहे। आगे चलकर Tekhne से विशेषण बना Technikos, जिसका अर्थ हुआ 'शिल्पीय' या तकनीकी। यह उल्लेख्य है कि Architect का Tect भी इसी से संबद्ध है। Technikos से ही अंग्रेज़ी शब्द Technic तथा Technique बने। हिंदी में Technique ही तकनीक है।

(**उदा** : *शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी पृ. सं. 52)

2. **एड्स =** एक्वायर्ड इम्युन डेफिसेंसी सिंड्रोम, यह एक संक्रामक बीमारी है।

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, 20 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 2)

3. **मर्करी =** पारा (संज्ञा, चै. अं. हिं. श. पृ. शं. 793)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, 21 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 2)

4. **हर्निया =** आंत उतरने का रोग (संज्ञा चै. अं. हिं. श. पृ. सं. 585)

(**उदा** : कादंबिनी, मार्च, पृ. सं. 2, 1995)

5.8 पारिवारिक पत्रकारिता में सामान्य शब्दावली :

पारिवारिक जीवन में अनेक परिवर्तन आये हैं, सभ्यता के विकास के साथ-साथ। व्यक्तिगत एवं सामूहिक आवश्यकताओं से संबद्ध चीज़ों और अवधारणाओं के साथ जुड़े शब्द प्रमुखतः अंग्रेज़ी स्रोत से और गौण रूप से अन्य स्रोतों से स्वीकार हुए हैं।

1. **ब्यूटी पार्लर =** रूप निखारिका (संज्ञा, नै. अं. हिं. श. पृ. सं. 99)

(**उदा** : पंजाब केसरी, 26 दिसम्बर, 2001, पृ. सं. 2)

2. **हर चेहरा ग्लैमर बन सकता है =** मोहक (संज्ञा, चै. अं. हिं. श. पृ. सं. 530)

(**उदा** : पंजाब केसरी, 6 अक्तूबर, आवरण पृष्ठ, 2001)

3. **हलका मेकअप कराएँ शरीर पर =** वेष बनाना (वस्तुनिष्ठ, चैं. अं. हिं. शब्दकोश, पृ. सं. 767)

(**उदा** : हिंदुस्तान, 21 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 11)

4. **हेयर रिमूवर =** बाल साफ करना (संज्ञा + क्रिया, चै. अं. हिं. श. पृ. सं. 559+1110)

(**उदा** : दैनिक जागरण, 8 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 14)

5. **डेट्स =** भेंट आबंध (संज्ञा, चै. अं. हिं. श. पृष्ठ सं. 299)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, 20 अक्तूबर, 2001, पृष्ठ 7)

6. **शूटिंग =** छाया चित्रण (विशेषण, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 1239)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 7, 20 अक्तूबर, 2001)

7. **फिल्म इंडस्ट्री =** सिनेमा उद्योग (संज्ञा, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 466)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 7, 20 अक्तूबर, 2001)

8. **अफेयिर =** प्रेम संबंध (संज्ञा, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 18)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 8, 20 अक्तूबर, 2001)

5.9 जनप्रचलित शब्दावली

आम जनता या राजनैतिक क्षेत्र में कुछ ऐसे शब्द हैं, जो धड़ल्ले से प्रयोग में लाये गये हैं। जैसे -

1. **काउंसलिंग =** (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 3, 29 दिसम्बर, 2001)

2. **केबल =** वाहक तार (संज्ञा, चै. अं. हि. श., पृ. सं 9, 26 दिसम्बर, 2001)

3. **स्लोगन =** आदर्श वाक्य, जयघोष (संज्ञा. चै. अं. हिं. श. पृ. सं. 1267)

   (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 15, 11 नवम्बर, 2001)

4. **नम्बर प्लेट =** (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ सं. 5, 11 दिसम्बर, 2001)

5. **ब्लैक मेलिंग =** धमकी से पैसे ऐंठना (चैं. अं. हिं. को. पृ. सं. 118)

   (**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 5, 6 दिसम्बर, 2001)

6. **कश्मीर में हाई अलर्ट =** चैतन्य रहना, सावधाना रहना। सामान्यत: ये शब्द सेना के लिए प्रयोग होता है।

   (**उदा** : हिंदी मिलाप, पृ. सं. 10, 28 जुलाई, 2002)

7. **बोलते पत्थर हैं मिश्र के पिरामिड =** पिरामिड (संज्ञा, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 1063)

   (**उदा** : नवभारत टाइम्स, पृ. सं. 5, 14)

8. **स्वयंभू कमांडर समेत 7 उग्रवादी मारे गये =** सेनापति (वर्तमान, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 235)

   (**उदा** : पंजाब केसरी, आवरण पृष्ठ, 3 अक्तूबर, 2001)

9. **पब्लिक इश्यु =** पब्लिक + इश्यु

   पब्लिक = (विशेषण, आम, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 1052)

   इश्यु = विषय (संज्ञा, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 677)

   (**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, 20 अक्तूबर, 2001, पृ. सं. 19)

10. **कमांडो =** सैनिक टुकड़ी (सर्वनाम, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 235)

    (**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, 20 अक्तूबर, 2001, मुख पृष्ठ)

11. **पार्टी हाईकमान =** पार्टी का मुखिया

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 4, 20 अक्तूबर, 2001)

12. **रेंजरों =** घुमक्कड़ (सर्वनाम, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 1082)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, मुखपृष्ठ, 20 अक्तूबर, 2001)

13. **इंटिलिजेंस =** गुप्तचर, आसूचना (विशेषण, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 660)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, मुखपृष्ठ, 21 दिसम्बर, 2001)

14. **वाकआउट =** बहिष्कार, हड़ताल (विशेषण स्वरूप चले जाना, चैं. अं. हिं. श. पृ. सं. 1564)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, मुखपृष्ठ, 30 नवम्बर, 2001)

15. **रैगिंग =** मजाक करना, ठट्ठा करना, (क्रिया, चैं. अं. हिं. को पृ. सं. 1079)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, मुखपृष्ठ 4 दिसम्बर, 2001)

5.10 हिंदी पत्रकारिता में नये प्रयोग :

अब तक हिंदी पत्रकारिता में विभिन्न भाषाओं से आगत संक्षिप्तियों और सामान्य प्रचलित शब्दावली का विवेचन किया गया है। आगे आजकल प्रयोग में लिये जा रहे नये शब्दों के बारे में चर्चा की जा रही है।

हिंदी पत्रकारिता में नये प्रयोग कोई विशेष नहीं है। बल्कि परिस्थितियों की दृष्टि से ये शब्द अपने आप उभरे हैं, जो आम आदमी के दैनंदिन प्रयोग में आने लगे हैं। हिंदी पत्रकारिता ने उसे पूरी तरह से आत्मसात कर लिया है।

हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में नये प्रयोग :

1. बालीवुड में परदेसी

बालीवुड = यद्यपि बॉलीवुड कोई शब्द नहीं है। ये हॉलीवुड की तर्ज पर निर्मित शब्द है। हॉलीवुड संबंधी अर्थात् हॉलीवुड में निर्मित फिल्मों को हॉलीवुड कहा जाता है। ये जनसामान्य द्वारा विकसित शब्द हैं। इसी की तर्ज पर हिंदुस्तान में बम्बई या मुंबई में निर्मित फिल्मों को बॉलीवुड कहा जाता है, चूंकि मुम्बई फिल्म नगरी है।

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 5, 14 जुलाई, 2001)

आजकल 'टालीउड' भी प्रचलित हो रहा है, जो तेलुगु सिनेमा के संदर्भ में बॉलीउड के समानांतर में परिकल्पित है।

2. मनीषा नज़र आएगी रेडलाइट एरिया मार्किट में

रेडलाइट एरिया = रेडलाइट, जिसे लालबत्ती कहा जाता है। सड़कों पर वाहनों के आवागमन पर अवरोध लगाने या भीड़ पर काबू पाने के लिए सिग्नल लगे होते हैं, किन्तु जनसामान्य से इसे तहलका मचाने वाले गड़बड़ी या हिंसात्मक क्षेत्रों में अंकुश लगाने के लिए उस प्रतिबंधित क्षेत्र को रेडलाइट एरिया करार दिया है। ये शब्द गड़बड़ी व आतंकित क्षेत्रों की स्थिति पर काबू पाने के लिए 'रेडलाइट एरिया' शब्द का नामकरण कर दिया गया।

(**उदा** : हिंदी मिलाप, पृ. 5, 28 जुलाई, 2002)

3. तीन छक्के सात चौके बनाये

छक्का और चौके = यद्यपि 'छक्का' शब्द जनसामान्य की भाषा में 'हिजड़े' के लिए प्रयोग किया जाता है। छक्के शब्द विशेषण हैं। छक्के का एक और अर्थ छलकपट, चालबाज़ी के लिए भी इस्तेमाल होता है। जैसे :

* छक्का पंजा, छक्के छुड़ाना अर्थात हौसला पस्त करना या पैर उखाड़ देना, छक्के छूटना, बुद्धि चकराना से तात्पर्य है।

(* राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. सं. 273)

लेकिन क्रिकेट के खेल में इस शब्द का अधिक प्रयोग होता है। छह रनों का समूह 'छक्का' कहलाता है। गेंद का बाउंडरी के बाहर उछाल क्रिकेट में छक्का कहलाता है।

उसी प्रकार चौका या चौआ भी क्रिकेट के खेल में प्रयुक्त होता है। वैसे चौआ का प्रयोग 'ताश' के खेल में भी होता है।

यद्यपि चौका * का अर्थ पत्थर आदि का बना गोलाकार टुकड़ा, चकला या चौका-बेलन, रसोई घर अथवा किसी स्थान को साफ करने की क्रिया होता है। किंतु क्रिकेट में इसका धड़ल्ले से प्रयोग होता है।

(* राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. सं. 270)

(**उदा** : क्रिकेट टुडे, पृ. सं. 8, अक्तूबर 1998)

4. थर्ड मैन पर खड़े = यह शब्द क्रिकेट में प्रयुक्त होता है। आफसाइड में विकेट कीपर के पीछे फील्ड करने के लिए जो खिलाड़ी होते हैं उसे 'थर्ड मैन' कहा जाता है।

(**उदा** : क्रिकेट भारती, पृ. सं. 86, मई 1995)

5. माफिया डॉन = माफिया + डॉन

माफिया का अर्थ है विधि-विरोधी (चैम्बर्स अं. हिं. को पृ. सं. 763)

डॉन = अध्यक्ष, उत्तरदायित्व लेने वाला मुखिया।

इस शब्द का प्रयोग तस्करों के लिए प्रयुक्त होता है। अर्थात् जो व्यक्ति विधि-विरोधी गतिविधियों का मुखिया या प्रधान होता है वह माफिया डॉन कहलाता है।

(**उदा** : आउटलुक, पृ. सं. 20, 21 अक्तूबर, 2002)

6. चैंपियन बना दिया = चैंपियन = यह संज्ञा है। विजेता या सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को 'चैंपियन' कहा जाता

(चैं. अं. हिं. को. पृ. सं. 195)

(**उदा** : क्रिकेट भारती : पृ. सं. 24, मई 1995)

7. गैस कांड = गैस = यह संज्ञा, स्त्रीलिंग है। ऐसा ज्वलनशील पदार्थ जो रोशनी उत्पन्न करता है।

(राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. सं. 224)

कांड = यह संज्ञा (पुल्लिग) है। इसका तात्पर्य घटना या कांड से है।

गैस त्रासदी गैसकांड कहलाती है।

(डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृ. सं. 157)

(**उदा** : वनिता, पृ. सं. 19, जनवरी 1998)

8. कर्फ्यू * = घरबंदी या निषेधाज्ञा यह पुल्लिग है।

(राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. सं. 149)

* वह स्थिति जब कोई व्यक्ति घर से बाहर नहीं निकल सकता। यूरोप में मध्य युग में ऐसा होता था कि रात में खास समय पर शासन की ओर से घंटी बजायी जाती थी, उस समय सभी लोग अपने घर की आग या रोशनी या

तो ढक देते थे या बुझा देते थे। यही रोशनी को ढकना मूलत: कर्फ्यू था। फ्रेंच में शब्द दो थे Couvre few! प्रथम शब्द का अर्थ है 'ढक देना' तथा दूसरे का अर्थ है 'अंग'। यह फ्रेंच युग्म ही विकसित होकर Cuevrefu हुआ जो अंग्रेज़ी में आकर 'कर्फ्यू' हो गया। अब इस शब्द के अर्थ में काफी विकास हो चुका है। 'बाहर न निकलने की आज्ञा' भी कर्फ्यू है, यद्यपि उससे रोशनी का कोई संबंध नहीं है।

(* शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. सं. 25)

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, मुखपृष्ठ, 31 अक्तूबर, 2002)

9. परत दर परत उधड़ती जाए है 'तहलका' की साजिश

तहलका : तूफान उठा देना या बावेल मचा देना।

'तहलका' उपर्युक्त अर्थ के संदर्भ में एक दल था, जिसने भाजपा के पूर्व अध्यक्ष श्री बंगारू लक्ष्मण, जया जेटली व कई राजनीतिक नेताओं तथा सेनाधिकारियों की रक्षा संबंधी मामलों में घूस लेते हुए या उसके लेन-देन के संबंध में तस्वीरें भी खींची थी। यह मामला 'तहलका डॉट काम' से मशहूर हो गया।

(**उदा** : पाञ्चजन्य, पृ. सं. 3, 1 मार्च, 2001)

10. डालर लाओ! गरीबी हटाओ

* **डालर =** अमेरिका और कुछ अन्य देशों का बड़ा सिक्का। यह पुल्लिग है। इस शब्द का इतिहास 16वीं सदी से प्रारंभ होता है। उस समय बोहेमिया में चांदी के सिक्के बनते थे। जर्मन शब्द थाल का अर्थ है घाटी। जहाँ सिक्के ढाले जाते थे, वह घाटी Jochim के नाम से प्रसिद्ध थी, इसीलिए उसे Jochimsthal कहते थे। वहाँ बने सिक्के इसी आधार पर Jochimsthaler कहलाए। बाद में बहुत प्रचार के कारण यह नाम छोटा होकर Thaler रह गया, अर्थात मूल शब्द का प्रारंभ का भाग लुप्त हो गया। इस जर्मन Thaler का डच आदि में रूप daler हो गया, जो अंग्रेज़ी में डालर है। अमेरिका में चांदी के डालर सर्वप्रथम 1794 में बने। 1873 के बाद डालर सोने के भी बनने लगे। आजकल सोने या चांदी के डालर नाम के अनेक प्रकार के सिक्के, अनेक देशों में चल रहे हैं।

(* शब्दों की कहानी, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. सं. 500)

(**उदा** : दलाल स्ट्रीट, जनरल, पृ. सं. 6, 21 मई 1995)

11. रोल्टा में खाता, घोटाले की अफवाह

घोटाला * इसका अर्थ है गोलमाल या घपला। यह शब्द 'घोटला' शब्द से बना है। 'घोटना' सकारात्मक क्रिया है। घोटना का अर्थ है जोर से दबाना, मलना, रगड़ना। 'घोटा' से घोटाला शब्द की व्युत्पत्ति हुई। (* राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. सं. 238)। जिस घपले से संबंधित मुद्दे को बार-बार उछाला गया वंहा घोटाला कहलाया।

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, पृ. सं. 9, 13 जुलाई, 2002)

12. खलनायक = नायक का प्रतिद्वंद्वी - खल संस्कृत शब्द है।

यह विशेषण है। खल का अर्थ है दुष्ट, नीच, धोखेबाज़ को खलनायक कहा जाता है। ये शब्द राजनीतिक पत्रकारिता या फिल्म पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में प्रयुक्त होता है। 'खलनायक' शब्द का पत्रकारिता में बड़े ज़ोर-शोर से प्रयोग हो रहा है।

13. पाकिस्तान में 10 अक्तूबर को मतदाता 6 बार वोट डालेंगे।

मतदाता : मत + दाता 'मत' संस्कृत शब्द है। ये विशेषण है।

मत* का अर्थ है सम्मत, माना हुआ या सम्मति देना। चुनाव * में अपना मत देना। चुनने की प्रक्रिया चुनाव कहलाती है। किंतु चुनाव शब्द का प्रयोग प्रतिनिधि के चयन के लिए प्रयुक्त होता है। 'वोट' भी इसी संदर्भ में आता है, विरोध या पक्ष में किसी प्रतिनिधि को सामूहिक रूप से चुनने की प्रक्रिया वोटिंग, मतदान चुनाव कहलाती है। वोट * देने वाले 'वोटर' मतदाता बना। इसी परिवेश में 'निर्वाचन' शब्द को भी भी जोड़ लिया गया। 'निर्वाचन' पुल्लिग है। ये 'निर्वच' का विकारी रूप है, जिसका मूल अर्थ है स्पष्ट रूप से कुछ कहना या अपना भाव प्रकट करना। इसी आधार पर निर्वाचन का प्रयोग दो प्रमुख अर्थों या विवक्षाओं में होता है। जब बहुत-सी चीज़ें हमारे सामने आती हैं और हमें उनमें से कोई आवश्यक और अपने काम की अथवा अपने पसंद की उनमें से कोई एक चीज़ चुननी या छांटनी पड़ती है तब मानो हम उस चीज़ का निर्वाचन करते हैं अर्थात् हम यह स्पष्ट करते हैं कि अमुक चीज़ या बात हमारे उपयोग या काम के लिए उपयुक्त और ठीक है।

यही भाव और विस्तृत करके इसका प्रयोग आजकल लोकतंत्र प्रणाली में अपना प्रतिनिधि नियत करने के संबंध में होने लगा है। इस प्रणाली में मतदाताओं को अपना प्रतिनिधि चुनने या नियत करने का काम कुछ विशिष्ट

योग्यता के आधार पर निश्चित करना पड़ता है और उसके पक्ष में अपना मत देना पड़ता है। इसका मूल आधार तो मतदाता का निर्णय या विचार होता है। हिंदी में इसके लिए 'चुनाव' भी उपयुक्त पर्याय है।

(* मत = राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. सं. 633)

(* चुनाव = राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. सं. 263)

(* वोट = चै. अं. हिं. श. पृ. सं. 1559)

(* निर्वाचन = शब्दार्थ विचार कोश, आचार्य रामचंद्र वर्मा, पृ. सं. 321)

14. अंडरवर्ल्ड = अपराधी वर्ग अंडरवर्ल्ड कहलाता है। ये व्यक्ति अपनी माँगों को पूरा करने के लिए गलत तरीकों या आपराधिक तत्वों का प्रयोग करते हैं। जनसामान्य में प्रचलित यह शब्द 'अंडरवर्ल्ड' के रूप में ही व्यवस्थित रह गया।

(**उदा** : पंजाब केसरी, मुखपृष्ठ, 5 दिसम्बर, 2001)

15. साइबर हमला = अब तक हथियारों, बम, मिसाइल आदि से हमले होते हुए देखे गये किन्तु आधुनिकीकरण के साथ-साथ अब सॉफ्टवेयर के जरिये अंतरिक्ष में हमले होने लगे हैं उसे साइबर हमला कहा गया।

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका, पृ. सं. 14, 25 दिसम्बर, 2001)

5.11 निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में देखा जा सकता है कि हिंदी पत्रकारिता अपने परिवेश को संक्षिप्तियों, आगत शब्दावली, अनुवाद के माध्यम व जनसमुदाय में प्रचलित शब्दों को बटोरे पाठकों को आकर्षित करती आ रही है।

यह भी देखा जा सकता है कि भाषा की समृद्धि में अन्य स्त्रोतों के साथ आगत शब्दों का अपना निजी महत्व है और भाषा-तात्विक दृष्टि से भाषा के प्रवाह के साथ विदेशी शब्दों को अपनाया गया है, जिस युग में क्षण-क्षण में कपड़ों के डिज़ाइन और उनकी काट बदलती रहे, फैशन अपना नया रूप प्रदर्शित करते हों, जीवन में डॉक्टरी सहायता की विशेष आवश्यकता प्रतीत होने लगी हो, मनोरंजन के साधनों में विदेशी खेलों का प्रचार बढ़ रहा हो तो जीवन के प्रत्येक पक्ष में विदेशी शब्द घुस आये। इसी प्रकार नई सामाजिक, राजनीतिक चेतना के उत्पन्न होने पर उनसे संबंधित अनेक शब्द हिंदी में स्थान पा गये और हिंदी पत्रकारिता ने भी इसे अपना लिया।

हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य है कम से कम शब्दों में व कम समय में पाठकों को ज्यादा से ज्यादा सामग्री परोसें। इसी प्रवृत्ति को अपनाते हुए पत्रकारिता ने संक्षिप्तिकरण की प्रक्रिया को स्वीकार किया है।

आगे यह भी स्पष्ट है कि संप्रेषण के माध्यम को सरल बनाने के लिए कैसे सामान्य शब्दावली का इस्तेमाल किया जाता है।

मानव की प्रवृत्ति है कि आये दिन कुछ नया काम करें। शब्दों को गढ़ना उसकी आदत है। इसी लगाव व दिलचस्पी के कारण आये दिन नये-नये शब्दों की उत्पत्ति हो रही है, जो जनसामान्य में प्रतिदिन प्रयोग में आने लगी है।

पंचम अध्याय में उपयोग की गई पत्र-पत्रिकाएँ

पुस्तकें

1. **शब्दश्री** : कैलाशचन्द्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

2. **शब्दों की कहानी** : डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

शब्द कोश

1. **राजपाल हिंदी शब्द कोश** : डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली

2. **चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिंदी शब्द कोश** : डॉ. सुरेश अवस्थी, डॉ. इंदुजा अवस्थी, एलाइड पब्लिशर्स लि., ए-104, मायापुरी, फेज़-II, नई दिल्ली-110 064

3. **शब्दार्थ विचार कोश** : आचार्य रामचन्द्र वर्मा, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली

समाचार पत्र

1. **जनसत्ता** : संपादक प्रभाष जोशी, 9-10, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110 002

2. **दैनिक भास्कर** : रमेशचन्द्र अग्रवाल, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, फेज़-II, नोएडा

3. **नवभारत टाइम्स** : रामकृपाल सिंह, 7, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110 002

4. **स्वतंत्र वार्ता** : डॉ. राधेश्याम शुक्ल, एजीए पब्लिकेशंस, लोअर टैंक बंड, हैदराबाद-500 050

5. **आज** : शार्दुल विक्रम गुप्त, शाश्वत प्रिंटर्स लि., मज़हरुल हक पथ, पटना

6. **राजस्थान पत्रिका** : गुलाब कोठारी, राजस्थान पत्रिका प्रेस, केसरगढ़, जवाहरलाल नेहरू मार्ग/गुलाब बाग, एमआई रोड, ई-5, संस्थानिक क्षेत्र, झालाना, जयपुर

7. **राष्ट्रीय सहारा** : प्रधान संपादक जयब्रत राय, सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन, 28, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली

8. **दैनिक जागरण** : संजय गुप्ता, 501, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली

9. **पंजाब केसरी** : विजय कुमार, 2, प्रिंटिंग प्रेस कॉम्प्लेक्स, वज़ीरपुर, नई दिल्ली

10. **डेली हिन्दी मिलाप** : विनय वीर, कट्टलमंडी, मोजमजाही मार्केट, हैदराबाद-500 001

11. **हिन्दुस्तान** : मृणाल पाण्डेय, 18/20, कस्तुरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110 001

12. **पाञ्चजन्य** : तरुण विजय, देशबंधु गुप्ता मार्ग, झंडेवाला, नई दिल्ली- 110 055

पत्रिकाएँ

1. **जागरण उदय** : संजय गुप्ता, 501, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली

2. **इंडिया टुडे** : अरुण पुरी, लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110 001

3. **जागरण सखी** : प्रगति गुप्ता, 501, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली

4. **सेवन हिल्स** : प्रधान संपादक डॉ. श्याम सुंदर शर्मा, 145, अजनी चौक, प्रशांत नगर, वर्धा रोड, नागपुर, 440 015

5. **आउटलुक** : विनोद मेहता, ए-बी-10, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - 110 029

6. **क्रिकेट टुडे** : मनीष वर्मा, एक्स-30, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-II, नई दिल्ली

7. **कुरुक्षेत्र** : रामबोध मिश्र, कृषि मंत्रालय विभाग, 467, कृषि भवन, नई दिल्ली-110 001

8. **माया** : आलोक मित्र, 281, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

9. **दलाल स्ट्रीट जर्नल** : वी. बी. पडोडे, 105, श्रेयस बिल्डिंग, न्यू लिंक रोड, अंधेरी (प.), मुम्बई-400 008

10. **वनिता** : प्रेमा माम्मन मैथ्यु, ए-146, पहली मंजिल, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-110 024

षष्ठ अध्याय

उपसंहार

षष्ठ अध्याय
उपसंहार

''हिन्दी पत्रकारिता की शब्दावली नए स्रोत नई संरचनाएँ : एक विश्लेषण'' विषय पर शोध का मूल उद्देश्य आज की हिन्दी पत्रकारिता के अनेक क्षेत्रों - खेलकूद, फिल्म, पारिवारिक (महिला जगत) व्यवसाय, विज्ञान और साहित्य में विकसित आधार पर निर्माण-प्रक्रिया और प्रचलित रूपों का अध्ययन रहा है। विभिन्न स्रोतों की यह शब्दावली किस प्रकार लोकप्रिय होती हुई, जन-सामान्य तक पहुँच रही है, इसका भी एक विवेचन साथ-साथ सम्पन्न करना है। तदर्थ पत्रकारिता कई मार्ग अपनाती है। जन-सामान्य तक पहुँचने के लिए उसने प्रारंभिक युग में पूर्वी और पश्चिमी बोलियों का सहारा लिया था। आधुनिक युग में खड़ी बोली के रूप में हिन्दी के सरल, सुबोध और मानकीकृत स्वरूप में विकसित होकर हिन्दी भाषा का बहुमुखी विकास कर रही है। हिन्दी के भाषा रूपों में स्थिरता स्थापित हो रही है।

संप्रेषण मूलत: एक सामाजिक प्रक्रिया है। सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम होने के कारण भाषा अपने व्यवहार में विषम रूपी होने के लिए बाध्य है। क्योंकि प्रत्येक भाषा क्षेत्र का अपना एक भिन्न समाज होता है और

मनुष्य अपने आसपास के इसी समाज से, वातावरण से भाषा सीखता है। अब मनुष्य जो भाषा बोलेगा उसमें उसका समाज निश्चित रूप से प्रतिबिंबित होगा। भाषा व्यवहार के कई स्तरों पर और कई संदर्भों में दिखाई देती है। भौगोलिक दृष्टि से भाषायी स्वरूप बदलता जाता है। भाषा व्यवहार और सांस्कृतिक मूल्य के धरातल पर जनपदीय भाषाओं और स्थानीय बोलियों का रूप ले लेती है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में समाज में खुलने वाले नित-नूतन संदर्भों में प्रयुक्त होने के लिए भाषा को सक्षम बनाने के लिए आज भी उर्दू, अरबी, फारसी, हिन्दुस्तानी और संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग भी होता है। भाषा सम्पर्क स्थापित करने के लिए समाचार-पत्र व पत्रिकाएँ एक बृहद् माध्यम है। किसी भी विषय विशेष के लिए परिष्कृत भाषा-शैली की जानकारी इनमें अधिक मिलती है। क्योंकि सामान्य पाठक तक संप्रेषित कर पाने की क्षमता समाचार-पत्रों में अधिक होती है। पारिवारिक व्यवहार, संप्रेषणीयता, दैनिक आचारण आदि के संदर्भ में जब समाज एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग सहज और स्वाभाविक स्तर पर स्वीकार करने लगता है, इस प्रकार के भाषायी प्रयोग को पत्रकारिता शीघ्र अपना लेती है। इस प्रकार प्रत्येक विषय क्षेत्र की भाषा तथा शब्दावली की अपनी एक अलग पहचान व विशिष्टता होती है।

सम्यक रूप से दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी पत्रकारिता की अभिवृद्धि में शब्द समूह के हर एक वर्ग का अपना महत्व है। यदि किसी भाव की अभिव्यक्ति के लिए शब्द का अभाव हो तो पहले तत्सम, तद्भव और उससे भी अभिव्यक्ति संभव न हो तो देशी भाषाओं अर्थात् बंगला, मराठी, तमिल, तेलुगु आदि के शब्दों को ग्रहण करती है। तब भी असंभव हो तो विदेशी भाषा को अपनाती है।

आधुनिक युग में जन्में या नए रूप में पाये गए शब्दों को जिनका प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए जाने के लिए पारिभाषिक शब्दों का निर्माण होता है, भी इस कोटि से देख सकते हैं। इसी कारण हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में उसे उसी रूप में ग्रहण किया जाता है।

शब्द स्रोतों का विश्लेषण करते समय यह देखा जा सकता है कि विषय के साथ-साथ भाषा भी बदलती है। उसकी शब्दावली में भी परिस्थितियों व देशकाल वातावरण के अनुरूप भेद आ जाता है और समय के साथ-साथ उसकी अभिव्यक्तियों में वाक्य-गठन में भी नयापन आ जाता है। एक ऐसी स्थिति आ जाती है, जहाँ जनभाषा के रूप में उसे सामने लाने के लिए प्रचलित शब्दों को लेना आवश्यक हो जाता है। हिन्दी के भाषायी वर्गीकरण के

आधार पर विभिन्न शब्दावलियों को क्रियायुक्त, विशेषण युक्त, क्रिया-विशेषण युक्त, संज्ञायुक्त, शब्दों, अव्यय, सामान्य व अन्य रूपों को भिन्न-भिन्न स्तर पर देखा जा सकता है।

शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में अभिव्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। कुछ सामान्य अभिव्यक्तियाँ होती हैं, जिनका प्रयोग सामान्य भाषा में भी करते हैं, लेकिन खेलकूद, फिल्म, व्यवसाय, साहित्य, विज्ञान, पारिवारिक व राजनैतिक पत्रकारिता में ये अभिव्यक्तियाँ बहुत ही प्रभावशाली, रसीली व लचीलीदार, मोहक बनकर पाठकों के लिए संप्रेषणीय और बोधगम्य बना देती है। इनके प्रयोग से हिन्दी पत्रकारिता की भाषा में सहजता और प्रवाहमयता के साथ-साथ हिन्दी भाषा के विकास में भी सहजता मिलती है।

पत्रकारिता की इन विभिन्न क्षेत्रों की प्रयुक्तियों को मुहावरेदार, गुणात्मक, क्रियात्मक एवं परिस्थितिजन्य, सुझावात्मक, कथनपरक और उपमा के साथ अभिव्यक्तियों में रखा गया है और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रयुक्त शब्द वाक्य-रचना के स्तर पर भी नए रूप में दर्शित होते हैं।

भाषा को संचार का माध्यम बनाने के लिए शैली, शब्द-चयन, वाक्य रचना, शब्द स्रोत, बोलचाल, लोकप्रचलित व मुहावरों आदि के स्तर पर विस्तार से देखा जा सकता है। यही भाषा विकास की दिशा को सूचित करता है।

निष्कर्ष यह निकलता है कि हिन्दी पत्रकारिता नये-नये शब्दों को ग्रहण करती आयी है। क्योंकि इसका क्षेत्र सीमित नहीं है, बल्कि व्यापक है और इसे अन्य प्रकार की शब्दावली ग्रहण करने की व भाषा में प्रयोग कर शब्दों को सुन्दर व सटीक बनाने की क्षमता है। संप्रेषण का माध्यम सुबोध, सुगम्य, बहु-आयामी बहु प्रयोजनीय बनाने के लिए आधुनिक युग में नये-नये रूपों में हिन्दी के मानकीकरण का कार्य गंभीरता में किया जा रहा है।

हिन्दी की पत्रकारिता की भाषा के निम्न उदाहरण इस संबंध में रखे जा सकते हैं -

खेलकूद पत्रकारिता की शब्दावली :

1. राष्ट्रहित (15) - तत्सम शब्दावली
2. गेंदबाज़ (18) - तद्भव शब्दावली

3. भारत का दौरा (16) किया -देशज शब्दावली

4. खेल प्रेमियों के लिए बेहतर - विदेशी शब्दावली होगा (उर्दू)

5. स्ट्राइकर पिल्लै (4) - अंग्रेजी शब्दावली

6. एकेडमी (3) की आवश्यकता है - पारिभाषिक शब्दावली

7. रोमांचक (11) होता हैं - पारिभाषिक शब्दावली

8. तकनीकी (9) दक्षता बढ़े - पारिभाषिक शब्दावली

9. टीमों (19) का मुकाबला - रूपरचना

10. अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामेन्टों (15) -संस्कृत +अंग्रेजी) संकर शब्दावली

11. मैच काफी रोमांचक होते हैं (11) - गुणात्मक अभिव्यक्ति

12. खेलने का प्रयास करना चाहिए (22) - सुझावात्मक अभिव्यक्ति

13. कैस्ट्राल के हाथ खींचने के बाद (14)- हाथ खींचना (दूर रहना) मुहावरेदार अभिव्यक्ति

14. प्रकाश अमृतराज फाइनल में (30) में - आगत (अंग्रेजी) शब्दावली

15. आईटीएफ (25) सेटेलाइट - संक्षिप्तियाँ
(उदाहरण दैनिक जागरण, पृ- 14, (खेल जागरण), 21 जून, 2003 से साभार)

फिल्म पत्रकारिता की शब्दावली

1. अभिनेत्री (1) - तत्सम शब्दावली

2. किरदार (9) - देशज शब्दावली

3. एक्टिंग (2) की दुनिया - विदेशी (अंग्रेजी) शब्दावली

4. कमर्शियल फिल्म (8) - पारिभाषिक शब्दावली

5. फिल्मों (21) - रूपरचना

6. क्षेत्रीय फिल्मों (17) - (संस्कृत +अंग्रेजी) संकर शब्दावली

7. बेहतरीन विषयों (19) - (उर्दू+अंग्रेजी) संकर शब्दावली

8. फिल्म बनाना अपने आप में एक जुआ है (23) - जुआ (खेल) गुणात्मक अभिव्यक्ति

9. सुपारी रिलीज (15) हुई - सामान्य शब्दावली

10. अंडरवर्ल्ड (14) - नई शब्दावली

11. बालीवुड (25) - नई शब्दावली

(**उदा** : राजस्थान पत्रिका (21 जून, 2003) के बालीवुड परिशिष्ट से साभार)

राजनीतिक पत्रकारिता की शब्दावली

1. सरकार (1) तद्भव शब्दावली

2. उपभोक्ता (4) - तत्सम शब्दावली

3. बोझ (15) न पड़े - देशज शब्दावली

4. राहत (16) मिलती हो - विदेशी (उर्दू) शब्दावली

5. चैनल (5) - पारिभाषिक शब्दावली

6. ऑपरेटरों (6) - रूपरचना

7. विस्तृत रिपोर्ट (8)- संस्कृत + अंग्रेजी (संकर शब्दावली)

8. जोखिम लेने के मूड़ में (18) - गुणात्मक अभिव्यक्ति

9. कैस (14) 15 जुलाई से लागू - संक्षिप्तियाँ

10. चुनाव (17) इसी वर्ष होने हैं - नई शब्दावली

(**उदा** : दैनिक जागरण, 21 जून, 2003 मुखपृष्ठ से साभार)

व्यावसायिक पत्रकारिता की शब्दावली

1. उपभोक्ता (1) - तत्सम शब्दावली
2. कारोबार (5) - तद्भव शब्दावली
3. करीब (10) - देशज शब्दावली
4. सैद्धान्तिक (7) - पारिभाषिक शब्दावली
5. पावर ब्रांडों (15) - रूपरचना
6. एचएलएल (3) हिन्दुस्तान लीवर लि.) - संक्षिप्तियां
7. रिफाइंड तेल (12) - (अंग्रेजी + संस्कृत) संकर शब्दावली
8. डालडा ब्रांड (75) - नई शब्दावली

(उदा : दैनिक जागरण, पृ. 10, 21 जून, 2003 से साभार)

वैज्ञानिक पत्रकारिता की शब्दावली

1. चिकित्सा (5) - तत्सम शब्दावली
2. हिम्मत (3) - तद्भव शब्दावली
3. मुद्दे (2) - देशज शब्दावली
4. ट्यूमर (9) - विदेशी (अंग्रेजी) शब्दावली
5. हॉर्मोन्स (21) - रूपरचना
6. माइग्रेन बनकर (12) - (अंग्रेजी+ देशज) संकर शब्दावली
7. विज्ञान और जादू में फर्क करना मुश्किल हो गया (18) - गुणात्मक अभिव्यक्ति
8. अनगिनत जिन्दगियाँ ऐसी हैं, जो ता उम्र दर्द से छटपटाती रही (19) - क्रियात्मक अभिव्यक्ति
9. मरीजों का आग्रह है कि दर्द को स्वयं में एक स्थिति माना जाए (20) - कथनपरक अभिव्यक्ति
10. रिफ्लेक्ट सिंथेटिक ट्रॉफी (22) - पारिभाषिक शब्दावली

11. दर्द को खत्म करने वाले **जैविक** (23) तत्वों की एक सेना उस ओर रवाना कर देता - नई शब्दावली

(**उदा** : स्वतंत्र वार्ता, साप्ताहिकी के मुखपृष्ठ 15 जून, 20003 के साभार)

पारिवारिक पत्रकारिता की शब्दावली

1. आकर्षक (2) - तत्सम शब्दावली
2. खूबसूरत (1) - तद्भव शब्दावली
3. कामयाब (25) - देशज शब्दावली
4. मीडिया (9) - विदेशी शब्दावली (अंग्रेजी)
5. पार्टियों (10) - रूपरचना शब्दावली
6. चर्चित मॉडल (19) उनके विचार सुनने से यही लगता है - (अंग्रेजी+संस्कृत) संकर शब्दावली
7. मॉडलिंग (17) - पारिभाषिक शब्दावली
8. यह तथ्य है कि स्त्रियाँ **आकर्षक चेहरे** के बजाय खुशमिजाजाजी को ज्यादा पसंद करती है (8) - गुणात्मक अभिव्यक्ति
9. मेरी तरह के पुरुष किसी भी तरह का कोई मुगालता नहीं पालते (11) - कथनपरक अभिव्यक्ति
10. **जिम** (232) जाया करते हैं - नई शब्दावली

(उदा : स्वतंत्र वार्ता, साप्ताहिकी पृ. II, 15 जून, 2003 से साभार)

समाचार पत्रों में प्रयुक्त भाषा और शब्दावली के प्रयोग के कुछ उदाहरण आगे प्रस्तुत हैं

(आगे समाचार पत्रों की प्रति संलग्न हैं)

भारत-पाक हाकी श्रृंखला से बढ़कर है राष्ट्रहित : पिल्लै

जागरण संवाद केंद्र/ एजेंसी, गुड़गांव नई दिल्ली

भारतीय हाकी टीम के कप्तान धनराज पिल्लै ने पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय हाकी संबंध बहाल करने का समर्थन किया लेकिन कहा कि इसके लिए राष्ट्रहित को ताक पर नहीं रखा जाना चाहिए। अनुभवी स्ट्राइकर का मानना है कि युवा पीढ़ी का हाकी की तरफ विशेष रुझान नहीं है। उन्होंने कहा कि हाकी में भारत के पास प्रतिभाओं की कमी नहीं है पर वह मानते हैं कि क्रिकेट की तर्ज पर हाकी खेल को भी प्रोत्साहन देने वाली एकेडमी की आवश्यकता है। अगले साल एंथेस 'ओलंपिक में भारत के दावे को मजबूत बताते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश को बड़ी सफलता दिलाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं और उन्हें भी 'बड़ी जीत ' का बेसब्री से इंतजार है।

करिश्माई स्ट्राइकर पिल्लै ने कहा है कि, ' हमें पाकिस्तान के खिलाफ अधिक मैच खेलने चाहिये। यह सिर्फ हाकी ही नहीं बल्कि खिलाड़ियों और खेलप्रेमियों के लिये भी बेहतर होगा। लेकिन यह फैसला लेते समय हमारे राष्ट्रीय हितों की अनदेखी नहीं की जा सकती। ' आखिरी बार दोनों टीमों का मुकाबला चार साल पहले हुआ था जब पाकिस्तान ने चार टेस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए भारत का दौरा किया। इसके बाद भारतीय टीम भी

पाकिस्तान गई थी। अगले हफ्ते चार देशों के पेनासोनिक कप में भाग लेने जर्मनी

■ अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों की मेजबानी जरूरी

रवाना हो रही भारतीय टीम की अगुआई करने वाले पिल्लै ने कहा कि भारत को पाकिस्तान के खिलाफ हर साल 20 मैच खेलने चाहिये। उन्होंने कहा, ' हमें उनके खिलाफ दस टेस्ट मैचों की मेजबानी करनी चाहिये और इतने ही मैच वहां जाकर खेलने चाहिये। भारत और पाकिस्तान के मैच काफी रोमांचक होते हैं और लोगों की उसमें अधिक रुचि होती है।' उन्होंने कहा, ' लोगों की उत्सुकता पैदा होने से हाकी को आर्थिक रुप से भी फायदा होगा।' पिल्लै ने भारत में अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों की कमी पर भी चिंता जताई और कहा कि देश में हाकी की लोकप्रियता घटने का एक यह भी कारण है। उन्होंने कहा, ' भले ही भारतीय टीम कई विदेशी दौरों पर जा रही है लेकिन हमने अर्से से किसी टूर्नामेंट की मेजबानी नहीं की। आखिरी बार 2001 में जर्मनी की टीम एक टेस्ट श्रृंखला खेलने भारत आई थी। ' पिल्लै ने कहा, ' हमें हर साल कुछ अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों की मेजबानी करनी चाहिये और जर्मनी, आस्ट्रेलिया तथा हालैंड के खिलाफ अधिक से अधिक मैच खेलने का प्रयास करना चाहिये जिससे हमारे युवा खिलाड़ियों की तकनीकी दक्षता बढ़े। ' भारतीय कप्तान ने कहा कि भारतीय टीम के प्रायोजन के लिये कुछ कार्पोरेट समूहों से बात चल रही है। पिछले महीने कैस्ट्राल के हाथ खींचने के बाद फिलहाल भारतीय टीम के पास कोई प्रायोजक नहीं है।

हाकी के लिए खेल मैदान की मुख्य रूप से आवश्यकता होती है और यह आवश्यकता हर स्कूल में आसानी से पूरी हो सकती है।

हाकी भारतीय खेल की एक अनुपम धरोहर है। इसको अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हाकी प्रेमियों व हाकी के खिलाड़ियों को मिलकर प्रयास करने होंगे।

'स्कूल स्तर पर हाकी को बढ़ावा जरूरी '

जागरण टीम , गुड़गांव/नई दिल्ली

स्कूलों के सिक्स ए साइड आमंत्रण हाकी टूर्नामेंट शुरू होंगे। भारतीय हाकी टीम के कप्तान धनराज पिल्लै ने गुड़गांव के हेरिटेज स्कूल में यह घोषणा की। पब्लिक स्कूलों में हाकी को बढ़ावा देने के लिए धनराज हेरिटेज स्कूल का सहयोग करेंगे।

इस अवसर पर पिल्लै ने कहा कि हाकी को बढ़ावा देने के लिए स्कूली स्तर पर इसका प्रशिक्षण दिया जाना बहुत जरूरी है, बल्कि मैं तो यह कहता हूं कि इसे विषय के रूप में लागू किया जाना चाहिए। स्कूल में नई प्रतिभा के हाकी में रुझान को देखकर वह बहुत खुश हैं। उन्होंने कहा कि इससे भारत मां की खोई खुशियां वापिस लौटेंगी। वह आशा करते हैं कि और भारतीय स्कूलों से भारतीय हाकी को फिर से स्थापित करने के लिए जूनियर स्तर पर सहयोग मिल सकेगा।

इस मौके पर मोहित जैन ने कहा कि वे खेल के क्षेत्र में नया लक्ष्य स्थापित करना चाहते हैं। बच्चों के शैक्षिक जीवन और संपूर्ण विकास में खेल की अहम भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी इससे अनुशासन आदि की बातें सीखता है। हाकी को पुन: स्थापित करने के लिए उनके स्कूल के बच्चे योगदान दें, इसकी योजना बनाएंगे।

फिल्म पत्रकारिता की शब्दावली

फिल्म पत्रकारिता

नया रूप

ज्यादातर लोग नंदिता दास को शबाना आजमी और स्मिता पाटिल की परम्परा को आगे बढ़ाने वाली अभिनेत्री मानते हैं। नंदिता को ऐक्टिंग की दुनिया में बहुत लम्बा अर्सा नहीं हुआ है, फिर भी 'फायर', '1947-अर्थ', 'बवंडर' और 'लाल सलाम' जैसी अहम फिल्मों के कारण उन्होंने अपनी एक मजबूत पहचान बना ली है।

कल ही उनकी एक और फिल्म 'सुपारी' रिलीज हुई है, जिसमें उन्होंने माफिया सरगना की ऑफबीट किस्म की भूमिका अदा की है और इस तरह पहली बार दर्शकों ने नंदिता को इस रूप में देखा।

इधर वे एन. चंद्रा के निर्देशन में बनने वाली 'कगार' में भी काम कर रही हैं। 'सुपारी' के बाद यह भी एक कॉमर्शियल फिल्म है। तो क्या यह माना जाए कि नंदिता ने अब कला फिल्मों की बजाय कॉमर्शियल सिनेमा की तरफ ही रुख कर लिया है? जवाब में वे कहती हैं, 'मुम्बई में लोगों ने फिल्मों का इस तरह का बंटवारा क्यों किया है, यह मैं आज तक नहीं समझ पाई हूं। पर मैं कॉमर्शियल सिनेमा के खिलाफ कतई नहीं हूं। मैंने 'अक्स' में अमिताभ बच्चन की पत्नी का रोल भी किया। मैं किसी भी फिल्म का ऑफर मंजूर करने से पहले अपने किरदार, थीम और निर्देशक पर ध्यान देती हूं। फिर भी फिल्म बनाना अपने आप में एक जुआ है। बनते-बनते कई बार कुछ नए कैरेक्टर जुड़ जाते हैं और कई बार पूरी स्क्रिप्ट ही बदल जाती है।'

'सुपारी' में एक महिला डॉन का किरदार निभाने का फैसला उन्होंने कैसे किया? इस सवाल के जवाब में वे नपा-तुला जवाब देती हैं, 'देखिए, मैं एक ही तरह का किरदार दुबारा नहीं निभाती। मैं हमेशा चुनौतीपूर्ण और वैरायटी वाले किरदारों को निभाना चाहती हूं। तो जब पद्म कुमार ने 'सुपारी' में एक अंडरवर्ल्ड डॉन का किरदार निभाने के लिए कहा, तो मैंने तुरन्त हां कर दी। इस किरदार में कई रंग हैं। वह ऊपर से तो एक समाज सेविका नजर आती है, पर उसकी हकीकत यह है कि वह अंडरवर्ल्ड डॉन है। इस किरदार को निभाने के लिए मुझे कुछ अलग तरह के मैनरिज्म को अपनाना पड़ा।'

इधर नंदिता कई फिल्मों में व्यस्त हैं। वे अनंत कलानी की फिल्म 'एक दिन चौबीस घंटे' कर रही हैं। इसके अलावा एक विदेशी फिल्म में भी उन्होंने काम किया है। यह दस मिनट की एक शॉर्ट फिल्म है, जिसकी पूरी शूटिंग न्यूजीलैण्ड में हुई है। हिन्दी के अलावा उन्होंने 'देवीरी', 'हरीभरी', 'स्वप्नेर संधाने', 'पुनरादिवसम' और 'विश्वप्रकाश' जैसी अलग-अलग भाषाओं की फिल्में भी की हैं। क्षेत्रीय फिल्मों में काम करने की वजह? 'क्योंकि मुझे उनमें कुछ हटकर करने का मौका मिल रहा था। यह ऐसे किरदार हैं, जो मैं शुरू से ही करना चाहती थी। इन फिल्मों में मैंने ज्यादातर नए निर्देशकों के साथ काम किया है। मेरे लिए विभिन्न भाषाओं की फिल्में करना चुनौती की तरह है। मैंने क्षेत्रीय भाषा की फिल्मों में काम करना बंद नहीं किया है। अभी ममूटी के साथ एक कन्नड़ फिल्म करने वाली हूं।' नंदिता पर यह आरोप भी लगता है कि वे सिर्फ विवादास्पद फिल्में ही करती हैं। लेकिन वे इनकार करती हैं, 'यह गलत आरोप है। मैं अपनी तरफ से जानबूझकर विवादास्पद फिल्में नहीं चुनती। बल्कि मैं हमेशा बेहतरीन विषयों वाली फ़िल्म करना चाहती हूं, ऐसी फिल्में जो कुछ सवाल उठाती हैं और जो जरूरी भी हैं।'

– शान्तिस्वरूप त्रिपाठी

(उद्धृत: राजस्थान पत्रिका (8 जून, 2003) के बॉलीवुड परिशिष्ट से साभार)

हिंद लीवर का तेल व वसा व्यवसाय अमेरिकी कंपनी बूंगी के हवाले

प्रेट्र, मुंबई

प्रमुख उपभोक्ता सामान कंपनी हिंदुस्तान लावर लि. (एचएलएल) ने भारत एवं नेपाल में अपने तेल एवं वसा कारोबार को अमेरिकी कंपनी बूंगी लिमिटेड को हस्तांतरित करने का निर्णय लिया है।

कंपनी की विज्ञप्ति के अनुसार एचएलएल के निदेशक मंडल ने शुक्रवार को यहां इस प्रस्तावित हस्तांतरण को अपनी सैद्धांतिक मंजूरी दे दी। इस बारे में उसे अब शेयरधारकों की मंजूरी लेनी होगी। एचएलएल ने कृषि व्यवसाय एवं खाद्य कंपनी बूंगी के साथ इस संबंध में एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। इस हस्तांतरण के बदले एचएलएल को लगभग 90 करोड़ रुपये मिलेंगे।

एचएलएल के सूत्रों ने बताया कि करीब सात दशक पुराने 'डालडा' ब्रांड तथा अन्य तेल व वसा उत्पादों का उत्पादन रोक दिया जाएगा जिनसे पिछले

'डालडा' समेत अन्य तेल व वसा उत्पादों का उत्पादन अब नहीं होगा

साल करीब 388 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित हुआ था। हालांकि, कंपनी बूंगी के साथ एक वितरण समझौता कर इन उत्पादों का वितरण जारी रखेगी जिसके लिए वह निर्धारित शुल्क लेगी।

कंपनी ने अपने मुख्य कारोबार पर ध्यान केंद्रित करने तथा मौजूदा ब्रांड पोर्टफोलियो को युक्तिसंगत बनाने के उद्देश्य से ही यह कदम उठाया है। इसके अनुसार कंपनी मूल्य वर्द्धित प्रसंस्कृत खाद्य क्षेत्र पर अपना ध्यान आगे भी केंद्रित रखेगी। कंपनी इस क्षेत्र में नॉर, किसान और अन्नपूर्णा जैसे पावर ब्रांडों की मदद से अपनी स्थिति को और मजबूत बनाने की कोशिश करेगी। खाद्य तेल एवं वसा कारोबार में वनस्पति, रिफाइंड तेल और बेकरी फैट्स का उत्पादन व विपणन शामिल हैं। विज्ञप्ति के अनुसार इस हस्तांतरण में तमिलनाडु के त्रिची स्थित उत्पादन यूनिट तथा उसके करीब 300 कर्मचारी शामिल हैं। इन कर्मचारियों की सेवाएं आगे भी बनी रहेंगी तथा उनकी सेवा शर्तों में कोई तब्दीली भी नहीं होगी।

(आ: उपर्युक्त प्रति दैनिक जागरण, पृ. 10, 21 जून, 2003 से साभार)

राजनीतिक शब्दावली:

प्रधानमंत्री वाजपेयी की चीन यात्रा कल से

चीन से रिश्तों का असली मुद्दा तो सीमा-विवाद ही है

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

रविवार से प्रारंभ हो रही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा के एजेंडे में भले ही सीमा-विवाद मुख्य मुद्दा न हो, लेकिन पिछले चार दशक के भारत-चीन रिश्तों पर इस विवाद की छाया हमेशा रही है और इन संबंधों को इसी के आइने में देखा जाएगा। वैसे तो पंचशील समझौते के तहत चीन ने भारत के शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के विचार को स्वीकारा था, लेकिन 1962 के हमले के जरिए उसने इसका गला भी घोंट दिया। आज भी भारत के साथ संबंधों को बेहतर बनाने की चीन की इच्छा के पीछे सीमा विवाद को सुलझाने की मंशा कम, बल्कि अमेरिका के साथ भारत के गहराते रिश्तों से उपजी चिंता का कारण ज्यादा है।

वैसे तो चीन ने 1950 से ही भारत के लिए समस्याएं खड़ी करना शुरू कर दिया था, लेकिन 1954 में जब दोनों देशों ने पंचशील पर हस्ताक्षर किए तो एक उम्मीद बंधी थी कि अब आगे वह ऐसा कोई काम नहीं करेगा जो पंचशील की भावना के खिलाफ हो। लेकिन 1962 में वह हुआ, जिसकी उम्मीद किसी को भी नहीं थी। चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। यह पंचशील के पांच में से उन दो सबसे प्रमुख सिद्धांतों की हत्या के समान था, जिनमें एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने और हमला न करने की शपथ ली गई थी। इससे पहले भारत ने हमेशा हर मोर्चे पर चीन का साथ दिया था। चीन ने भारत की इस दरियादिली को उसकी कमजोरी समझा और संयुक्त राष्ट्र से मान्यता मिलते ही उसके नेता भारत के तमाम भूभाग पर अपना दावा ठोंकने लगे। 1962 के हमले में चीन ने भारत के नेफा क्षेत्र (अब अरुणाचल प्रदेश) के 2500 वर्ग किलोमीटर भूभाग पर कब्जा कर लिया। यही नहीं, चीन इतने से ही संतुष्ट नहीं हुआ। इसके बाद उसके नेता भारत के पूर्वी भाग में 90 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर अपना दावा जताने लगे। यह दावा आज तक बरकरार है। इस बीच भारत के जख्म और नमक छिड़कने के लिए 1963 में चीन ने पाकिस्तान से दोस्ती गांठी और उसके साथ एक गैर-कानूनी समझौता कर डाला। इसके तहत पाकिस्तान ने गुलाम कश्मीर का 5,180 वर्ग किलोमीटर का भूभाग चीन के हवाले कर दिया।

चीन ने 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान पाकिस्तान को सैन्य मदद भी पहुंचाई और भारत पर आपराधिक आक्रमण का आरोप लगाया। 1971 की भारत-पाक युद्ध के अवसर पर भी चीन का रुख भारत के खिलाफ ही रहा। उसका आरोप था कि भारत ने पाक के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया है। चीन ने बांग्लादेश के आजादी आंदोलन के प्रणेताओं को पृथकतावादी कह कर संबोधित किया। ■ शेष पृष्ठ 2 कालम 7 पर

संबंध एक नजर में

1954 : पंचशील समझौता

1962 : भारत पर हमला

1963 : पाक से भारत विरोधी समझौता

1965,71 : भारत-पाक युद्ध में भारत विरोधी रुख

1988 : राजीव गांधी की चीन यात्रा, सीमा विवाद को हल करने पर सहमति, संयुक्त कार्यदल गठित

1993 : राव की चीन यात्रा, एलएसी पर शांति के लिए समझौता

1996 : जेमिन की भारत यात्रा

(आ: दैनिक जागरण, 21 जून 2003 मध्यप्र०. से साभार)

राजनीतिक पत्रकारिता की शब्दावली:

[केबल] 15 जुलाई से ही लागू होगा

■ पालन न करने वाले टीवी चैनलों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई संभव

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

केबल की राजनीतिक संवेदनशीलता के मद्देनजर केंद्र सरकार किसी तरह का जोखिम लेने के मूड में नहीं है। सेट टॉप बॉक्स तथा पे-चैनलों की दरों को लेकर जनता में फैली बेचैनी को भांपते हुए वह यह सुनिश्चित करना चाहती है कि कैस लागू होने के बाद उपभोक्ताओं पर कोई अतिरिक्त बोझ न पड़े।

इस सिलसिले में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने शुक्रवार को सूचना व प्रसारण मंत्री को हर वह कदम उठाने की छूट दे दी, [illegible] इसके लिए चैनलों व केबल ऑपरेटरों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की भी प्रधानमंत्री ने उन्हें छूट दे दी।

दिल्ली सहित चार राज्यों में [illegible] चुनाव [illegible] होने हैं और [illegible] मुद्दा गंभीर हो सकता है। इस मुद्दे पर सूचना व प्रसारण मंत्रालय की तैयारियों का जायजा लेने के लिए प्रधानमंत्री ने सूचना व प्रसारण मंत्री रविशंकर प्रसाद को बुलाया। मंत्रालय की तैयारियों पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रसाद ने वाजपेयी को सौंपी।

प्रसाद ने बाद में संवाददाताओं को बताया कि प्रधानमंत्री कैस को सही मानते हैं और वह चाहते हैं कि यह 15 जुलाई से लागू हो। प्रसाद ने साफ कहा कि 15 जुलाई से कैस लागू नहीं करने वाले टी.वी. चैनलों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। प्रसाद ने जोर देकर कहा कि कैस 15 जुलाई से ही लागू होगा। इसमें कोई फेरबदल नहीं किया जाएगा। प्रधानमंत्री ने प्रसाद से कहा है कि कैस लागू होने में उपभोक्ताओं के हितों को सर्वोच्च वरीयता दी जानी चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कैस लागू करने के बाद उपभोक्ता केवल ऑपरेटरों को वही कीमत अदा

■ शेष पृष्ठ 2 कालम 6 पर

(उदा: दैनिक जागरण, 21 जून, 2003, मुखपृष्ठ से साभार)

खेलपत्रकारिता की शब्दावली

प्रकाश अमृतराज फाइनल में

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रकाश अमृतराज ने अपनी जीत का सिलसिला जारी रखते हुए आईटीएफ सेटेलाइट सर्किट टेनिस चैंपियनशिप के तीसरे चरण के फाइनल में प्रवेश कर लिया। अपने जमाने के मशहूर खिलाड़ी विजय अमृतराज के पुत्र प्रकाश ने शुक्रवार को विजय कानन को सीधे सेटों में 6-2 व 6-1 से हराया।

[illegible] वरीयता आनंद ने पिछले सप्ताह कानन को हरा कर चंडीगढ़ में फाइनल जीता था। उन्होंने एक बार फिर मुकाबले को लगभग एकतरफा करते हुए तीसरी वरीयता प्राप्त कानन को सेमीफाइनल में एक घंटे में हरा दिया। अमृतराज ने कहा कि पिछले तीन सप्ताह से एक दूसरे से खेलते हुए हम एक दूसरे के गेम को भली भांति समझ गये हैं। अमृतराज का फाइनल में इंडोनेशिया के प्रिमा सिमपाथियाजी से शनिवार को मुकाबला होगा। प्रकाश इस सर्किट में शुरू [illegible] अपने शानदार खेल से पूरे समय छाया रहा है। इस सप्ताह उसने एक सेट भी नहीं [illegible]

(उदा: दैनिक जागरण, पृ.14 (खेल जागरण), 21 जून, 2003 से साभार)

संदर्भ-ग्रंथ सूची

संदर्भ-ग्रंथ सूची

शब्दकोश एवं पुस्तकें

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
अवस्थी, डॉ. सुरेश, डॉ. इंदुजा	चैंबर्स अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश	एलाइड पब्लिशर्स लि., ए-104, मायापुरी, फेज़-II, नई दिल्ली-110 064
बाहरी, डॉ. हरदेव	राजपाल हिन्दी शब्दकोश	राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली
——	फादर कामिल बुल्के	एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110 055
वर्मा, आचार्य रामचन्द्र	शब्दार्थ विचार कोश	राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली
————	बैंकिंग शब्दावली	किताब घर, नई दिल्ली-110 002
चतुर्वेदी, शिवनारायण	प्रशासनिक शब्दमालाएँ	प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
चतुर्वेदी, महेन्द्र, भोलानाथ तिवारी	पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ	शब्दकार, 159, गुरु अंगद नगर, वेस्ट, दिल्ली-110 092
तिवारी, डॉ. भोलानाथ	शब्दों की कहानी	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
तिवारी, डॉ. भोलानाथ	शब्द विज्ञान	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
तिवारी, डॉ. भोलानाथ	शब्दश्री	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
पाटिल, डॉ. हणमंत राव	आधुनिक भाषा विज्ञान	प्रेम प्रकाशन मंदिर, 3012, बल्लीमारन, दिल्ली-110 006
भाटिया, कैलाशचन्द्र	हिन्दी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों का भाषा तात्विक अध्ययन	हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
मिश्र, नरेश	हिन्दी शब्द समूह का विकास	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
शर्मा, डॉ. गोपाल	सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन	शब्दकार, 159, गुरु अंगद नगर, वेस्ट, दिल्ली-110 092
डॉ. सत्यव्रत	हिन्दी शब्द समूह का विकास	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

समाचार पत्र

समाचार पत्र	संपादक का नाम	प्रकाशक
आज	शार्दूल विक्रम गुप्त	शाश्वत प्रिंटर्स लि., मज़हरुल हक पथ, पटना
जनसत्ता	प्रभाष जोशी	9-10, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली
डेली हिन्दी मिलाप	विनय वीर	कट्टलमंडी, मोजमजाही मार्केट, हैदराबाद-500 001
दैनिक जागरण	संजय गुप्ता	501, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली
दैनिक भास्कर	रमेशचन्द्र अग्रवाल	भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, फेज़-II, नोएडा
नवभारत टाइम्स	रामकृपाल सिंह	7, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110 002
पंजाब केसरी	विजय कुमार	2, प्रिंटिंग प्रेस काम्प्लेक्स, वज़ीरपुर, दिल्ली
पाञ्चजन्य	तरुण विजय	देशबंधु गुप्ता मार्ग, झंडेवाला, नई दिल्ली-110 055
राजस्थान पत्रिका	गुलाब कोठारी	राजस्थान पत्रिका प्रेस, केसरगढ़, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, गुलाब बाग, एमआई रोड, ई-5, संस्थानिक क्षेत्र, झालाना, जयपुर
राष्ट्रीय सहारा	जयव्रत राय	सहारा इंडिया, मास कम्युनिकेशन, 28, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली
स्वतंत्र वार्ता	राधेश्याम शुक्ल	एजीए पब्लिकेशन, लोअर टेंक बंड रोड, हैदराबाद-500 050
हिन्दुस्तान	मृणाल पाण्डे	18/20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110 001

पत्रिकाएँ

पत्रिकाएँ	संपादक का नाम	प्रकाशक
आउटलुक (मासिक)	आलोक मेहता	ए-बी-10, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली-110 029
इंडिया टुडे (पाक्षिक)	अरुणपुरी	लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110 001
कादंबिनी (मासिक)	राजेन्द्र अवस्थी	तेज बिल्डिंग, 8-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली
क्रिकेट भारती (मासिक)	सतीश वर्मा	4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
क्रिकेट टुडे (मासिक)	मनीष वर्मा	एक्स-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-II, नई दिल्ली-110 020
क्रिकेट वर्ल्ड (मासिक)	विकास लूथरा	7, डीडीए, कमर्शियल सेंटर, नं. 5, सेक्टर 1, रोहिणी, दिल्ली-110 085
कुरुक्षेत्र (पाक्षिक) नवंबर, 1991	रामबोध मिश्र	कृषि मंत्रालय, ग्रामीण विकास विभाग, 467, कृषि भवन, नई दिल्ली-110 001
कैपिटल मार्केट (मासिक)	डॉ. कृष्णा माहेश्वरी	401, स्वास्तिक चैंबर्स, सायन, ट्राम्बे रोड, चेंबूर, मुंबई-400 071
गृहशोभा (मासिक)	परेशनाथ	ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110 055
गृहलक्ष्मी (मासिक)	तबस्सुम	डायमंड मैगजीन, एचओ, एक्स-30, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-II, नई दिल्ली-110 020
जी स्टार (मासिक)	मधुरी कोटक	25, अंधेरी, इंडस्ट्रियल एस्टेट, वीरा देसाई मार्ग, अंधेरी (प.), मुम्बई-400 053
दलाल स्ट्रीट जर्नल (मासिक)	वी. बी. पडोडे	105, श्रेयस बिल्डिंग, न्यूलिंक रोड, अंधेरी (प.), मुंबई-400 008
फिल्मी दुनिया (मासिक)	नरेन्द्र कुमार	रतन शिखा, 16, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
मेरी सहेली (मासिक)	हेमामालिनी	पायनीयर बुक कंपनी प्रा. लि., सी-14, रायल इंडस्ट्रियल एस्टेट, 5/बी, नायगाँव क्रास रोड, वडाला, मुम्बई-400 031
माधुरी (मासिक) (फरवरी 1997 प्रवेशांक)	चन्द्रप्रभा	चन्द्रप्रभा पब्लिकेशन्स प्रा. लि., ए-2, रिंग रोड, साउथ एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 049
माया (मासिक)	आलोक मित्र	281, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-211 003
योजना (पाक्षिक)	मुरारीलाल	प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110 001
रंगभूमि (मासिक)	सत्येन के. गुप्ता	5-ए/15, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
वनिता (मासिक)	प्रेमा माम्मन मैथ्यु	नेशनल इंश्योरेंस बिल्डिंग, पहली मंजिल, ए.के. नायक मार्ग, मुंबई-400 001